RNI नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 15-16 जून 2025
डाक प्रेषण तिथि : 15-17 जून 2025
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 63 अंक : 05
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 68
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2024-26
Office Posted at R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

धार्मिक पाक्षिक

असि, मसि, कृषि का मार्ग दिखलाया प्रभु ऋषभदेव ने,
हम मर्यादा भूलते जा रहे पर्यावरण की शनैः-शनैः।
पृथ्वी, वायु, जल और भूमि सभी का खुलकर दोहन किया,
पर्यावरण को प्रदूषित कर अपना भी कुछ न भला किया।।

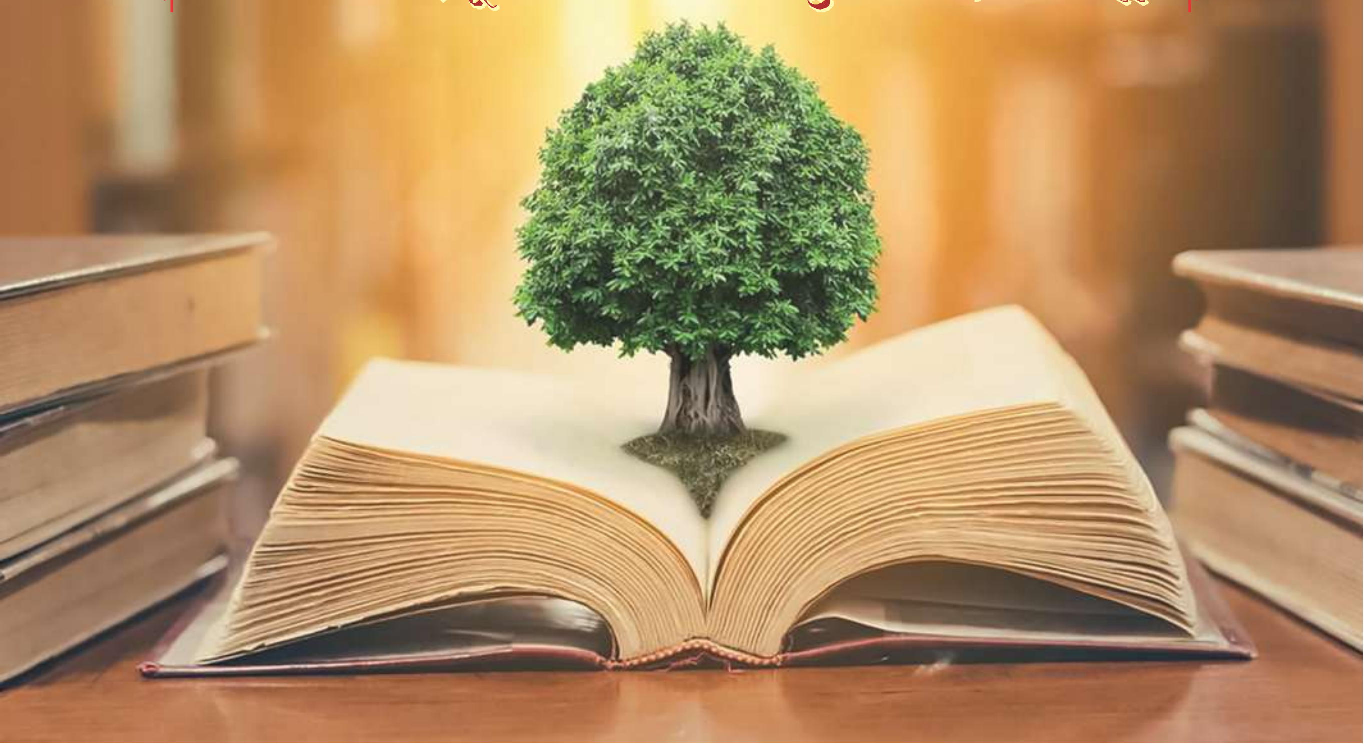

सुविचार

राम चमकते भानु समाना

अपने पापों को
उगलने के बाद
जीवन
हलका हो जाता है।

चमत्कार
व्यक्ति को
पंगु बनाता है।
महानता
चमत्कार से नहीं,
पौरूष
के पसीने से
प्राप्त होती है।

सम्मान
देने में आगे रहो।
सम्मान
पाने में तुम्हारी
उपस्थिति
न रहे।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

आगमवाणी

विणओ सासणे
मूलं विणीओ संजओ भवे।
विणयाओ विप्पमुक्कस्स,
कओ धम्मो कओ तओ?

विनय जिनशासन का मूल है। विनीत ही संयमी हो सकता है। जो विनय से हीन है, उसका क्या धर्म और क्या तप?

Humility is the basis of Jina-faith, only a humble person can be restrained. What use is the penance and restraint of the one who is not humble?

–विशेषावश्यक भाष्य (3468)

जम्हा विणयइ कम्मं,
अट्ठविहं चाउरंतमोक्खाय।
तम्हाउ वयंति विउ,
विणयंति विलीणसंसारा।।

विनय आठों कर्मों को दूर करता है। उससे चार गति के अंतरूप मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसीलिए सर्वज्ञ भगवान इसको विनय कहते हैं।

Humility destroys all the eight types of karma and results in liberation that ends the wandering in four worldly species. It is for this reason that the omniscient Lord has called it Vinaya.

– स्थानांग (6/431) टीका

विणवो वि तवो,
तवो पि धम्मो।

विनय स्वयं एक तप है और वह आभ्यंतर तप होने से श्रेष्ठ धर्म है।

Humility itself is a form of penance. Being an internal penance, it is the best form of religion.

– प्रश्नव्याकरण (2/3)

आणानिद्देसकरे,
गुरुणमुववायकारए।
इंगियागारसम्पन्ने,
से विणीए त्ति वुच्चई।।

जो गुरुजनों की आज्ञाओं का यथोचित पालन करता है, उनके निकट संपर्क में रहता है एवं उनके हर संकेत व चेष्टा के प्रति सजग रहता है, उसे विनीत कहा जाता है।

The disciple who obeys the guru, stays near him and understands his signs and gestures and acts accordingly is said to be humble.

– उत्तराध्ययन (1/2)

विणएण णरो,
गंधेण चंदणं सोमयाइ रयणियरो।
महुररसेण अमयं,
जणपियत्तं लहइ भुवणे।।

जैसे सुगंध के कारण चंदन, सौम्यता के कारण चंद्रमा और मधुरता के कारण अमृत जगतप्रिय हैं, ऐसे ही विनय के कारण मनुष्य लोगों में प्रिय बन जाता है।

As the Sandal-wood is liked for its fragrance, the Moon for its gentle attractiveness and nectar is liked for its sweetness, so a humble person is liked for his humility.

– धर्मरत्नप्रकरण, 1 अधिकार

साभार- प्राकृत मुक्तावली

हु शि उ चौ श्री ज ग ना ना ©

राम चमकते भानु समाना

अनुक्रमणिका

धर्मदेशना

07 महापुरुषों का आदर्श
- आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा.

08 वर्तमान विश्व की एक झलक
- आचार्य श्री गणेशलाल जी म.सा.

09 वर्तमान जीवन की सुरक्षा ...
- आचार्य श्री नानालाल जी म.सा.

15 वर्तमान में जीने का सुख
- आचार्य श्री रामलाल जी म.सा.

ज्ञान सार

22 आध्यात्मिक आरोग्यम्
- संकलित

25 श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला
- कंचन कांकरिया

27 श्रीमद् उत्तराध्ययनसूत्र
- सरिता बैंगानी

धर्मदेशना

30 धर्ममूर्ति आनंद कुमारी
- संकलित

32 जैनधर्म और पर्यावरण संरक्षण
- पदमचंद गांधी

37 पर्यावरण संरक्षण में धर्म ...
- सुरेश बोरदिया

42 चातुर्मास, अध्यात्म का महापर्व
- बनेचंद बोथरा 'बन्नू'

43 संघ सेवा
- शांतिलाल लूनिया

44 भावी पीढ़ी के निर्माण में ...
- ज्ञानचंद राँका

45 सकारात्मक विचारों की ...
- कु. तृप्ति सांखला

46 सफलता या विजय ...
- सुरभि धीरज मेहता

48 वर्तमान परिस्थितियाँ और ...
- संदीप गांधी

विविध

49 गुरुचरण विहार समाचार
- महेश नाहटा

भक्ति रस

36 भगवान महावीर का संदेश
- उत्सव जैन

चिंतन पराग

समुदाय सशक्त हो

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

संघ, समाज, समुदाय सशक्त होना चाहिए। सशक्तिकरण के लिए अनुशासन बहुत जरूरी है। अनुशासन के लिए एक अनुशास्ता का होना जरूरी है। अनेक शासक हों तो अनुशासन बराबर रह नहीं पाता। समुदाय की विशालता से शासकों की संख्या बढ़ सकती है। मुख्य नियंता एक ही होना चाहिए। एक नियंता होने से सबको समान दिशा-निर्देश मिलेगा, अन्यथा कोई कुछ निर्देश देगा तो कोई कुछ और ही। वैसी स्थिति में अनुशासन में जो एकात्मकता आनी चाहिए, वह नहीं आ पाएगी। एकात्मकता के लिए एक श्रद्धा, एक प्ररूपणा होनी जरूरी है। वह तब होगी जब सबकी धारणा एकसमान होगी। एक सूत्र में पिरोए गए मोती माला का रूप ले लेते हैं। वैसे ही एक अनुशासन के सूत्र से संबद्ध समुदाय, संगठन का रूप ले लेता है। समुदाय की सुदृढ़ता के लिए प्रत्येक सदस्य को समुदाय के अंग होने का अहसास होना चाहिए। समुदाय के प्रति उसका क्या कर्तव्य है, उसके प्रति उसे सजग रहना चाहिए। एक सूत्र में पिरोए मोती जैसे बिखरते नहीं हैं वैसे ही एक सूत्रात्मकता से जुड़ाव होने पर समुदाय भी बिखर नहीं सकता। वह सूत्रधारणा आदि के साथ आत्मीय भाव भी है। समुदाय के प्रति प्रत्येक सदस्य का आत्म-भाव सघन होना चाहिए। वह तभी संभव है जब उसे उस समुदाय से जुड़े हुए होने का मनस्तोष हो।

यह ध्यान रखें, समुदाय के सशक्त-सुदृढ़ होने पर ही धर्म की सम्यक् आराधना हो सकती है। समुदाय यदि लंगड़ा हो जाएगा, रुग्ण हो जाएगा तो धर्म की आराधना सुव्यवस्थित कैसे होगी? समुदाय को रुग्ण करने वाले अंग हैं- अहं प्रदर्शन, मान-सम्मान की चाह, समुदाय से बढ़कर स्वयं को मानना, अपना मिथ्या वर्चस्व समुदाय पर थोपना, अपने तुच्छ निहित स्वार्थ को महत्व देना। इस प्रकार के तत्व न समुदाय को सुदृढ़ होने देंगे, न धर्म का विकास ही। इसलिए यदि ये तत्व प्रकट होने लगें तो तत्काल उनका उपचार होना चाहिए, उनको पनपने नहीं देना चाहिए। इसके लिए समुदाय के प्रत्येक सदस्य को जागरूक रहने की आवश्यकता है।

कार्तिक शुक्ल 4, रविवार, 15-11-2015 साभार- ब्रह्माक्षर

Chintan Parag

The Community Ought To Be Strong

Param Pujya Acharya Pravar 1008 Shri Ramlal Ji M.Sa.

The organization, the society, the community should all be robust. Now, discipline is essential to empowerment. And discipline pre-supposes a disciplinarian. If there is a multiplicity of rulers, discipline cannot be properly maintained. A very sizable community may envisage increase in the number of administrators. But the Chief Controller should be just one and one only. With just one Controller, there will be uniformity in the directions given; else, directions issued out may vary. In such a situation, the unity and integrity that discipline requires would prove elusive. Identity of faith and form is essential to integrity. This would come about when there is identity of belief amongst all.

Pearls strung together make a garland. Likewise, a community that strings together takes the form of an organization. For the community to be robust, every member must feel that he is part of the community. He must be vigilant as to his duty towards the community. Just as pearls threaded together do not scatter, members of a community bonded together in solidarity do not go their separate ways. This solidarity is informed by fellow-feeling. Every member should have intense fellow-feeling towards the community. This is possible only when the person finds psychological satisfaction in belonging to the community.

Bear in mind that the cause of faith can be served in the right way only when the community is strong and robust. Should the community go limp, or become afflicted, how could the practice of faith be well-organized? The elements that debilitate the community are: exhibition of pride, craving for honour and prestige, placing oneself above the community, inflicting one's spurious ascendancy over the community, and giving importance to one's petty vested interest. These kinds of elements would neither make for robustness of the community, nor advancement of faith. As such, the moment such elements rear their head, they ought to be addressed. They should not be allowed to flourish. To this end, every member of the community ought to exercise vigilance.

Sunday, 15-11-2015

Courtesy- Brahmakshar

धर्मदेशना

महापुरुषों का आदर्श

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

संसार की दशा सुधारने के लिए महापुरुषों ने जो आचरण किया है, उन्होंने जिस पथ पर प्रयाण किया है, उस पथ का अनुसरण करने के लिए वे समस्त संसार को आह्वान कर गए हैं। उन्होंने फरमाया — ऐ जगत के जीवो! समय का विचित्रता और विपरीतता के कारण कदाचित् तुम्हारे सामने ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो सकती है जब तुम किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाओ। तुम्हें यह न सूझ पड़े कि ऐसी दशा में क्या करें, क्या न करें? उस समय तुम लोग हमारे आचरण को दृष्टि में रखकर हम जिस मार्ग पर चले हैं, उस मार्ग पर चलोगे और उस मार्ग को छोड़कर उलटे मार्ग पर नहीं चलोगे तो तुम्हारा कल्याण होना निश्चित है। इस प्रकार महापुरुष अपने आचरण का आदर्श जगत के हित के लिए उत्तराधिकार के रूप में छोड़ गए हैं।

साभार- श्री जवाहर किरणावली-२६
(जवाहर ज्योति विचारसार)

धर्मदेशना

वर्तमान विश्व की एक झलक

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री गणेशलाल जी म.सा.

कर्मण्यता की भूमिका पर ही व्यक्ति, समाज व राष्ट्र का उत्थान संपादित किया जा सकता है। वैभव और विलास तो पतन के कारण बनते हैं क्योंकि विलासिता का दूसरा नाम निकम्मापन भी है। विलासी कायर होता है, वह विपदाओं से लड़ नहीं सकता और अपनी हीन आसक्तियों से ऊपर नहीं उठ सकता।

क्रोध रूपी कालिया नाग अपने तीव्र विषदंत से सरल प्राणियों में कटुता भर रहा है व संसार में अनेक अनर्थ करवा रहा है। तृष्णा रूपी पूतना राक्षसी दूध पिलाकर आत्मबल को जैसे मार देना चाहती है। लोग संयम, नियम, नीति से विमुख होकर ऐश्वर्य बढ़ाने की प्रतिद्वंद्विता में लगे हैं। भ्रष्टाचार की महामारी-सी फैली हुई है।

अभिमान रूपी कंस सारे विश्व को ग्रसित कर रहा है। लोग धन या सत्ताबल पाने पर अपने आपको भूलकर स्वेच्छाचारिता की ओर मुड़ जाते हैं एवं निर्बलों के अधिकारों को हड़पने व उनका शोषण करने में आनंदानुभव करते हैं। मोह रूपी जरासंध आज अन्याय का कारणभूत हो रहा है क्योंकि मोह में मनुष्य की एकांत बुद्धि हो जाती है और वह सत्यासत्य के सद्विवेक से विमुख होता चला जाता है। लोभ रूपी दुर्योधन साधनों को केंद्रीभूत कर सच्चे हकदारों को भी 'सुई की नोक के बराबर भूमि' देने को तैयार नहीं। लोभ को शास्त्रों में काल कहा है और यह पाप का बाप भी कहा जाता है, क्योंकि इसी के वशीभूत होकर मनुष्य अत्यधिक स्वार्थी और हीन स्वभावी हो जाता है।

आज ये सारी कुटिल मनोवृत्तियाँ खुलकर खेलती हुई देखी जाती हैं और ऐसे जटिल समय में सत्यस्वरूप हृदय में जगाया जाए और उन कुविचारों एवं असत्प्रवृत्तियों पर विजय प्राप्त करने की अमिट शक्ति पैदा की जाए। जीवन के इस विशाल क्षेत्र में निरपेक्ष और निःस्वार्थ होकर सत्कर्म करते जाइए तो लौकिक व आत्मिक उत्थानों की मंजिल दूर नहीं रहेगी। इसी संदेश को आज के दिन सबको सुनना और समझना चाहिए, तभी किसी प्रकार की सार्थकता हो सकती है।

साभार - चिंतन मनन अनुशीलन (भाग-2)

धर्मदेशना

वर्तमान जीवन की सुरक्षा पहले कीजिए

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

- जीवन-निर्माण एवं सुरक्षा के लिए जागरूक दृष्टिकोण सदैव सामने रहना चाहिए।
- शुद्धि असल में होनी चाहिए मन की, जिससे प्राणिमात्र के साथ स्नेह और सहयोग का संबंध बनता है तथा शुद्धि होनी चाहिए वचन की ताकि जो बोल निकले, मधुरता का मरहम लगाता हुआ निकले। इस तरह सब मिलाकर जो आत्म-शुद्धि होती है, वह जीवन में समता का समरस घोल देती है।
- प्राप्त आयुष्य का पूर्ण सदुपयोग करके वर्तमान जीवन को सुरक्षित बना लेवें।
- पुरुषार्थी वीर ही जीवन की सहज सुरक्षा करने में सफल होते हैं।
- चित्त की उज्ज्वलता में चित्त की प्रसन्नता बनी रहती है तो रोग पैदा नहीं होते तथा शरीर स्वस्थ बना रहता है। शरीर स्वस्थ होता है तो धर्मकार्यों में तत्परता रहती है, क्योंकि कहा भी है– **'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्'**।

श्री मुनिसुव्रत साहिबा, देव तणां देव के।
तरण-तारण प्रभु तो भणी,
उज्ज्वल चित्त सुमिरूं नितमेव के।।
हूं अपराधी अनादि को,
जन्म-जन्म गुनाह किया भरपूर के।
लूटिया प्राण छः काय ना,
सेविया पाप अठार करूर के।।

परमात्मा मुनिसुव्रत के चरणों में इस प्रार्थना के माध्यम से जैसे अपनी ही आंतरिक भावना का स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। जो अपनी भावना है, वह सबकी भावना है

कि अपने आत्म-स्वरूप पर अंतर्दृष्टि कर जानें और देखें कि उस स्वरूप पर कितने अपराधों और पापों का मैल चढ़ रहा है तथा कितनी अपवित्रता से वह स्वरूप रँग गया है!

जब प्रार्थना अंत:करण की निष्ठा के साथ की जाती है तो मानसिक धरातल के भावों की पवित्रता का प्रसंग स्मरण में जुट जाता है। ऐसा स्मरण विशेष प्रेरणादायक बन जाता है। कवि ने अपने अंत:करण को क्या, एक प्रकार से सभी विवेकशील प्राणियों के अंत:करण को संबोधित करते हुए उन्हें उज्ज्वल चित्त से परमात्मा का स्मरण करने की बात कही है। यदि सभी भव्य आत्माएँ अपने चित्त को स्वच्छ एवं निर्मल बनाकर प्रभु की भक्ति में, बल्कि किसी भी कार्य में जुट जाएँ तो केवल कार्य ही सफल नहीं बनता है, अपितु वह चित्त की उज्ज्वलता चारों ओर प्रकाश फैलाने वाली किरणों के समान चमक उठती है।

यह चित्त की निर्मलता ऐसी नहीं है, जिसका फल किसी अगले जन्म में मिलेगा। दर्पण ज्यों ही स्वच्छ होता है कि उसमें तुरंत मुँह दिखाई देने लगता है, वैसे ही इसका तत्काल फल सामने आता है। चित्त की निर्मलता स्वयं सुख एवं आनंद का कारण होती है तथा उससे सबसे पहले पाप-प्रवृत्तियों से वर्तमान जीवन की सुरक्षा उत्पन्न होती है। यह ध्यान रखिए कि आप वर्तमान जीवन की सुरक्षा पहले करें।

परलोक सुधारें पहले या इस लोक को?

कभी-कभी भाई-बहनों के विचारों में परमात्मा के स्मरण संबंधी चिंतन का कुछ विकृत रूप आ जाता है। वे सोचते हैं कि अभी हम जो परमात्मा का स्मरण करेंगे अथवा अन्यान्य धार्मिक क्रियाओं में प्रवृत्त होंगे तो उससे परलोक का सुधार होगा, कारण अभी जो कुछ भी धर्म किया जाता है, उसके फल का उदय तो आगामी जीवन में ही हो सकेगा। उनकी भावना में जीवन सुधरेगा अथवा उनसे इस जीवन में सुख और आनंद प्राप्त होगा। वे तो परलोक के लिए ही विशेष चिंतन करते हैं।

कदाचित् किसी भक्त ने, किसी ज्ञानी ने इस लोक में रहते हुए प्रभु-स्मरण के प्रभाव को माना हो तो वह उस प्रभाव को अपनी आत्मा तक ही सीमित मानता है, क्योंकि पहले प्रधान रूप से आत्म-स्वरूप ही उज्ज्वल बनता है। आत्मा के अतिरिक्त अन्य तत्वों पर उस व्यक्ति का प्रभाव तब पड़ना प्रारंभ होगा जब उसकी आंतरिक साधना का स्तर ऊपर चढ़कर बहुत ही प्रभाविक बन जाता है।

यही कारण है कि आज के भाई-बहनों की रुचि धार्मिक विषयों में कम होती जा रही है। उनके मस्तिष्क में परलोक-शुद्धि के संदर्भ में आत्म-शुद्धि की बात विशेष महत्व नहीं रखती। अधिकांश लोगों को इस लोक की ही पहले चिंता होती है और उनमें भी अधिक लोगों की चिंता में कोई विशेष महत्व की बातें हैं तो वे ये हैं कि उनका शरीर स्वस्थ और पुष्ट रहे, उनका मन-मस्तिष्क तरोताजा हो, उन्हें परिजनों का पर्याप्त सहयोग मिले, सुख-सुविधाओं के लिए खूब संपत्ति प्राप्त हो। इसके साथ ही उन्हें यश-कीर्ति का लाभ भी मिले।

इस लोक की पहले चिंता होना कोई बुरी बात नहीं है, अपितु यही चिंता पहले होनी चाहिए और चिंतन में यह विचार चलना चाहिए कि इस जीवन में चित्त की पवित्रता कैसे पैदा हो, हृदय में सबके प्रति आत्मवत् भावना कैसे पनपे तथा संसार में रहते हुए भी आचरण की उज्ज्वलता कैसे प्रकाशित बने? यदि ऐसा चिंतन अपने अनुरूप कार्यप्रणाली को प्रेरणा देता है तो इस लोक की ऋद्धि-सिद्धि मिले, इसमें कोई शंका की बात नहीं है। मन शुद्ध होगा तो वचन और काया भी शुद्ध रहेगी तथा शुद्धता में स्वास्थ्य, सुख-सुविधा, स्नेह, सहयोग सभी भरपूर मिलेगा एवं सदाचरण की कीर्ति भी प्राप्त हो सकेगी। इस रूप में इस लोक, इस जीवन का सुधार पहले जरूरी है और परलोक के लिए चिंतित होने की कोई जरूरत नहीं है। कारण है कि परलोक की नींव इस लोक की उपलब्धियों पर ही खड़ी होती है।

इस लोक को, इस जीवन को आनंददायक कैसे बनावें?

संसार में रहते हुए पहले अपने चिंतन में अपने शरीर की सुख-सुविधा, मन-वचन-काया का आनंद,

परिजनों का स्नेह, वैभव की पूर्ति आदि विषयों को प्राथमिकता से लेने वाली आत्माओं को थोड़ा अंतरावलोकन करना चाहिए कि शुद्धि तो सभी प्रकार के उद्देश्यों के लिए तथा सभी स्थानों पर आवश्यक होती है। गहराई की बातें वे बाद में सोचें, लेकिन यह बात तो उनकी समझ में जल्दी आ जाएगी कि तन की शुद्धि हमेशा क्यों रखी जाती है? चाहे दुकान पर बैठें या कहीं पर जाएँ, ऐसा सोचने वाले व्यक्ति गंदे शरीर और गंदे कपड़ों के साथ तो जाना नहीं चाहते हैं। इसका अर्थ है कि उन्हें स्वच्छता का महत्व तो मालूम है कि स्वच्छ रहने से आनंद का अनुभव होता है।

अब प्रश्न है कि वे तन की शुद्धि की बात समझते हैं तो मन और वचन की शुद्धि की बात क्यों नहीं समझते? तन की शुद्धि के साथ जब वे चलते हैं तो वे महसूस करते हैं कि उनका जी हलका लग रहा है। वे इसी अनुभव को आगे बढ़ाना क्यों भूल जाते हैं? वे मन और वचन की शुद्धि को अपनाने लगें तो उन्हें अद्भुत हलकेपन का अनुभव होगा और असली आनंद का पार नहीं रहेगा।

वे जब तन की शुद्धि करते हैं तो उस कार्य का फल तुरंत ही उनके अनुभव में आ जाता है, किंतु मन एवं वचन की शुद्धि का फल तो उससे भी त्वरित गति से और कई गुना आनंद के साथ प्रकट होता है। वास्तव में यही मार्ग है कि इस लोक को, इस जीवन को तत्काल आनंददायक बना सकते हैं। यह मार्ग सभी प्रकार की स्वच्छता एवं पवित्रता का मार्ग है। कोरे तन की शुद्धि महत्वहीन होती है। मछली रात-दिन पानी में तैरती है तो क्या उसकी इस तन-शुद्धि से उसके जीवन का कल्याण हो जाता है? शुद्धि असल में होनी चाहिए मन की, जिससे प्राणिमात्र के साथ स्नेह और सहयोग का संबंध बनता है तथा शुद्धि होनी चाहिए वचन की, ताकि जो बोल निकले, मधुरता का मरहम लगाता हुआ निकले। इस तरह सब मिलाकर जो आत्मशुद्धि होती है, वह जीवन में समता का समरस घोल देती है।

समता की जीवन प्रणाली को जो अपना लेता है, उसे जीवन का संपूर्ण वैभव भी प्राप्त होता है एवं सुयश भी मिलता है। मूल रूप में उसका वर्तमान जीवन सार्थक तथा आनंददायक बन जाता है।

मूल को भूलकर केवल शाखाओं को न पकड़ें

शरीर का स्वास्थ्य, मन-मस्तिष्क की तरोताजगी, परिजनों का भव्य प्रेम और वैभव की उपलब्धि जिस तत्व के आधार पर हैं, दुख का विषय है कि उस तत्व को आप भुला रहे हैं। मूल जड़ को भूलकर शाखाओं और टहनियों को ही पकड़कर रखना कहाँ की बुद्धिमानी है? जिस जड़ से टहनियाँ हरी-भरी बनती हैं, उन हरी-भरी टहनियों से लुभाकर टहनियों को तो पकड़ लें और जड़ उखड़ रही है या सूख रही है, इसका तनिक भी खयाल नहीं रखें तो क्या टहनियों को हरी-भरी बनाए रख सकेंगे तथा उनका सुख भोगते रह सकेंगे?

वे जिन बातों की प्राप्ति चाहते हैं, उसके लिए भी महत्वपूर्ण मूल कारण चित्त अथवा मन होता है। चित्त की शुद्धि, मन की पवित्रता सबसे पहले इस शरीर पिंड पर ही सुप्रभाव डालती है। शरीर सुस्वस्थ बनता है तो मस्तिष्क भी तरोताजा बन जाता है। यदि ये सब स्वच्छ एवं निर्मल रहें तो इनके माध्यम से, जिस परिवार के प्रेम से वे अपने को सुखी बनाना चाहते हैं, वह सुख भी उनको मिल सकेगा। परिवार के स्नेह-सहयोग से वैभव भी अर्जित कर सकेंगे तो कीर्ति भी बना सकेंगे।

क्या कहूँ - कहते विचार आ जाता है कि मेरे भाई जीवन-सुधार और जीवन निर्माण की बात को भी ध्यान से नहीं सुनते हैं, शून्य चित्त लेकर बैठ जाते हैं। यह शून्यता ही मूल को भूलने की स्थिति है। जागरूक दृष्टिकोण सतत सामने रहना चाहिए कि हमारा वर्तमान जीवन कैसे भव्य बने, कैसे उसमें उज्ज्वलता आए, कैसे उसमें सच्चे सुख का प्रवाह फूटे तथा कैसे वह आनंददायक प्रवाह अपने साथ दूसरों को आनंद से सराबोर बना दे? ऐसी जागरूक दृष्टि सदा मूल पर लगी

हुई होती है। वह विवेकशील व्यक्ति प्रतिक्षण यह ध्यान रखता है कि जड़ कहीं सूख या जल तो नहीं रही है! कहीं उसके फैलाव में अटकाव तो पैदा नहीं हो रहा है! कहीं जड़ों में दीमक तो नहीं लग गया है! वह जड़ का पूरा ध्यान रखता है और टहनियों की तरफ देखता भी नहीं, क्योंकि वह जानता है कि जड़ हरी-भरी रही तो टहनियाँ हरी-भरी रहने में कोई बाधा नहीं आएगी। मूल है सो यही जीवन है, परलोक है सो टहनियाँ हैं। इस जीवन के सुधार और इसकी निर्मलता के लिए सचेष्ट बन गए तो उसका फल तत्काल मिलेगा।

पूर्वभव से निर्धारित आयुष्य का पूर्ण सदुपयोग आवश्यक

यह जो मानव-जीवन मिला है, इसकी आयु या इसका आयुष्य पूर्वभव से ही निर्धारित हो चुका था। जितना आयुष्य मिला है, उतना जीना ही पड़ेगा तो उस आयुष्य का पूर्ण सदुपयोग करना चाहिए, जिससे यह वर्तमान जीवन आनंद का खजाना बन जाए। मैं आपको पूछूँ कि जितना आयुष्य पूर्वजन्म का बाँधकर आए हैं, उतने आयुष्य तक जीवित रहना चाहते हैं या पहले ही प्रस्थान कर देना चाहते हैं? सभी अधिक से अधिक जीवित रहने की कामना रखते हैं। फिर पूछूँ कि इस मानव-योनि के छूट जाने के बाद फिर मानव-जीवन पाना चाहते हैं या नीचे की अन्य योनियाँ भोगना चाहते हैं? सभी चाहेंगे कि फिर मनुष्य-जीवन ही प्राप्त हो। ऐसा तभी हो सकेगा जब आप प्राप्त आयुष्य का पूर्ण सदुपयोग करके इस वर्तमान जीवन को सुरक्षित बना लें।

सोचिए कि सबसे पहला सवाल आयुष्य का है। शरीर कितना ही स्वस्थ हो और मृत्यु आ जाए तो स्वास्थ्य क्या काम देगा? बुद्धि बड़ी तेज हो, मन बड़ा मजबूत हो, मगर आयुष्य नहीं रहे तो इनका अस्तित्व भी मिट जाएगा। इसलिए सबका बल, सबका आधार आयुष्य है। इस आयुष्य को आप पूर्वजन्म में बाँधकर आए हैं, लेकिन इस जीवन में इसको सुरक्षित रखना तथा सत्प्रयुक्त बनाना आपके हाथ की बात है और इस सुरक्षा व सदुपयोग के द्वारा परलोक का सुधार कर लेना भी आपके ही हाथ की बात है। अगला जन्म कैसा हो, किस योनि का हो तथा उसमें क्या-क्या सुविधाएँ मिले, यह अन्य कोई शक्ति निर्धारित नहीं करती, इसके निर्माता भी आप ही हैं। इसलिए जीवन में प्राप्त आयुष्य को शालीनता और श्रेष्ठता से भोगने की चेष्टा करें।

आप प्रश्न कर सकते हैं कि यह आयुष्य किसके हाथ की बात है? कोई अकाल मृत्यु प्राप्त करता है तो कहेंगे कि होनहार ऐसा ही था सो हो गया, हम क्या करें? मैं कहता हूँ कि यही तो सबसे बड़ी भूल है। होनहार के भरोसे रहकर वर्तमान में पुरुषार्थ को छोड़ देना भयंकर भूल होगी। होनहार क्या है, कभी देखा है? परमात्मा की बात सुनी, आत्मा की बात सुनी। ये सब बातें नौ तत्वों में समाविष्ट हो जाती हैं। संसार में जितने तत्व हैं, उनमें से कोई भी तत्व नौ तत्व की सीमा से बाहर नहीं रहता है। पूर्वजन्म में जो शुभ या अशुभ कर्म कोई करता है, उसी के आधार पर इस जन्म का होनहार बनता है। हमारे ही हाथ में बाजी थी और अब भी बाजी हमारे ही हाथ में है। होनहार के पीछे नहीं रहें तथा वर्तमान आयुष्य का खयाल रखते हुए निश्चिंत होकर इस जीवन का पूर्ण सदुपयोग कर लें।

आयुष्य के प्रकार तथा फल-भोग की व्यवस्था

आयुष्य दो तरह का होता है। एक आयुष्य वह, जो आत्मा पूर्वजन्म में अपनी करणी के अनुसार बाँधकर आती है। जो आयुष्य इस तरह बँधा है, उसको भोगना ही पड़ता है, चाहे कितना ही आघात लग जाए, दुर्घटना घट जाए या सिंह का आक्रमण ही क्यों न हो जाए? इनके कारण भी आयुष्य का जल्दी भोगना नहीं हो सकता है। ऐसे आयुष्य किसी भी प्रकार से निर्धारित अवधि से पहले तक वह भोगता ही है। ऐसा आयुष्य तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव आदि की उत्तम आत्माओं को प्राप्त होता है। चरमशरीरी आत्माएँ, युगलिक, असंख्य वर्ष की आयु वाले देव और नैरयिक भी ऐसे अपरिवर्तनीय

आयुष्य के धारक होते हैं। यह आयुष्य बीच में टूटता नहीं है। जैसा भी है, पूरा भोगना ही पड़ता है।

दूसरे प्रकार का आयुष्य कच्चा आयुष्य होता है। यह ऐसा आयुष्य होता है, जो आघात लगने पर कच्चे धागे की तरह टूट जाता है। आज के मनुष्यों का आयुष्य अधिकांशत: इसी प्रकार का होता है। आजकल के मनुष्य चरमशरीरी नहीं होते, कच्चे आयुष्य वाले होते हैं। एक मनुष्य अपना आयुष्य लेकर चल रहा है और उस पर कोई आघात हुआ या कोई मारक प्रसंग आ गया तो वह आयुष्य टूट जाता है। मान लीजिए, किसी का सौ वर्ष का आयुष्य है और पच्चीस वर्ष की आयु में वह दुर्घटनाग्रस्त हो गया और चिकित्सा कारगर नहीं बैठी तो वह अपने बाकी के पचहत्तर वर्ष का आयुष्य अंतर्मुहूर्त्त में भोगकर इस शरीर को छोड़ देता है। अंतर्मुहूर्त्त का छोटे से छोटा भाग आँख की पलक गिरने जितना होता है। ऐसे आयुष्य-भोग को अकाल मृत्यु की संज्ञा दी जाती है।

आप सोचेंगे कि पचहत्तर वर्ष के शेष आयुष्य का भोग अंतर्मुहूर्त्त में कैसे पूरा हो जाता होगा? इसको समझने के लिए आप प्राचीनकाल के दीपक का रूपक अपने सामने लें। पहले मिट्टी के दीपक के तेल भरकर और बत्ती जलाकर प्रकाश किया जाता था। सोचें कि दीपक बड़े आकार का हो, उसमें तेल पूरा भर दिया जाए, मगर बाती छोटे से छोटे आकार की रखी जाए तो क्या होगा? ज्यादा तेल और छोटी बाती से वह दीपक लंबे समय तक जलता रह सकेगा? अब उसी दीपक में दो बड़ी-बड़ी बातियाँ लगा दी जाएँ तो जलने के समय का परिमाण काफी कम हो जाएगा। फिर दस-बीस बातियाँ चारों और लगा दी जाए तो जलने के समय की अवधि बहुत कम हो जाएगी? तब सारा तेल थोड़े समय में ही जल जाएगा।

आयुष्य का तेल तो निर्धारित और सीमित है। अब शरीर के दीपक में कितनी बातियाँ जला दी जाती हैं, उस पर फल-भोग का समय निर्भर करता है।

ज्यादा बातियाँ जलाओगे तो तेल जल्दी खत्म होगा

सीमित तेल में जितनी ज्यादा तादाद में बातियाँ जलाई जाएँगी, तेल उतनी ही जल्दी खत्म होगा। जानते हैं, ये बातियाँ क्या होती हैं? दीपक में एक बाती जल रही है। यदि दुर्घटना की दूसरी बाती लग गई या जहर खा लिया या अतिचिंता, अतिभय अथवा अतिशोक में डूब गए तो समझिए कि उस आयुष्य के तेल में कई बातियाँ लग गईं। दुर्घटना से सावधानी रखते हैं, जहर खाने का या शस्त्र से मरने का प्रयास शायद ही कोई करें, लेकिन अतिचिंता, अतिभय एवं अतिशोक में तो कई व्यक्ति डूबे रहते हैं तथा आर्त्तध्यान व रौद्रध्यान ध्याते हुए अपवित्रता बढ़ाते रहते हैं।

यहाँ बैठने वाले लोगों में से तो कोई अतिचिंता, अतिभय या अतिशोक से ग्रस्त नहीं हैं? यदि आयुष्य जितना बँधा है उतना भोगना चाहते हैं तो कभी भी अतिभय न करें। चाहिए तो यह कि आप भय को ही दिल से निकाल फेंकें। अतिचिंता भी मत करिए। जानते हैं कि कोशिश करने से काम होगा और जो नहीं होने का काम है, वह नहीं होगा। फिर चिंता करने से क्या होने वाला है? मानसिक तनाव के संबंध में यह चिंता भी एक आघात के समान होती है और चिंता को चिता समान कहने का मतलब ही यही है कि चिंता का आयुष्य पर बड़ा घातक प्रभाव प्रड़ता है। अत: अतिभय से बचिए और अतिचिंता से भी पीछा छुड़ाइए।

अतिशोक भी उतना ही घातक होता है। यदि कोई काल कर जाता है तो विशेषकर बहनें शोक में डूब जाती हैं और सोचने लग जाती हैं कि मैं भी मर जाऊँ तो अच्छा। वे अज्ञानतावश मृत्यु के बाद भी महीने, दो महीने और सालभर तक शोक में डूबी रहती हैं। वे चित्त को मलिन बनाती हैं, कर्म बाँधती हैं और अपने आयुष्य पर आघात लगाती हैं। उन बहनों से यदि कोई मारने वाला जहर लेने को कहे तो तैयार नहीं होंगी, मगर

अज्ञानपूर्वक इस जहर को वे भीतर डालती रहती हैं।

इस प्रकार ये सब ऐसी बातियाँ हैं जो ज्यादा से ज्यादा तेल पीकर दीपक को समय के पहले बुझा देती हैं। यदि इन प्रवृत्तियों द्वारा आयुष्य का अज्ञानतावश क्षय नहीं किया जाए तो पूरे आयुष्य का आनंदपूर्वक उपभोग किया जा सकेगा। आनंदपूर्वक इस कारण कि जब चित्त की उज्ज्वलता और पवित्रता बनेगी तभी पूरा आयुष्य भोगा जा सकेगा एवं पूरे आयुष्य में चित्त की उज्ज्वलता तथा पवित्रता बनी रहेगी तो वह आयुष्य आनंदपूर्वक ही व्यतीत होगा।

वर्तमान जीवन का वरदान : चित्त की उज्ज्वलता

चित्त की उज्ज्वलता को इस रूप में वर्तमान जीवन का वरदान मानिए क्योंकि चित्त की उज्ज्वलता से विचारों का प्रवाह शुभ एवं हितकारी होगा और विचारों का शुभ प्रवाह वचन तथा व्यवहार में ऐसी शुभता भर देगा कि आप सबके प्रिय बन जाएँगे। लोकप्रियता प्राप्त करने वाला व्यक्ति सबकी श्रद्धा का पात्र होता है तो सबसे सुयश भी प्राप्त करता है। ऐसे व्यक्ति का वर्तमान जीवन सार्थक बन जाता है।

चित्त की उज्ज्वलता सभी दृष्टियों से जीवन के लिए लाभदायक सिद्ध होती है। चित्त जब उज्ज्वल हो जाता है तो अतिचिंता, अतिभय और अतिशोक का द्वंद्व भी समाप्त हो जाता है। फिर न तो आयुष्य पर आघात लगता है और न ही शरीर के स्वास्थ्य पर आघात लगते हैं। चित्त की उज्ज्वलता में चित्त की प्रसन्नता बनी रहती है तो रोग पैदा नहीं होते तथा शरीर स्वस्थ बना रहता है। शरीर स्वस्थ होता है तो धर्मकार्यों में तत्परता रहती है, क्योंकि कहा भी है – 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्'।

मनोविज्ञान में जितनी प्रगति हुई है, उससे यह प्रमाणित होता जा रहा है कि शरीर के स्वास्थ्य तथा रोगों पर मन की अवस्था का बड़ा असर पड़ता है। मन मलिन, चिंतातुर, भयग्रस्त या शोकमग्न रहता है तो उदासीनता या उद्विग्नता से स्वास्थ्य तो बिगड़ता ही है एवं इससे कई नए-नए रोगों की उत्पत्ति भी होती है। इसके विरुद्ध यदि चित्त उज्ज्वल, पवित्र तथा प्रसन्न रहे तो कई रोग केवल ऐसी मन:स्थिति से ही ठीक हो जाते हैं। मन की मुद्राओं से कैंसर की बीमारी मिटाई जाने लगी है तो मानसिक रोगों की चिकित्सा तो मन की गतिविधियों में परिवर्तन लाकर ही की जाती है। ग्रह-नक्षत्रों के चक्कर और अंधविश्वास के भंवर मानसिक रोगों के ही प्रकार हैं।

अत: यह वर्तमान जीवन का सुखद वरदान होगा कि आप चित्त को गंदगी में न भटकने दें, जो गंदगी इस पर लगी है उसको धो डालें तथा इसके स्वरूप को उज्ज्वल व पवित्र बनाकर इसे सदा प्रसन्न बनाए रखें। कारण, इसके जो सुंदर फल सामने आएँगे उनसे वर्तमान जीवन धन्य बन जाएगा एवं जब वर्तमान जीवन धन्य हो जाएगा, इहलोक सुधर जाएगा तो परलोक सुधर ही गया है, यह मान लेने में कोई आपत्ति नहीं है।

पुरुषार्थी वीर स्वयं की व सबकी सुरक्षा करता है

वीर प्रभु पुरुषार्थ की प्रक्रिया में विश्वास रखते हैं। वे कभी हताश होकर भाग्य के भरोसे नहीं बैठते हैं। ऐसे पुरुषार्थी वीर ही अपने वर्तमान जीवन की सहज सुरक्षा करने में सफल होते हैं तो अपने शुभ पुरुषार्थ से सबसे पहले तो इहलोक को सुंदर बनाते हैं और उसके माध्यम से परलोक को भी उज्ज्वल बना लेते हैं।

एक बटन दबाने से एक बल्ब भी जलता है तो पूरा बिजलीघर भी चलता है और ज्यों-ज्यों जीवन की सुंदर उज्ज्वलता बढ़ती जाती है, त्यों-ज्यों बटन की शक्ति का भी विकास होता रहता है। यह विकास इहलोक में कर लें तो वर्तमान जीवन सुधर जाएगा एवं परलोक भी सुरक्षित बन जाएगा।

साभार - नानेशवाणी-28
(समता मति गति दृष्टि की)

धर्मदेशना

वर्तमान में जीने का सुख

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

बड़े शहर की सड़कों पर चलना बहुत कठिन होता है। वाहनों व पैदल चलने वालों की भीड़ इतनी जबरदस्त होती है कि व्यक्ति के बहुत सँभलकर चलने के बावजूद भी एक्सीडेंट हो जाते हैं। शहरों में वाहनों के लिए एक व्यवस्था रहती है जिसे यातायात व्यवस्था कहते हैं। इसके अंतर्गत वाहन सड़क के एक तरफ से आते हैं और दूसरी तरफ से जाते हैं। यदि यह व्यवस्था नहीं हो और किसी भी तरफ से वाहन आते-जाते रहें, पैदल चलने वालों को और अत्यधिक असुविधा हो सकती है।

यह बाहर की व्यवस्था है, उसमें भी व्यक्ति को इतना सँभलकर चलना पड़ता है। यदि सँभलकर नहीं चले तो सही-सलामत अपने गंतव्य तक पहुँचना कठिन है। कुछ ऐसी ही स्थिति हमारी अंदर की व्यवस्था की भी है। हम चिंतन करे कि हमने अपने अंदर कितनी भीड़ कर रखी है। कितनी शंकाएँ-कुशंकाएँ, कितनी चिंताएँ-दुश्चिंताएँ हम अपने भीतर पालते रहते हैं। भले ही खाने-पीने आदि की कोई कठिनाई हमारे सामने नहीं हो, किंतु भविष्य की कठिनाइयों और भविष्य की दुश्चिंताओं को पालने का हमारा मानस बना रहता है। या यों कहें कि हमारी एक आदत बनी हुई है, जिसे ज्ञानीजनों ने भय की संज्ञा दी है। आने वाले समय की चिंता में व्यक्ति घुलता रहता है। वह यह विचार नहीं करता है कि आने वाले समय की चिंता करके वह अपने वर्तमान को क्यों विषम बनाए। जो वर्तमान क्षण हमें उपलब्ध हैं उनको यदि हम प्रसन्नता से भोग सकते हैं, उस क्षण को यदि हम प्रसन्नता से व्यतीत कर सकते हैं तो उससे बढ़कर जीवन का कोई और आनंद हो ही नहीं सकता, न ही जीने की कोई कला हो सकती है। वस्तुत: हम निवास वर्तमान में करते हैं, परंतु जीना हमारा भविष्य में होता है। यही हमारे जीवन की विश्रृंखलित अवस्था है कि हम रहते कहीं हैं और हमारा जीना कहीं और होता है। यदि हम जहाँ पर रह रहे हैं वहीं पर जीना सीख लें, वर्तमान में रह रहे हैं तो वर्तमान में ही जीना सीख लें तो बहुत-सी समस्याओं का अंत हो जाएगा। यदि हमने वर्तमान में जीना सीख लिया तो आने वाले समय की दुश्चिंताओं से भी छुटकारा मिल जाएगा। आने वाले समय की कुशंकाओं को छोड़ देना चाहिए, क्योंकि आने वाला समय जब आएगा तब जैसी परिस्थितियाँ होंगी, जैसी अवस्थाएँ होंगी, उनके आधार पर चिंतन किया जा सकता है। अभी से हम कुछ सोच भी लें, किंतु उस समय जैसी देश-काल-भाव की स्थिति होगी उसी के आधार पर उस समय के लिए निर्णय किया जा सकता है। फिलहाल वर्तमान का चिंतन करें। यह चिंतन करें कि वर्तमान जो सामने उपस्थित है,

इसका अच्छे से अच्छा उपभोग कैसे करें।

एक व्यक्ति भोजन करने के लिए बैठा है। थाल में भोजन भी परोसा हुआ है। वह परोसे हुए भोजन पर दृष्टिपात भी कर रहा है, किंतु यह सोच रहा है कि आज यदि मैंने यह भोजन कर लिया तो कल क्या करूँगा, कल मुझे कैसा भोजन मिलेगा, इस पर मैं पहले विचार कर लूँ। अरे भाई! कल कैसा मिलेगा उसका यदि विचार करोगे तो जीना हराम हो जाएगा, इस चक्कर में आज भी भूखे रह जाओगे। इसलिए भगवान महावीर ने साधुओं को सावधान किया कि कल की चिंता अपने दिमाग में मत घुसाना कि कल रोटी मिलेगी या नहीं मिलेगी। आज जो मिल रहा है उसमें उपयोग रखो। कल की चिंता आज क्यों कर रहे हो? जो वर्तमान में तुम्हें उपलब्ध है उसका उपभोग कर लो। आने वाला समय जब आएगा उस समय विचार किया जाएगा कि क्या करना है। आने वाले समय की चिंता से व्यक्ति जितना व्यथित होता है उतना वर्तमान समय से व्यथित नहीं होता। भूतकाल व्यक्ति को भ्रमित करता है और भविष्यकाल भटकाता है, चिंताओं के घेरे में डालता है। एकमात्र वर्तमान ही उसे शांति की राह दिखाता है, किंतु हम या तो भूतकाल में चले जाते हैं; ऐसा हुआ, वैसे हुआ या हम दौड़ लगाते हैं भविष्य में। इसलिए या तो हम भ्रमित होकर रह जाते हैं अथवा दुश्चिंताओं में भटक जाते हैं, किंतु शांति का जो आनंद आना चाहिए उससे हम अपने-आप को जोड़ नहीं पाते। जब भूतकाल की भीड़ और आने वाले भविष्य की भीड़ भी हमारे वर्तमान में चलती रहेगी, तब आप विचार कर लीजिए कि हम कैसे गति कर पाएँगे। भीड़ में क्या किसी को शांति मिल सकती है? भूत व भविष्य की कल्पनाएँ हमारे दिमाग में इतनी भीड़ किए होती हैं कि वर्तमान में प्रवेश करने के लिए हमें कोई मार्ग ही नहीं मिल पाता है, पता नहीं क्या हो जाएगा! क्या-क्या होता है! आगे क्या होगा, इस बार क्या होगा! न जाने कैसी-कैसी चिंताएँ हम कर लेते हैं, जिन चिंताओं की गणना करना भी अशक्य है। अपनी पोजीशन की भी चिंता होती है। घर में लड़की बड़ी हो गई है, लड़का बड़ा हो गया है, शादी नहीं हो रही है, उसकी भी चिंता है। परिवार के लिए आने वाले कल की स्थिति क्या बनेगी, उसके लिए मकान, दुकान आदि की क्या व्यवस्था बन पाएगी? ये सारी चिंताएँ छोड़ो, वर्तमान में हम कैसे सुख-शांति से जी सकते हैं, इसकी चिंता करो। इस पर कुछ अपने आपमें अनुसंधान करने की स्थिति बन सके तो वैसा चिंतन करें। यदि वैसा चिंतन बन सकता है तो वर्तमान कभी कष्ट देने वाला नहीं हो सकता, क्योंकि तब भविष्य मुझे शंकित नहीं करेगा। भविष्य के लिए मैं कुछ विचार ही नहीं कर रहा हूँ तो भविष्य मुझे बाधित करेगा ही क्यों? आप कह सकते हैं कि यह कैसे हो सकता है? यदि ऐसा ही है तो व्यक्ति को दीर्घद्रष्टा कैसे कहा जाता है? क्यों कहा जाता है कि बहुत आगे की सोचकर चलना चाहिए? आगे की सोचकर चलने की बात कही जाती है, किंतु आगे की सोचकर चलना केवल हमारी कल्पनाओं के आधार पर ही हो सकता है। आप कितना ही आगे की सोचकर चलिए, क्या आने वाला भविष्य आपके हाथ में है? यदि वर्तमान आपके हाथ में नहीं है तो आने वाला भविष्य कभी भी आपके हाथ में नहीं हो सकता। यदि वर्तमान की डोर आपके हाथ में है तो भविष्य की लगाम भी आपके हाथ में रहेगी। यदि अभी पतंग की डोर आपके हाथ में नहीं है तो क्या आप विश्वास करेंगे कि आने वाले समय में पतंग की डोर आपके हाथ में आ सकती है? यदि वर्तमान में पतंग की डोर आपके हाथ में है तो आप स्वतः निश्चिंत रहेंगे कि भविष्य में उस पतंग को कैसे मोड़ना है, उसको ढील देनी है या खींचना है। तब की सारी योजनाएँ आपके हाथ में रहेंगी।

तीर्थंकर देवों ने सहज जीवन की, सरल जीवन की बात कही है। वह सहज जीवन भविष्य और भूत को भूलकर एकमात्र वर्तमान में है। वर्तमान क्षण को सरल कहा गया है, वर्तमान क्षण को सहज कहा गया है। सात प्रकार के नयों में एक ऋजु-सूत्र नय है। ऋजु अर्थात् सरल अर्थात् न भूत की चिंता है, न भविष्य की चिंता है।

वर्तमान तुम्हारा है, वह वर्तमान में जीना सिखाता है।

बंधुओ! यदि आप अपने आपको सहज बना लेते हैं, अपने आपको सरल बना लेते हैं और स्वयं को वर्तमान में उपस्थित कर लेते हैं तो आप अनुभव करेंगे कि आपके तनाव समाप्त हो गए हैं, आपकी चिंताएँ समाप्त हो गई हैं। तनाव कब होते हैं? तनाव तब होते हैं जब भविष्य की दुश्चिंताएँ माथे में घिर जाती हैं और उनकी भीड़ इतनी भर जाती है कि माथा हो जाता है छोटा और कल्पनाएँ हो जाती हैं बहुत सारी। बहुत सारी कल्पनाएँ आ जाएँ तो क्या होगा? मिट्टी के बर्तन को लक्ष्य कर पुराने समय में कहा जाता था कि जिस बर्तन में सेर भर पकाया जा सकता है, उसमें यदि सवा सेर ऊर दिया जाए तो हंडिया फट जाती है। जैसे वहाँ हंडिया फटने की स्थिति बनती हैं, वैसे यहाँ सिर फटने की स्थिति बनती हैं। परंतु हमारा मष्तिष्क इतना कच्चा नहीं है इसलिए फटता तो नहीं है, किंतु उसमें तनाव आ जाता है। यदि चमड़े की थैली या प्लास्टिक की थैली में समाए उतना भरते जाएँ तो जब तक वह सहज अवस्था में है तब तक तो ठीक है, किंतु अधिक भर देंगे तो उसमें भी तनाव आ जाएगा और यदि अत्यधिक तनाव आ जाए तो वह थैली फट जाएगी। इसी प्रकार यदि मस्तिष्क में तनाव के अतिरेक की स्थिति बन जाए तो माथे की नस फट जाती है। हेमरेज किसलिए होता है? लकवे की शिकायत क्यों हो जाती हैं? इसलिए कि हम भीड़ बहुत इकट्ठी कर लेते हैं और उस भीड़ में हम अपना मार्ग बना नहीं पाते हैं। वैसी स्थिति में व्यक्ति के लिए हेमरेज की अवस्था बन जाती है, लकवे की अवस्था बन जाती है। अत: यह आवश्यक है कि हम सही तरीके से जीना सीख लें। इसके लिए तीर्थंकर देवों ने हमें तीन सूत्र दिए हैं - **आलोचना**, **निंदा** और **गर्हा**। ये तीन सूत्र बड़े महत्वपूर्ण हैं। ये हमें भविष्य की चिंताओं से मुक्त करते हैं और भूतकाल की भ्रमणा से हमें स्वतंत्रता दिलाते हैं। इन्हें हम गइराई से विचारें।

भूतकाल में जो कुछ हो गया है उसको लेकर रोना नहीं है, क्योंकि जो हो चुका है उसे अनहुआ नहीं किया जा सकता। इसलिए भूतकाल में जो कुछ हो गया है उसका समाधान कर लिया जाए। भूतकाल में कोई त्रुटि हुई है, उसका यदि समाधान नहीं हुआ है तो वही भविष्य के लिए दुश्चिंता बढ़ाने वाली होती है। यदि वर्तमान सही है और हम भूल नहीं कर रहे हैं तो भूतकाल की गलतियों को दोहराएँगे नहीं, इसलिए वर्तमान की महत्ता है। लेकिन होता यह है कि हम वर्तमान में सही नहीं जी पाते हैं और इसलिए गलतियाँ कर देते हैं। वे ही त्रुटियाँ हमारे लिए अभिशाप बन जाती हैं और वे ही त्रुटियाँ भविष्य के लिए हमारे सामने दुश्चिंताओं के रूप में खड़ी हो जाती हैं। वे चिंताएँ निरंतर बनी रहती हैं और उन चिंताओं के कारण व्यक्ति अपना जीवन सही तरीके से जीना प्रारंभ ही नहीं कर पाता है। इसलिए बंधुओ! कुछ क्षणों के लिए हम अपने आपको भविष्य से अलग रखें और वर्तमान समय का सदुपयोग करने की तैयारी करें। इस प्रकार की यदि तैयारी होती है तो वह अपने आप में शांति का सफर कराने वाली होगी और आनंद की मंजिल तक पहुँचाने वाली बन सकेगी!

मेघकुमार की कथा आप जानते हैं। मेघकुमार ने भूतकाल की अवस्थाओं का चिंतन किया कि मैं भूतकाल में राजकुमार था और राजकुमार था तो उस समय मेरा बहुत सत्कार और सम्मान हुआ करता था, किंतु वर्तमान में ठोकर लग रही है। क्या ऐसा ही मेरा भविष्य भी होगा? क्या इसके आधार पर मैं साधना कर पाऊँगा? वे भविष्य को पकड़ नहीं पाए और विचलित हो गए। हम भी वर्तमान में जिस कार्य में लगे हुए हैं, यदि उस कार्य में रम जाएँ तो पूरी एकाग्रचित्तता के साथ कार्य संपन्न कर सकते हैं। आप देखिए, एक व्यक्ति जो खाता-रोकड़ मिलान करने के लिए बैठा है, थोड़ी-सी कहीं पर गलती आ रही है और उसे लग रहा है कि कोई इंस्पेक्टर कभी भी इस रोकड़ की जाँच के लिए उपस्थित हो सकता है। वैसी स्थिति में वह रोकड़ मिलान में

कितना तत्पर हो जाता है! उस समय वह पूरी तरह से एकाग्रचित्त हो जाता है और इधर-उधर की बातों की ओर उसका ध्यान नहीं जाता है। पूरी तन्मयता के साथ वह उसमें लगा होता है और काम के साथ एकमेक हो जाता है। एकमेक की अवस्था बनती है तो समस्या का समाधान भी उसे प्राप्त हो जाता है और जो त्रुटि रही होती है उस त्रुटि को दूर करने में वह समर्थ हो जाता है। यदि वह रोकड़ का काम भी करता रहे और उधर आने वाले ग्राहकों से भाव का मोल-तोल भी करता रहे, दूसरों के साथ लेन-देन भी करता रहे तो क्या वह रोकड़ की गलती पकड़ पाएगा? नहीं। जितने भी वैज्ञानिक हुए हैं उन्होंने इधर-उधर की दुश्चिंताओं को छोड़कर जो साध्य था उसके प्रति स्वयं को समर्पित किया, तभी वे साध्य को प्राप्त कर पाए थे। अनेक प्रकार की खोजें इसीलिए संभव हुई क्योंकि खोज करने वाले खोज में सुधबुध खो बैठे थे। तीर्थंकर देव भी हमसे यही कहते हैं कि यदि खोज करनी है तो आप इधर-उधर की चिंताओं को गौण करो और वर्तमान को समझकर एकाग्रचित्त होकर अपनी खोज को प्रारंभ कर दो।

बिना सामायिक में बैठे तो हम कल्पनाएँ करते ही हैं, सामायिक में बैठे हुए भी कल्पनाएँ करते हैं। कभी भूत की अवस्थाएँ हमारे दिमाग में आती हैं तो कभी भविष्य की कल्पनाएँ। भविष्य की चिंताएँ जब हमारे सामने उभरकर आ जाती हैं तब सामायिक से जो आनंद प्राप्त होना चाहिए वह हम ले नहीं पाते हैं। इसलिए प्रभु महावीर ने आचारांग सूत्र में कहा है— **'मज्झत्थो निज्जरापेही'**। निर्जरा की आकांक्षा करने वाले मध्यस्थ बनें, न भूत में रहें, न भविष्य में रहें, किंतु वर्तमान में, अपने आप में उपस्थित हो जाएँ।

हमारे भीतर तीन प्रकार की नाड़ियाँ विद्यमान हैं- **इड़ा**, **पिंगला** और **सुषुम्ना**। अधिकांशत: हम इड़ा और पिंगला का अनुभव करते रहते हैं, किंतु सुषुम्ना की अनुभूति बहुत कम हो पाती है। सुषुम्ना की अनुभूति बिना सरल बने सहसा हो नहीं सकती। आपके भीतर तनाव है तो आप अपने आपको तनावरहित बनाइए। शवासन में आ जाइए, चाहे सोए हुए हों या बैठे हुए हों, बैठे हुए भी, खड़े हुए भी शवासन हो सकता है। आप शरीर को शिथिल कर सकते हैं। आपने शरीर को शिथिल कर लिया तो फिर आप देखिए कि थोड़े ही समय में आपको सुषुम्ना की अनुभूति हो सकती है। आप मध्यस्थ हो जाएँगे। उस स्थिति में अतिमंद रूप से कषायों का वेदन हो सकता है, किंतु तीव्र विपाक रूप से उस समय कषायों का वेदन हमारे अनुभव में नहीं आएगा। न राग की अवस्था रहेगी, न द्वेष की। शांत-प्रशांत अवस्था बन जाएगी। राग और द्वेष उदय भाव की अवस्था से चलेंगे तो भी इतनी गौण अवस्था में चलेंगे कि उनकी अनुभूति सहसा हो नहीं पाएगी। ऐसे क्षण शांति और आनंद के होते हैं। शिथिल बनने की बात हम करते जरूर हैं, किंतु अपने आपको शिथिल बना नहीं पाते हैं। हमारे भीतर कहीं न कहीं खिंचाव बना ही रहता है और वही हमारी परेशानी का कारण होता है और वही हमें साधना में लगने नहीं देता है। वह खिंचाव या तनाव कई प्रकार का हो सकता है। पड़ोसी का हो सकता है, व्यापार का हो सकता है। यहाँ बैठकर भी आप अपने मस्तिष्क में खिंचाव ला सकते हैं। किसी की सुनी हुई बात से भी खिंचाव आ सकता है। ऐसा खिंचाव ही तनाव पैदा करता है, वही शांति से जीने नहीं देता है।

एक व्यक्ति लगभग 22 वर्षों से एक प्राइवेट कंपनी में काम कर रहा है। उसने तन तोड़कर 22 वर्षों तक वहाँ सर्विस की है। उसने कभी यह विचार ही नहीं किया कि उसके वेतन की क्या स्थिति है। कंपनी से जो प्राप्त हुआ, वह ले लिया। 22 वर्षों के बाद उसने वेतन-वृद्धि की बात की। कंपनी ने कुछ वेतन बढ़ाया, किंतु उसको संतोष नहीं हुआ। उसने कहा और बढ़ना चाहिए। बात बढ़ जाती है और तनाव की स्थिति बन जाती है। अब विचार कीजिए कि यह तनाव क्यों पैदा हो गया।

जीवन 22 वर्षों से भी बसर हो रहा था, 22 वर्षों में तनाव की स्थिति नहीं बनी थी, किंतु अब जहाँ उसके साथ खिंचाव की स्थिति बनी तो तनाव भी बढ़ गया। यह तनाव प्रारंभ में बहुत सामान्य लगता है, किंतु बढ़ते-बढ़ते बात इतनी बढ़ जाती है कि व्यक्ति का पूरा मनोविज्ञान ही बदल जाता है। उसे वह अपनी पोजीशन का प्रश्न बना लेता है। वही पोजीशन का प्रश्न फिर उसे झुकने नहीं देता है, नमने नहीं देता है। मेरी बात कैसे नहीं रहे? मेरी बात रहनी चाहिए और उस बात के लिए वह कुछ भी कर गुजरने के लिए तैयार हो जाता है। समाज में, परिवार में कितने भी संघर्ष होते हैं उनका मूल कारण यदि आप कभी ढूँढ़ेंगे तो आपको स्पष्ट नजर आएगा कि यही खिंचाव, यही तनाव परिवार और समाज में अशांति पैदा कर देता है और कई बार पारिवारिक विघटन का कारण बन जाता है।

अयोध्या में सारी व्यवस्थाएँ सामान्य रूप से चल रही थीं। महाराज दशरथ ने घोषणा कर दी थी कि कल राम का राज्याभिषेक किया जाएगा। मंथरा ने कैकेयी से कहा—''स्वामिनी! यह क्या हो रहा है?'' कैकेयी तब तक शांत थी, उसे किसी प्रकार की दुश्चिंता नहीं थीं। कैकेयी ने कहा—''जो हो रहा है वह अच्छा हो रहा है, राम का राज्याभिषेक होने वाला है। बहुत अच्छी बात है, होना ही चाहिए। राम महाराज दशरथ के बड़े पुत्र हैं, अत: उनका तो राज्याभिषेक होना ही है।'' मंथरा ने भड़काया—''स्वामिनी! आप नहीं समझ रही हैं। आप बड़ी भोली हैं। यदि राम का राज्याभिषेक हो जाता है तो कौशल्या राजमाता हो जाएगी और उनके सामने आप दासी के रूप में हो जाओगी। आप अपना विचार कीजिए और भरत की चिंता कीजिए कि भरत की क्या अवस्था रहेगी? वे तो कल राम के सामने हाथ जोड़ने वाले सामंत के रूप में रह जाएँगे। कभी आपने यह सोचा है कि भरत का भविष्य क्या हो जाएगा?'' कैकेयी कहने लगी कि तू क्या बातें कर रही हैं? राम और भरत एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। तू ऐसा क्यों विचार कर रही है? तो मंथरा ने कहा—''स्वामिनी! आप नहीं जान रही हैं। अभी आपने केवल राजमहलों की चारदीवारी में ही जीना सीखा है, किंतु यहाँ षड्यंत्रकारी नीति चल रही है और उसके साथ ही राम का राज्याभिषेक हो रहा है। कल का कल ही राम का राज्याभिषेक क्यों हो रहा है?'' कैकेयी कहने लगी कि सम्राट की तबीयत अनुकूल नहीं रहती है, इसलिए वे चाहते हैं कि वे अपने उत्तरदायित्व को हलका कर लें। मंथरा ने कहा—''स्वामिनी! आपको कैसे समझाऊँ!'' जब मंथरा के तर्क कैकेयी के सामने बार-बार आए तो कैकेयी का दिमाग भी सोचने के लिए बाध्य हुआ और वह भविष्य की चिंताओं में डूबने लग गई कि मेरे भरत का भविष्य क्या होगा? भविष्य की उस दुश्चिंता में उसका वर्तमान का सुख समाप्त हो गया। दशरथ से उसे जो वचन प्राप्त थे उनके आधार पर उसने दो वर माँग लिए। परिणामस्वरूप राम को राज्याभिषेक के स्थान पर वनवास प्राप्त हुआ और राजा दशरथ का देहावसान हो गया। इस प्रकार भविष्य के दुख की कल्पनाएँ उसके वर्तमान के सुख को समाप्त करने वाली बन गई। बंधुओ! ऐसी एक नहीं अनेक घटनाओं से आप परिचित होंगे और आपका स्वयं का भी अनुभव होगा कि जब-जब आप दुश्चिंताओं में चले गए या भविष्य की कल्पनाओं में डूब गए तब आपने अपने वर्तमान को भी बिगाड़ लिया। इसके विपरीत आप यह भी जानते हैं कि जो भूत-भविष्य की चिंताओं के बजाय वर्तमान की चिंता करता है, वर्तमान को साधता है वह सुखी होता है। वर्तमान ही साथ होता है, उसी में किए गए कर्मों का कोई फल हो सकता है। भूत तो मर चुका होता है और भविष्य अभी पैदा नहीं हुआ होता है। जो मर गया, जो पैदा ही नहीं हुआ वह क्या फल देगा? नंदन मुनि से संबंधित प्रकरण इस विषय में मार्गदर्शक है। उन्होंने यही सत्य समझकर वर्तमान को साधा और तीर्थंकर नाम कर्म का उपार्जन कर लिया।

नंदन राजकुमार के पिता चंद्रानगरी के राजा जितशत्रु और महारानी भद्रा ने निर्ग्रंथ प्रव्रज्या स्वीकार

करने से पूर्व नंदन राजकुमार का राज्याभिषेक कर दिया था। नंदन ने भी पोट्टिल आचार्य के उपदेश से प्रभावित होकर अपने पुत्र को राज्यभार सँभलाकर संयम मार्ग ग्रहण कर लिया था। उन्होंने यह अनुभव किया था कि अनंतकाल से परिभ्रमण करते हुए उनकी आत्मा ने मनुष्य जन्म का जो अलभ्य लाभ प्राप्त किया था उसका सदुपयोग उन्हें अपने वर्तमान जीवन में सभी प्राणियों के साथ मैत्रीभाव का निर्माण करने में कर देना था। सभी जीवों को साता और शांति पहुँचाने के उनके वर्तमान काल के अध्यवसायों ने तीर्थंकर नाम कर्म का उपार्जन करने में उनकी सहायता की। आप स्वयं विचार कीजिए कि तीर्थंकर देवों ने आत्मोद्धार की कितनी सरल विधि हमें बताई है, परंतु हम अध्यवसायों की शुद्धि में नहीं, औपचारिकताओं की पूर्ति में ही अपनी शक्ति, ज्ञान और प्रयासों को लगा देते हैं। पर्वों की मूल भावना विलुप्त हो जाती है तथा पर्व औपचारिकताओं की पूर्ति के रूप में ही मना लिए जाते हैं, चाहे वे पर्व रक्षाबंधन हों या दीपावली या संवत्सरी जैसा आत्मकल्याण का पर्व हो। हमें यह भली प्रकार समझ लेना चाहिए कि महत्व भावना का ही होता है। प्रभु महावीर भी कहते हैं, जिसके प्रति मनोमालिन्य है, यदि उससे क्षमायाचना करने के लिए तुम्हारे मन में विचार भी बन गया तथा तुमने अगर एक कदम भी आगे बढ़ाया और वहीं पर तुम्हारा आयुष्य पूर्ण हो जाता है, जीवन-लीला समाप्त हो जाती है तो भी तुम्हारी आराधना हो जाएगी, क्योंकि तुमने मानस बना लिया था कि जिसके साथ मेरे वैर-विरोध हैं, मनोमालिन्य हैं, मैं उसके पास पहुँचूँगा और क्षमायाचना कर लूँगा। इस प्रकार क्षमायाचना करने के लिए एक कदम आगे बढ़ाया और उसी समय आयुष्य पूर्ण हो गई तो शास्त्रकार कहते हैं कि तुम्हारी क्षमायाचना स्वीकार हो गई, भले वह सामने वाले के पास पहुँचे या नहीं पहुँचे। वैसे ही तुम्हारे मन-मस्तिष्क में यदि वैर-विरोध को विस्मृत करने की अवस्था बनती है और क्षमायाचना की भावना बनती है और पीछे की बातें तथा पीछे के कषाय, जो दबे हुए थे, वे समाप्त हो जाते हैं तथा उनके फिर से उभरने की स्थिति भी समाप्त हो जाती है तो शास्त्रकार कहते हैं कि वहाँ आराधना हो जाती है। परंतु जो विस्मृत कषायों को पुनः खड़ा करता है, वह प्रायश्चित्त का भागी बनता है। एक बार जो कषाय समाप्त हो चुका है, उसी कषाय को यदि वह प्रदीप्त करना चाहता है तो वह अपराधी बनता है, दोष का भागी बनता है। इसलिए प्रायश्चित्त का भी भागी बनता है।

नंदन मुनि की आत्मा ने अपने वर्तमान क्षण को सँभालकर और उस वर्तमान क्षण की आराधना करके तीर्थंकर नाम कर्म का उपार्जन किया। जब अंतिम समय नजदीक आया एवं उन्होंने देखा कि उनका शरीर ज्ञान, दर्शन और चारित्र की आराधना में उतना समर्थ नहीं रहा तब उन्होंने विचार किया कि मुझे इस शरीर से अंतिम परिणाम को प्राप्त कर लेना चाहिए। वे आत्म-आलोचना में पहुँचे, निंदा और गर्हा की अवस्था में पहुँचे। उन्होंने इस पर भी विचार किया कि यदि मेरे निमित्त से ज्ञान के किन्हीं आचारों में कोई अतिचार लगा हो, दर्शन में शंका की स्थिति बनी हो, उसमें मैंने कहीं पर भी आकांक्षा जोड़ ली हो, मेरे निमित्त से किसी जीव को कष्ट पहुँचा हो, असत्य का आचरण हो गया हो, किसी की बिना दी हुई वस्तु मैंने ग्रहण कर ली हो, मनसा-वाचा-कर्मणा मैथुन परिकल्पना बन गई हो, परिग्रह का कोई भी सुराख मूर्च्छाभाव में प्रवेश करने वाला बन गया हो तो मैं उनसे मुक्ति हेतु प्रायश्चित्त करता हूँ। इस प्रकार उन्होंने 18 पापों की आलोचना की, चारित्राचार की आलोचना की, तपाचार की आलोचना की और आलोचना, निंदा, गर्हा करके, अपने आचार का शुद्धिकरण करके अंतिम समय में संलेखना-संथारा की स्थिति प्राप्त की। उन्होंने विचार किया कि 'एगो मे सासओ अप्पा' अर्थात् मेरी आत्मा अकेली है, राग, द्वेष, द्वंद्व की अवस्था से ऊपर है, शुद्ध है तथा ज्ञान, दर्शन, चारित्र से युक्त है। इस प्रकार से

एकत्व भाव की साधना करके, उत्कृष्ट भाव के आधार पर उन्होंने 60 दिन तक संलेखना-संथारा की आराधना की। 60 दिन का संथारा करके अपने अंतिम समय में पूर्ण सजगता के साथ मृत्यु का वरण करके सारे दूषण त्याग कर पंडितमरण का वरण किया और नरभव का, मनुष्य भव का आयुष्य पूर्ण किया। पुष्पोत्तर विमान की देव शय्या पर उपस्थित होकर एक अंतर्मुहूर्त्त में अपना भव्य रूप प्राप्त करके वे विचार करने लगे—''अहो! मैं कहाँ आ गया? मैं कौन हूँ? इस अवस्था में यहाँ कैसे आ गया? किन कारणों से यहाँ पहुँचा?'' उसी के आधार पर जब अपने पिछले समय के बारे में चिंतन किया और अवधिज्ञान का प्रयोग करके उन्होंने पता लगाया कि जो चारित्र आराधना की गई थी, जो ज्ञान-दर्शन की आराधना की गई थी तथा उस ज्ञान, दर्शन और चारित्र की आराधना स्वरूप जो भाव रहा था उसी कारण से वे उस पुष्पोत्तर विमान में उपस्थित हुए थे। उनके मन में निर्ग्रंथ श्रमण संस्कृति के प्रति, वीतराग वाणी के प्रति अहोभाव उत्पन्न हुआ। अहो! यह निर्ग्रंथ प्रवचन कितना सत्य है। जैसा तीर्थंकर देव ने कहा है उसमें कहीं पर कोई शंका की गुंजाइश नहीं है। उसमें कोई शंका नहीं है। वह तो अपने-आप में सिद्ध हैं, परम शुद्ध है। इस प्रकार से उस वीतराग निर्ग्रंथ प्रवचन के प्रति उनके मन में अहोभाव पैदा हुआ।

बंधुओ! एक बार भी जिन्होंने आलोचना, निंदा, गर्हा करके अपनी आत्मा को विशुद्ध कर लिया, उनमें अहोभाव पैदा होता है। ऐसे ही साधु के लिए प्रभु महावीर ने कहा है कि एक वर्ष का संयम जीवन व्यतीत हो जाए, वह राग-द्वेष की अवस्थाओं से रहित रहे और आलोचना, निंदा, गर्हा की स्थितियों को प्राप्त करके यदि वह शुद्ध हो गया हो तो वह साधना में सफल होता है। तब वह एक वर्ष के साधु जीवन में सर्वार्थसिद्ध अनुत्तर विमान के तेज को भी लाँघ जाता है और वह परम आत्मसुख एवं परम आत्मशांति का अनुभव करता है।

इसलिए हम वर्तमान में जीना सीखें और वर्तमान को सार्थक करें क्योंकि भविष्य, वर्तमान की नींव पर ही बनेगा। इस मनुष्य भव को सार्थक करने का इससे अच्छा कोई और मार्ग है भी नहीं। इस सत्य को समझते हुए आगे बढ़ेंगे तो जीवन धन्य बन सकेगा।

साभार - श्री राम उवाच-8
(धर्म सुना तो क्या हुआ)

रचनाएँ आमंत्रित

500 शब्द अथवा एक पेज — शब्द सीमा

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के प्रत्येक माह के धार्मिक अंक भिन्न-भिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। इसी क्रम में आगामी धार्मिक अंक ● **तपस्या : वैज्ञानिक एवं धार्मिक परिप्रेक्ष्य में** ● **हमारे दैनिक जीवन में आध्यात्मिकता एवं भौतिकता का संतुलन** विषयों पर आधारित रहेंगे। कृपया विषय संदर्भित आपकी रचनाएँ यथाशीघ्र ही भिजवावें। उपरोक्त विषय के अतिरिक्त प्रेरणात्मक सारगर्भित विषयों पर भी लेख, रचनाएँ आदि स्पष्ट एवं सुंदर शब्दों में सादर आमंत्रित हैं।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नंबर हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। आप अपनी रचनाएँ दिए गए मोबाइल व वॉट्सएप नंबर या ईमेल द्वारा भी भेज सकते हैं।

– श्रमणोपासक टीम

9314055390

news@sadhumargi.com

ज्ञान सार

आध्यात्मिक आरोग्यम्

विवाद विग्रह से पराङ्मुखता

– संकलित

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. द्वारा जन-जन के चिंतन हेतु अमूल्य आयाम **'आध्यात्मिक आरोग्यम्'** ब्यावर की पुण्यधरा पर सन् 2021 को ज्ञान पंचमी के दिन प्रदान किया गया था। यह आयाम धारावाहिक के रूप में आप सभी के समक्ष आत्मकल्याण के लक्ष्य से प्रस्तुत कर रहे हैं। इसे जीवन में उतारकर अपने जीवन को आध्यात्मिक आरोग्यम् की ओर उन्मुख करें।

नाव हमारी भँवर में,
कब आवेगी भाई।
सबसे मिलकर चालिए,
गुरु वचन सुखदाई।।

15-16 मई 2025 अंक से आगे...

महावीर स्वामी को देखिए, वह तो विवाद करते ही नहीं। गोदुहा आसन पर बैठ जाते हैं। कोई धक्का देता है तो फिर गोदुहा आसन पर बैठ जाते हैं। फिर धक्का देता है तो फिर बैठ जाते हैं। कोई पत्थर मार रहा है, कोई लकड़ी से मार रहा है, कोई धूल फेंक रहा है, कोई उनके पीछे कुत्ते छोड़ रहा है। कभी ठंडा तो कभी बासी आहार मिलता है, पर वे विवाद से पराङ्मुख ही रहते हैं। हमें देखना है कि हमारे गिलास में पानी है या पेट्रोल! पानी होगा तो तीली बुझ जाएगी और पेट्रोल होगा तो भभक जाएगी। इसमें दोष तीली का नहीं है, दोष हमारा है। जो हमारे भीतर होगा वही बाहर प्रतिबिंबित होगा। हम दूसरों को दोष देते हैं कि उसने विवाद कर दिया, उसने ऐसा बोल दिया, उसने वैसा बोल दिया, उसने ऐसा कर दिया, उसने वैसा कर दिया। मैं तो चुपचाप बैठा था। मैं तो बड़ा शांत आदमी हूँ। उसने ऐसा कर दिया इसलिए मुझे गुस्सा आ गया। इसलिए मैं विवाद करने लगा। मैं तो बड़ा श्याणा-श्याणा हूँ।

फिर से जान लें कि यह एक मनोवृत्ति है। यह मनोवृत्ति रहने पर जीव एक भव के विवाद को अगले भव में भी ले जाता है। आप इसका उदाहरण देख सकते हैं; सीतेंद्र जब नरक में पहुँचा तो देखा कि रावण और लक्ष्मण के जीव आपस में लड़ रहे हैं। नरक में पहुँचने के बाद भी उनकी लड़ाई चल रही थी। वह अगले भव में साँप बन जाता है तो वहाँ भी विवाद करता है। आगे के भवों में कुत्ता और शेर बनता है तो वहाँ भी विवाद।

चंडकौशिक का विवाद क्या था? आचार्य थे, क्रोध में शिष्य से विवाद हो गया। शिष्य को मारने दौड़े तो अंधेरे में सिर खंभे से टकरा गया। विवाद के परिणाम मरे तो अगले भव में कनखल में कौशिक नामक ब्राह्मण बने। कौशिक अपने आश्रम में किसी को कुछ नहीं देता था। कोई फूल या फल तोड़ ले तो उसकी शामत आ जाती थी।

वह तोड़ने वाले के पीछे क्रोध में भागता। एक बार ऐसे ही क्रोध में भागते समय गिर गया। गिरने से उसका सिर फूटा और वहीं नाग बन गया। पिता ने तो कौशिक नाम रखा था। वह भयंकर क्रोधी था तो उसका नाम चंडकौशिक हो गया। चंड मतलब क्रोध। ब्राह्मण के भव का विवाद साँप के भव में चला गया। सर्प के भव में चंड विकराल बन गया। कहानी कहती है कि पूरा जंगल सूख गया। पेड़ झुलस गए। पौधे सूख गए। पत्तियाँ जल गईं। सुंदर वन उजड़ गया। वीभत्स रूप हो गया। ये विवाद का परिणाम था। चंड ने तो प्रभु को भी नहीं बख्शा। समाप्त करने के उपक्रम से उन्हें डंक मारा। उन पर जहर फेंका। प्रभु ने उस विवाद के फल को भोगा, पर अकारण वत्सल प्रभु समभाव से उसे बोध देते हैं।

आपने सुना होगा कि ज्ञान परभव में जाता है, पर ध्यान रखना, क्रोध भी परभव में जाता है। विवाद भी जाता है, द्वेष भी जाता है और ईर्ष्या भी जाती है। जो गहरा होगा वही आगे जाएगा। आप अपने को टटोलें कि मेरे अंदर क्या गहरा है।

जिंदगी बहुत छोटी-सी है। वह बीत जाएगी। वाद-विवाद करेंगे तो भी बीतेगी और नहीं करेंगे तब भी। कोई अमर रहने वाला नहीं है। ये सोचना है कि हमारी अरथी के पीछे चलने वाले लोग हमें किस तरह याद करेंगे! एक अरथी के पीछे चल रहे लोग कह रहे थे कि अच्छा हुआ जो मर गया। गाँव में शांति हो गई। कभी इससे लड़ता तो कभी उससे। उंगली करता ही रहता। हर चौमासे में झगड़ा करता था। साधु-साध्वियों को रुला देता था। एक चौमासा भी शांति से नहीं जाने दिया। चारित्रात्माओं का अविनय करने में भी इसने कसर नहीं छोड़ी। एक ने कहा कि पता नहीं खुद को क्या समझता था। दूसरों को तो कुछ गिनता ही नहीं था। हर जगह अपनी ही चलाता था। अपनी ही टाँग ऊँची रखता था। ध्यान रखना, मौत कभी-भी सॉरी बोलने की मोहलत नहीं देती है। माफी माँगे बिना ही आदमी एक झटके में रुखसत हो जाता है। लोकप्रिय श्रावक रत्न महेंद्र जी गादिया एक झटके में ही संसार को छोड़ गए। ऐसे झटके से गए कि समाज के लोग हतप्रभ रह गए। पूरा जैन और जैनतर समाज उनके असामयिक निधन से आहत हुआ। सिर्फ बात रह जाती है। तुलसीदास कहते हैं –

तुलसी इस संसार में, भाँति-भाँति के लोग।
सबसे हँस मिल बोलिए, नदी नाव संजोग।।

संकल्प करें कि कभी-भी किसी से विवाद होगा तो क्षमायाचना किए बगैर सोएँगे नहीं। अधिकांश लोग तो संवत्सरी के दिन भी क्षमायाचना नहीं करते हैं। जिससे लड़ाई होती है उससे तो एकदम नहीं। यदि वास्तविक संवत्सरी जानना है तो देखना होगा कि जितने केस कचहरी में चल रहे थे, वे वापस ले लिए गए क्या? लोगों ने सोचा क्या कि मुझे नहीं लड़ना केस! मैं केस वापस लेता हूँ। ये होता है तो वास्तविक संवत्सरी है। नहीं तो हर साल संवत्सरी आती है, पर हमारी संपत्ति के झगड़े, जमीनों के झगड़े, यहाँ तक कि धर्मस्थानक के झगड़े चलते रहते हैं। वहाँ भी पुलिस आ रही है। ताले लग रहे हैं। स्थानक सील किया जा रहा है। हम धर्म के नाम पर भी विवाद कर रहे हैं। संवत्सरी के प्रतिक्रमण के समय पुलिस आई है। कई जगह लाठियाँ चली हैं। कई जगह गिरफ्तारियाँ हुई हैं।

अरे भाई, संवत्सरी के दिन भी लड़ाई करोगे, विवाद-विग्रह करोगे तो कब करोगे खमतखामणा? कब करोगे मिच्छा मि दुक्कडं? कब करोगे क्षमायाचना? कब धोओगे अपने मैले मन को?

जब दवा ही रोग बढ़ाने का काम कर रही है तो ठीक कौन करेगा? हमारी हालत तो ऐसी ही हो गई है, जैसे दवा ही रोग को बढ़ा रही हो। धर्म तो विवाद-विग्रह मिटाने वाला है और हमने उसमें भी विवाद खड़े कर दिए। कुछ लोगों को तो बात-बात पर मिथ्यात्व लगता है। दूसरे को पाखंडी और शिथिलाचारी बताने में भी हम देरी नहीं करते। मिथ्याभिनिवेश के वशीभूत ऐसा कहने से भी नहीं चूकते हैं कि वे आचार्य नहीं हैं, वे साधु नहीं हैं, वे अभवी हैं। पवित्र जिनवाणी के पाटे पर बैठकर शास्त्र वाचन

की जगह वे दूसरों के दुर्गुण बाँच रहे हैं। बुला-बुलाकर बता रहे हैं। नहीं मालूम पड़ने वाले को मालूम पड़ेगा तो धर्म के प्रति श्रद्धा घटेगी। इससे युवा मन दुखता है। वह पहले से ही धर्म से दूर है और यह सब सुनकर, जानकर और दूर होता चला जाता है। उसकी श्रद्धा में फर्क आ जाता है। कई-कई साधु तो कहते हैं कि हमारे संप्रदाय के साधुओं के सिवाय सभी मिथ्यात्वी हैं, असाधु हैं। अरे, आपको केवलज्ञान हो गया क्या?

एक प्रसिद्ध संत से किसी ने पूछा कि गुरुदेव, क्या मैं समदृष्टि हूँ? तो गुरुदेव ने कहा कि मैं अभी अपना भी पूरा नहीं कह सकता हूँ तो आपके लिए क्या कहूँ! वे संत अपने लिए भी ऐसा कहते हैं और हम पूरी दुनिया को प्रमाण-पत्र बाँटते फिरते हैं। हम कहते हैं कि वह मिथ्यात्वी, वह अभवी, वह शिथिलाचारी, वह पाखंडी, वह ढीला, वह ऐसा, वह वैसा। ऐसा कहने से क्या हम सुलभबोधि का बंध करेंगे?

प्रभु का उपदेश है -

उवसमसारं खु सामण्णं

उपशम ही श्रमण धर्म का सार है। भगवान धर्म का सार उपशम को कहते हैं। वे कहते हैं कि सारे धर्म को, शास्त्रों को, तप को यदि एक शब्द में कहा जाए तो वह है उपशम भाव। और उपशम भाव को ही कहते हैं वाद-विवाद से पराङ्गमुखता...।

गुरुदेव फरमाते हैं कि बोलने से विवाद होता है और मौन रहने से ब्रेक लग जाता है। विवाद के मौके पर मौन धारण कर लें।

मौनिनः कलहो नास्ति।

नीति का यह महावाक्य हमें वाद-विवाद से पराङ्गमुख बनने में मदद करेगा। गुरुदेव की शिक्षा के साथ यह बात पूरी की जाती है कि किसी भी विवाद को पाँच मिनट से ज्यादा नहीं रखना। पाँच मिनट के भीतर क्षमायाचना कर लेना।

पाँचवाँ बिंदु पूरा हुआ। पूर्व बिंदुओं की भाँति एक बार फिर थोड़ा-सा रुकें, सोचें और आगे लिखी बातों को अपने जीवन का हिस्सा बनाएँ। भूलिएगा नहीं कि कम से कम 21 दिन तक इसे अपने जीवन का हिस्सा बनाना है।

1. शांत कलह को फिर से नहीं शुरू करना।
2. खुद लड़ाई शुरू नहीं करना।
3. भाई-बंधु पर कोर्ट में केस नहीं करना।
4. लड़ाई होने पर सोने से पहले सॉरी कहकर ही सोना।
5. लड़ाई होने पर बोल-चाल बंद नहीं करना।
6. आग में घी का काम नहीं करना।

साभार- आध्यात्मिक आरोग्यम्

क्रमशः

> *सुख के शोध की यह अंतर्यात्रा हमें आरंभ करनी होगी अपने ही मन से, क्योंकि यह मन बाह्य एवं आभ्यंतर जगत के मध्य की कड़ी है। आज यह मन बाहर के विषयों में ही भटक रहा है। इसको साधना पड़ेगा और उसे एकाग्र बनाकर भीतर गहराई में उतारना होगा। मन की ऐसी साधना ही अंतर्यात्रा की साधना बन सकेगी। इसमें चित्तवृत्तियों पर नियंत्रण की क्षमता बढ़ानी होगी तो उनके संशोधन के विविध प्रयोग भी कार्यान्वित करने होंगे। चित्तवृत्तियाँ अशुभ योगों से शुभ योगों में प्रवृत्ति करे, यह कोई सरल कार्य नहीं है। फिर यह आत्मा भी तो अनंत काल से वैभाविक वातावरण में चल रही है, जिसके कारण चित्तवृत्तियों में यह परिवर्तन लाना सहज रूप से संभव नहीं है। विपथ पर दौड़ते हुए चित्त को नियंत्रण में लेना एक भगीरथ कार्य है। कई साधकों ने कई प्रयोग इस हेतु किए हैं, किंतु उनके कई प्रयोग इस दिशा में विफल भी रहे हैं। कारण, जब तक आत्मा के मूल स्वभाव का सम्यक् ज्ञान नहीं हो तथा विपथ से मन को नियंत्रित करने की सम्यक् विधि अपनाई नहीं जाए, तब तक कोई भी प्रयोग सफल नहीं हो सकता। इस संबंध में वीतराग देवों ने संयमी साधना की प्रकीर्णता के बाद अंतर्ज्ञान को पाकर जो मनस्साधना एवं ध्यान का प्रयोग बताया है, उसी को केंद्रस्थ बनाकर साधना रूप अंतर्यात्रा का श्रीगणेश किया जा सकता है।*
>
> **- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.**

ज्ञान सार

श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला

15-16 मई 2025 अंक से आगे...

संकलनकर्ता - कंचन कांकरिया, कोलकाता

प्रश्न 183 सराग चारित्र आर्य के कितने भेद हैं?

उत्तर सराग चारित्र आर्य के दो भेद हैं - सूक्ष्मसंपराय सराग चारित्र आर्य और बादरसंपराय सराग चारित्र आर्य। (संपराय यानी कषाय)

प्रश्न 184 सूक्ष्मसंपराय सराग चारित्र आर्य के कितने भेद हैं?

उत्तर सूक्ष्मसंपराय सराग चारित्र आर्य के दो भेद हैं –

(1) प्रथम समय सूक्ष्मसंपराय सराग चारित्र आर्य,

(2) अप्रथम समय सूक्ष्मसंपराय सराग चारित्र आर्य।

अथवा

(1) चरम समय सूक्ष्मसंपराय सराग चारित्र आर्य,

(2) अचरम समय सूक्ष्मसंपराय सराग चारित्र आर्य।

अथवा

(1) संक्लिश्यमान (ग्यारहवें जीवस्थान से गिरकर दसवें जीवस्थान में आए हुए)

(2) विशुद्धयमान (नौवें जीवस्थान से ऊपर चढ़कर दसवें जीवस्थान में आए हुए)

प्रश्न 185 बादरसंपराय सराग चारित्र आर्य के कितने भेद हैं?

उत्तर बादरसंपराय सराग चारित्र आर्य के दो भेद हैं –

(1) प्रथम समय बादरसंपराय सराग चारित्र आर्य,

(2) अप्रथम समय बादरसंपराय सराग चारित्र आर्य।

अथवा

(1) चरम समय बादरसंपराय सराग चारित्र आर्य,

(2) अचरम समय बादरसंपराय सराग चारित्र आर्य।

अथवा

(1) प्रतिपाति और (2) अप्रतिपाति।

प्रश्न 186 वीतराग चारित्र आर्य के कितने भेद हैं?

उत्तर वीतराग चारित्र आर्य के दो भेद हैं – उपशांत कषाय वीतराग चारित्र आर्य और क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य।

प्रश्न 187 उपशांत कषाय वीतराग चारित्र आर्य के कितने भेद हैं?

उत्तर उपशांत कषाय वीतराग चारित्र आर्य के दो भेद हैं –

प्रथम समय उपशांत कषाय वीतराग चारित्र आर्य और अप्रथम समय उपशांत कषाय वीतराग चारित्र आर्य।

अथवा

चरम समय उपशांत कषाय वीतराग चारित्र आर्य और अचरम समय उपशांत कषाय वीतराग चारित्र आर्य।

प्रश्न 188 क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य के कितने भेद हैं?

उत्तर क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य के दो भेद हैं - छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य और केवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य।

प्रश्न 189 छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य के कितने भेद हैं?

उत्तर छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य के दो भेद हैं। यथा –

(1) स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य। इसके दो भेद हैं –
प्रथम समयवर्ती और अप्रथम समयवर्ती

अथवा

चरम समयवर्ती और अचरम समयवर्ती।

(2) बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य। इसके भी दो भेद हैं –
प्रथम समयवर्ती और अप्रथम समयवर्ती

अथवा

चरम समयवर्ती और अचरम समयवर्ती।

प्रश्न 190 केवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य के कितने भेद हैं?

उत्तर केवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य के दो भेद हैं – सयोगिकेवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य और अयोगिकेवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य।

सयोगिकेवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य के दो भेद हैं –

(1) प्रथम समय सयोगिकेवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य,
(2) अप्रथम समय सयोगिकेवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य।

अथवा

(1) चरम समय सयोगिकेवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य,
(2) अचरम समय सयोगिकेवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य।

अयोगिकेवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य के दो भेद हैं –

(1) प्रथम समय अयोगिकेवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य,
(2) अप्रथम समय अयोगिकेवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य।

अथवा

(1) चरम समय अयोगिकेवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य,
(2) अचरम समय अयोगिकेवली क्षीण कषाय वीतराग चारित्र आर्य।

–क्रमशः

ज्ञान सार

श्रीमद् उत्तराध्ययनसूत्र

तेरहवाँ अध्ययन : चित्तसंभूइज्जं अज्झयणं

15-16 मई 2025 अंक से आगे...

संकलनकर्ता - सरिता बैंगानी, कोलकाता

पूर्व चित्रण

'चित्त एवं सम्भूत' दोनों के पिछले पाँच जन्मों में साथ-साथ रहने का कथन कर दिया गया है। छठे भव में दोनों जीव ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती एवं गुणसार मुनिराज के रूप में पृथक्-पृथक् नगर एवं कुल में उत्पन्न हुए। कुछ घटनाओं के बाद किसी समय दोनों का फिर से इस छठे भव में परस्पर मिलन हुआ।

भगवान महावीर स्वामी ने चित्त (मुनिराज) एवं सम्भूत (चक्रवर्ती) के पुन: मिलने तथा उनके बीच में पुण्य एवं पापजनक वार्तालाप का वैराग्यजनक वर्णन इस प्रकार फरमाया है –

ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती और गुणसार मुनि का मिलन

कंपिल्लम्मि य नयरे, समागया दो वि चित्त-संभूया।
सुह-दुक्ख-फल-विवागं, कहेंति ते एक्कमेक्कस्स।।3।।

भावार्थ – कम्पिल्य नगर में चित्त और सम्भूत दोनों का समागम हुआ और दोनों ने परस्पर एक-दूसरे से सुख-दुख रूप कर्म फल के विपाक के संबंध में बात की। (यहाँ चित्त-सम्भूत के नाम को पूर्वभव के नाम की अपेक्षा से जान लेना चाहिए)

सम्भूत चक्रवर्ती द्वारा पूर्वभवों का कथन

चक्कवट्टी महिड्ढीओ, बंभदत्तो महायसो।
भायरं बहुमाणेणं, इमं वयणमब्बवी।।4।।

भावार्थ – महान ऋद्धि-संपन्न और महायशस्वी ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती ने बहुत सम्मान-आदर के साथ अपने पूर्वभव के भाई (चित्त) से इस प्रकार कहा –

आसिमो भायरा दो वि, अण्ण-मण्ण-वसाणुगा।
अण्ण-मण्णमणुरत्ता, अन्न-मन्नहिएसिणो।।5।।
दासा दसन्ने आसी, मिया कालिंजरे नगे।
हंसा मयंगतीराए, सोवागा कासि-भूमिए।।6।।
देवा य देव-लोगम्मि, आसि अम्हे महिड्ढिया।
इमा णो छट्ठिया जाई, अण्ण-मण्णेण जा विणा।।7।।

भावार्थ – ''हे मुनि ! हम दोनों (इस जन्म से पूर्व में) एक-दूसरे के वश में रहने वाले, एक-दूसरे में अनासक्त रहने वाले और एक-दूसरे का हित चाहने वाले भाई थे।

पहले हम दशपुर देश में दासी पुत्र थे, वहाँ से मरकर मृग हुए, फिर मृत गंगा के किनारे हंस और फिर उस पर्याय को छोड़कर काशी देश में चांडाल हुए थे।

उस पर्याय को भी छोड़कर सौधर्म स्वर्ग में पद्मगुल्म विमान में महर्द्धिक देव हुए थे। यह हमारा छठा जन्म है, जिसमें हम एक-दूसरे से पृथक्-पृथक् उत्पन्न हुए हैं।''

ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती ने पूर्व गाथा में व्यक्त किया कि पिछले पाँच भवों तक हम दोनों एक ही प्रकार के जन्म और एक ही प्रकार के संबंध, स्नेह, संयोग तथा वातावरण में रहे, किंतु यह छठा भव ऐसा क्यों है, जिसमें हमारा जन्म, संबंध, स्नेह, संयोग और वातावरण बदल गया? हमारा एक-दूसरे से वियोग क्यों हो गया? हम पृथक्-पृथक् स्थानों में क्यों जन्मे?

चित्तमुनि द्वारा कथित कारण : निदान

चक्रवर्ती के स्नेहजनित वचनों को सुनकर मुनिराज एक-दूसरे से पृथक् होने के रहस्य को ज्ञात करने के हेतु से कहते हैं –

कम्मा नियाण-प्पगडा, तुमे राय! विचिंतिया।
तेसिं फल-विवागेण, विप्पओग-मुवागया।।8।।

भावार्थ – ''हे राजन्! (सम्भूत के भव में सांसारिक पदार्थों को भोगने की अभिलाषा से) तुमने विशेष रूप से चिंतन करके नियाणा किया, उन्हीं कर्मों के फल विपाक (विपाकोदय) से हम दोनों में वियोग (पृथक्) हुआ है।

नियाण-प्पगडा – निदानकृत – दुर्ध्यान एवं अशुभ अध्यवसाय जैसे –

(i) भोगों के लिए तप आदि क्रियाओं को निस्सार करना 'निदान' है।

(ii) स्वयं द्वारा आचरित मोक्षदायक सभी धर्म अनुष्ठान को सांसारिक सुख हेतु निष्फल अर्थात् उसका सौदा करना 'निदान' है।

(iii) सारी तपस्या या साधना को मिट्टी में मिलाने के समान 'निदान' है।

(iv) अति विशुद्ध हुई आत्मा को पुनः मलिन करने का कारण 'निदान' है।

(v) क्षणिक सुखों के लिए बहुकाल के लिए संसार परिभ्रमण करने वाला 'निदान' है।

फल-विवागेण – फल विपाक – पूर्वकृत कर्म अनुसार। वर्तमान में जो कर्म फल उदय में आते हैं, उसे फल विपाक कहते हैं।

विचिंतिया – विशेष रूप से चिंतन अर्थात् पौद्‌गलिक पदार्थों की प्राप्ति के लिए आर्त्तध्यान (अशुद्ध ध्यान) रूप से चिंतन करना।

इस गाथा का आशय यह है – चित्तमुनि के जीव ने सम्भूति मुनि के जीव को समझाने का बहुत प्रयास किया, परंतु उन्होंने उनकी बात नहीं मानी और पूर्वभव में रानी के सुकोमल केश के स्पर्श से प्रभावित होकर (सम्भूत मुनि ने) चक्रवर्ती बनने का 'निदान' किया था। वस्तुतः मोह एवं विषय सुख इतने प्रबल होते हैं कि वे उत्कृष्ट तप करने वाले महामुनि को भी स्पर्श मात्र से 'निदान' कराने में तत्पर कर देते हैं। 'निदान' से मोक्ष मार्ग तथा धर्म अनुष्ठान (साधना, तप, कार्य) के फल क्षीण हो जाते हैं। निदानकृत जीवों की दुर्गति निश्चित है।

नोट – जिनशासन में भव्य जीवों के लिए उस दोष की आलोचना-प्रतिक्रमण करके पुनः शुद्ध होने का विधान है।

वियोग के कारण को जानकर चक्रवर्ती पुनः अपने पक्ष को शुभाशुभ दर्शाते हैं, उसी संबंध में दोनों के बीच के पाप-पुण्यजनक वार्तालाप का वैराग्यजनक वर्णन भगवान महावीर स्वामी ने इस प्रकार फरमाया है –

सच्च-सोय-प्पगडा, कम्मा मए पुरा कडा।
ते अज्ज परिभुंजामो, किण्णु चित्ते वि से तहा?॥१॥

भावार्थ – हे मुनि! मैंने पूर्व में मुनि पर्याय में जो सत्य (मृषात्याग) एवं शौच (आत्मशुद्धि) रूप में शुभ कार्य किए हैं, उन्हीं कर्मों के शुभ फल को मैं आज चक्रवर्ती के रूप में भोग रहा हूँ। चित्त! क्या तुम भी कृत कर्मों का वैसा ही शुभ फल भोग रहे हो?

सच्च-सोय-प्पगडा कम्मा – (i) सच्च – सत्य – मिथ्या आचरण रहित, (ii) सोय – शौच – आत्मशुद्धि करने वाले या माया रहित, (iii) प्पगडा कम्मा – प्रसिद्ध कर्म – धर्म अनुष्ठान से शुभ कर्मों का उदय।

अज्ज परिभुंजामो – आज भोग रहा हूँ यानी राजसुख तथा स्त्रीसुख आदि के उपभोग सुख भोग रहा हूँ।

इस गाथा का आशय यह है – यहाँ चक्रवर्ती अपने सुखों को अनुपम तथा मुनिराज के संयम सुख को निस्सार मान रहे हैं। उनका मानना है कि 'पूर्वकृत शुभ कर्मों के फलस्वरूप उन्हें राज्य, वैभव, रानियाँ तथा विषय सुखों का शिखर प्राप्त हुआ है, किंतु मुनिराज पूर्वकृत शुभ कर्मों के फलस्वरूप निर्धन, विषय सुखों से वंचित एवं कष्टों को सहन कर रहे हैं। अतः मुनिराज ने निदान न करके क्या अधिक प्राप्त कर लिया है?'

– क्रमशः

अनादिकालीन संसार परिभ्रमण के कारण आत्मा अपने स्वभाव को छोड़कर अधिकांशतः अपने विभाव में स्थित हो रही है। फिर भी यह हर्ष का विषय है कि अब सामान्य जीवन एक नए वैचारिक मोड़ पर आकर खड़ा हो गया है। वर्तमान विषय एवं विपरीत परिस्थितियों ने बुद्धिवादियों व विचारकों के हृदयों को आंदोलित कर दिया है और वे इन ज्वलंत परिस्थितियों के संदर्भ में सोचने लगे हैं कि क्या कोई ऐसा उपाय है, जिससे मानसिक तनावों से मुक्त होकर स्थायी सुखानुभव किया जा सके? यही अंतर्दर्शन या अंतर्यात्रा की ओर गति करने का आशाजनक संकेत है।

यही नहीं, स्वयं वैज्ञानिक भी विज्ञान के तथाकथित विकास के प्रति सशंक और चिंतामग्न हो गए हैं कि क्या विज्ञान का यह अतिशय विकास स्वयं मानव जीवन का ही घातक तो नहीं हो गया है? छोटी-सी मशीन से लेकर कंप्यूटरी रोबोट तक, जो यह यांत्रिक विकास हुआ है, उससे एक ओर तो मनुष्य की मानसिक यंत्रणाएँ बढ़ गई हैं, तो दूसरी ओर वायु प्रदूषण आदि दोषों से भाँति-भाँति के शारीरिक रोग फैल गए हैं।

यह स्थिति चौंकाने वाली बन गई है। सामान्यजन तक भी सोचने लगे हैं कि आज जिसे विकास कहा जा रहा है, क्या वह विकास भी है? कहीं यह तो नहीं है कि यह विकास ही विनाश का रूप ले रहा है? हम पूर्व वाले पश्चिम की दृश्यमान चमचमाती सभ्यता से आकर्षित हुए थे और उस दिशा में दौड़ने लगे थे, किंतु अब वह मोड़ आ गया है, जहाँ हम अपनी विपथगामिता को महसूस करने लगे हैं। इस कारण ही अब यह समझ फैलने लगी है कि विकास की जो दिशा हमने पकड़ी थी, वह गलत थी। हम अपना सुख अब तक बाहर ही बाहर खोजते रहे हैं और यही हमारी भूल थी। जो सुख वास्तव में अपने ही भीतर में बसा हुआ है और जिसे हम अंतर्यात्रा को सफल बनाकर प्राप्त कर सकते हैं, वह भला बाहर कहाँ और कैसे मिलता?

– परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

धर्ममूर्ति आनंद कुमारी

थाँदला और मंदसौर

15-16 मई 2025 अंक से आगे...

(आप सभी के समक्ष 'धर्ममूर्ति आनंद कुमारी' धारावाहिक के रूप में प्रकाशित हो रहा है, जिसमें आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. की प्रथम शिष्या महासती श्री रंगू जी म.सा. की पट्टधर महासती श्री आनंद कँवर जी म.सा. का प्रेरक जीवन-चरित्र प्रतिमाह पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।)

भद्र ग्रामीण आपके त्याग की अद्‌भुतता से प्रभावित होकर जाते हुए कहता हैं—"अच्छा महाराज, हम लोग जाते हैं, भोजन करके वापस लौटेंगे। आप लोग हमें कुछ हरजस (भजन) वगैरह सुनाएँगी न?" महासती जी ने फरमाया—"हाँ, क्यों नहीं! जब तुम इतनी लगन से प्रार्थना कर रहे हो तो हमें सुनाने में कौनसी हानि है? हमारा तो यह कर्तव्य ही है। तुम एक काम करना, गाँव में सूचना दे देना कि जो लोग साध्वियों के भजन व उपदेश सुनना चाहें वे हमारे संध्या-वंदन (प्रतिक्रमण) करने के बाद सुन सकते हैं।"

गाँव में सूचना दे दी गई। बस, अब क्या था! गाँव के भोले-भाले सरल हृदयी स्त्री-पुरुष इकट्ठे हो गए। साध्वीश्री जी की वाणी में अपूर्व माधुर्य था। गाँव के लोग भक्ति से गद्‌गद्‌ हो गए और अपनी भाषा में कहने लगे—"महाराज! आछो अरथ दरसायो। म्हाँको काँइ वेगा, म्हे इतरो पाप कराँ हाँ। आप तो भगवान री भक्ति करो हो, तिर जावोगा।"

साध्वी श्री जी ने उनके पवित्र हृदय को आश्वासन देते हुए समझाया—"भाई! तुम्हारे मन में बड़ी सरलता है। तुम लोगों में साधु-संतों के प्रति काफी भक्ति है। तुम्हारे घर पर कोई भूला-भटका अपरिचित व्यक्ति आ जाता है तो उसे भी तुम भूखा-प्यासा नहीं जाने देते। यह अतिथि सत्कार का गुण सराहनीय है। तुम परमात्मा की भक्ति के लिए थोड़ा-बहुत समय जरूर निकाला करो और इन छोटे-बड़े प्राणियों पर भी दयाभाव रखो। तुम्हारा कल्याण होगा।"

दूसरे दिन सुबह ही आप विहार करने वाली थीं। आपका वहाँ से जाना उन ग्रामीणों को बड़ा ही खटक रहा था। वे बड़े आग्रह के साथ अपने घर की ओर ले गए और दूध आदि बहराया।

त्यागी-जीवन मनुष्य पर प्रभाव डालता ही है, परंतु त्याग सच्चा होना चाहिए, जीवित होना चाहिए। मुर्दा त्याग अपने और संसर्ग में आने वालों के जीवन को दूषित करता है। जैन साधु-साध्वियों का त्याग सच्चा त्याग होता है।

यहाँ से विहार कर आपने कई छोटे-छोटे ग्रामों में विचरण किया। कई ग्रामों में किसानों को जीवदया के लिए सुंदर भावपूर्ण कहानियाँ सुनाकर प्रेरित किया। उन्हें समझाया कि देखो, तुम्हारे खेतों में उदई, मकोड़े, कीड़ियों वगैरह के बिल हों तो उस जगह को छोड़ दो। तुम्हें महान लाभ होगा। वे बेचारे तुम्हारा क्या बिगाड़ते हैं! ये साँप-बिच्छु आदि भी निरपराध प्राणी हैं। छेड़े बिना

काटते नहीं, फिर इन्हें क्यों मारते हो? उन्हें भी मारने-पीटने पर तुम्हारे समान ही दुख-दर्द होता है। अपने छोटे-छोटे बच्चों की तुम रक्षा करते हो, उसी तरह इन जूँ और लीख वगैरह की भी रक्षा करो। छोटे-छोटे ग्रामीण बच्चों और महिलाओं को तो आपकी कथाएँ बड़ी रुचिकर लगतीं। वे आपके प्रतिक्रमण करने से पूर्व ही कथा सुनने के लिए उपस्थित हो जाते।

इस तरह कई छोटे-छोटे गाँवों में धर्म ध्वजा लहराते हुए आप रतलाम, जावरा आदि प्रसिद्ध क्षेत्रों में भ्रमण करती हुईं मंदसौर पहुँची। आपको वहाँ सूचना मिली कि साध्वी श्री बड़ी आनंद कुमारी जी म.सा. की तबीयत कुछ खराब-सी रहती है। अतः आपको जल्दी ही सोजत लौटना चाहिए। मंदसौर में आपकी सांसारिक मौसीजी-गुरुणीजी की शिष्या साध्वी श्री रत्न कुमारी जी आर्या आदि ठाणा-4 विराजित थीं। उन्होंने आपश्री को ठहरने के लिए काफी आग्रह किया, पर आपके हृदय में तो श्रद्धेय महासती श्री बड़ी आनंद कुमारी जी म.सा. की सेवा में शीघ्रातिशीघ्र पहुँचने की लगन थी। आपकी उन पर अत्यंत भक्ति थी। वे भी आपको पुत्रीवत् समझती थीं। उनकी ही परम कृपा का फल है कि आप प्रवर्तिनी जैसे उच्च पद पर पहुँच गईं। दीक्षा लेने के बाद उनसे इतने दिनों तक दूर रहने का कभी अवसर ही नहीं आया था।

मनुष्य का सोचा हुआ कार्य हर समय सिद्ध नहीं होता। मनुष्य सोचता कुछ है तथा होता कुछ और है। बड़े-बड़े सम्राटों का राज्य क्षणभर में पलट जाता है। यह तो प्रकृति की लीला है। मनुष्य को तो अपने कर्तव्य पालन में पुरुषार्थ करते रहना चाहिए। उसे फल की ओर दृष्टि नहीं उठानी चाहिए। गीता में कहा है— *'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'* अर्थात् तेरा अधिकार कार्य करने में है, फल की ओर तू कभी मत देख।

हाँ, तो साध्वी श्री छोटी आनंद कुमारी जी म.सा. जिस दिन मंदसौर से विहार करने वाली थीं, उसी दिन अचानक नीचे उतरते समय आपका पैर फिसल गया और पाँव में मरोड़ आ गई। काफी दर्द होने लगा। पैर में सूजन आ गई। अब क्या किया जाए? आपश्री जी ने सोचा कि मैं तो जल्दी से जल्दी सोजत पहुँचना चाहती थी, पर पैर ने मुझे अचानक ही रोक लिया। संभव है मेरे प्रेम की कसौटी हो रही है, पर यह मेरे हाथ की बात नहीं।

थोड़े दिन तक आपको मंदसौर में ही रुकना पड़ा। पैर का उपचार किया गया। धीरे-धीरे पुनः थोड़ा-थोड़ा चलना प्रारंभ किया। शहर के लोगों ने काफी प्रार्थना की कि आप अभी यहीं विराजिए। थोड़े दिन बाद पैर एकदम ठीक हो जाए तो विहार करने से हम रोकेंगे नहीं।

साधु जीवन किसी के बंधन में नहीं है। साधु अप्रतिबद्ध विहारी है। साधु मौका देखे तो कहीं ठहर भी जाए, नहीं तो बड़े से बड़े व्यक्तियों के कहने पर भी नहीं रुक सकता। यही तो साधु जीवन की महत्ता है।

साध्वी श्री छोटी आनंद कुमारी जी म.सा. ने श्रावकों से संक्षिप्त में फरमाया—''मैं अब रुकना नहीं चाहती। मुझे श्रद्धेय साध्वी श्री बड़ी आनंद कुमारी जी म.सा. की सेवा में शीघ्र पहुँचना है। यहाँ तो पैर के दर्द से रुक गई थी। अब दर्द इतना नहीं है।''

आपने पैर के मामूली दर्द की कोई परवाह नहीं की और उग्र विहार करती हुई थोड़े ही दिनों में अपनी शिष्यमंडली सहित सोजत पधार गईं।

आपश्री जी अकसर कहा करती थीं—''मुझे गुरुणी प्रवर के दर्शनों की उमंग थी और उसी उमंग और उनके प्रेम के कारण मैं पाँव का दर्द भूल गई। पहले जहाँ मेरा पैर चलने के लिए मुश्किल से उठता, अब वह तेजी से उठने लगा था। यह गुरुणी जी की दयादृष्टि का ही फल है।''

सच्चे प्रेम का आकर्षण बड़ा तीव्र होता है। सच्चे प्रेम के कारण साधुता की मस्ती में झूमने वाले अपना दुख-दर्द सब कुछ भूल जाते हैं।

साभार- धर्ममूर्ति आनंद कुमारी

-क्रमशः

संस्कार सौरभ

जैनधर्म और पर्यावरण संरक्षण

\- पदमचंद गांधी, जयपुर

जैनधर्म की पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि विश्व के लिए अमूल्य धरोहर है। क्योंकि जैनदर्शन में वर्णित प्रत्येक बात पर्यावरण की ओर ध्यान आकृष्ट करती है। पर्यावरण की सुरक्षा, संवर्द्धन ही मानव को सभ्य जीवन जीने की प्रेरणा देता है। जैविक वातावरण में वनस्पति एवं जीव-जंतु शामिल हैं, जो जीवित प्राणियों के लिए आहार एवं अन्य उपयोगी साधन उपलब्ध कराते हैं। लेकिन मानवीय मूर्च्छा, लालसा, संग्रह बुद्धि एवं स्वार्थ सिद्धि के लिए उपयोग के स्थान पर उपभोग प्रवृत्ति ने प्राकृतिक संसाधनों को खोखला कर दिया है। भारतीय संस्कृति के मूल धर्म वैदिक, सनातन, बौद्ध एवं जैनधर्म ऐसे धर्म रहे हैं, जहाँ पर पर्यावरण को संरक्षण प्राप्त है, जिसने धर्म का मूलाधार पर्यावरण सुरक्षा को मान्य किया है। जैनधर्म के प्रत्येक सिद्धांत में पर्यावरण समाविष्ट है, क्योंकि संपूर्ण प्राणी जगत जीवों से ओतप्रोत है और जीवों की रक्षा करना अर्थात् **'अहिंसा परमो धर्मः'** माना गया है। इस प्रकार जैनधर्म पर्यावरण सुरक्षा के प्रति गंभीर है और अपने अनुयायियों को प्रकृति और उनके जीवों के प्रति सम्मान और दया रखने के लिए प्रेरित करता है।

पारिस्थितिक संतुलन जीव और प्रकृति की एक महत्वपूर्ण अवस्था है, जिसमें सभी जीव अपनी आवश्यकता के अनुसार ऊर्जा को प्राप्त करते हैं तथा उसका हस्तांतरण भी करते हैं। इस पारिस्थितिक तंत्र की रचना एक व्यवस्थित जैव इकाई के रूप में कार्य करती है। पारिस्थितिक तंत्र की गतिशीलता प्रकृति का नियम है, जिसे बनाए रखने के लिए प्रकृति पूरा प्रयास करती है। इस प्रकृति के चक्र में मनुष्य जब छेड़छाड़ करता है तब जलवायु परिवर्तन और तापमान में वृद्धि होती है। जैव विविधता में कमी से वनस्पति, जल, वायु, पृथ्वी आदि का क्षरण होता है, जिसके फलस्वरूप पारिस्थितिक असंतुलन उत्पन्न होता है। इसका मूल कारण है- जीव और प्रकृति के आपसी संबंधों का बिगड़ना। पारिस्थितिक संतुलन अर्थात् पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्द्धन को बढ़ावा देने के लिए जैनदर्शन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है क्योंकि जैनदर्शन नियतिवाद को मानता है और उसके संरक्षण में सहायक होता है। मनुष्य प्रकृति का नियंता या मालिक नहीं होकर उसी का एक अंग है, एक अंशमात्र है। मनुष्य प्राकृतिक दशाओं पर नियंत्रण नहीं कर सकता। वह केवल उसके साथ चल सकता है। जब भी मनुष्य ने प्रकृति का विरोध किया, दोहन किया, विराधना

की, तब प्राकृतिक आपदाएँ, संकट, महामारी, दुर्भिक्ष, बाढ़, सुनामी, ज्वालामुखी, भूकंप, कोरोना, प्लेग आदि महामारियों को उत्पन्न किया तथा प्रदूषण फैलाया है। डिमोलिन का निश्चयवाद तो यहाँ तक कहता है कि **''मनुष्य का समाज वातावरण द्वारा ही निर्मित होता है।''** भूगोलवेत्ता कुमारी सेंपल ने स्पष्ट किया है कि **''मानव भूपृष्ट की उपज है।''** डार्विन का विकासवाद सिद्धांत भी स्पष्ट करता है कि **''मनुष्य अपने आपको वातावरण के अनुसार विकसित करता है क्योंकि मानव-प्राणी पर वातावरण का नियंत्रण है। मानवीय क्रिया, प्राकृतिक वातावरण का परिणाम है।''**

लेकिन उपभोगवादी संस्कृति के अनुसार संभववादी विचारक नियतिवाद को नहीं मानते। जैसा कि जैनदर्शन में प्रभु ऋषभदेव से महावीर तक तीर्थंकरों ने स्पष्ट किया है। **संभववादी मानव अपनी बुद्धि चातुर्य, कौशल और पुरुषार्थ से प्राकृतिक परिस्थितियों को निरंतर अपने वश में करता है क्योंकि मानव स्वयं क्रियाशील है, स्वयं को अपना निर्माता, कर्ता एवं भोक्ता मानता है।** वह अपनी बुद्धि से प्रकृति को नियंत्रण में करना चाहता है। वह यह मानता है कि प्रकृति संभावनाएँ प्रदान करती है तथा मानव इसके स्वामी के रूप में निर्णायक है। इसी विचारधारा के विचारक, ब्लाश एवं ब्रोंज आदि ने स्पष्ट किया कि मनुष्य निष्क्रिय प्राणी नहीं है, वह क्रियाशील है तथा जगह-जगह परिवर्तन लाता है। फेवर ने लिखा है, **प्रत्येक जगह संभावनाएँ हैं।** इन संभावनाओं के उपभोग का मनुष्य निर्णायक है, अत: स्वामी भी।

संभववादी विचारक नियतिवाद पर भारी पड़ने से पारिस्थितिक असंतुलन उत्पन्न हुआ, जो संपूर्ण जीव जगत एवं प्राणिमात्र के लिए घातक सिद्ध हो रहा है और आज संपूर्ण विश्व पारस्थितिक असंतुलन, पर्यावरण समस्या से जूझ रहा है। अत: आज भी जैनदर्शन पर्यावरण सुरक्षा के लिए कारगर एवं प्रासंगिक है। क्योंकि जैनधर्म समस्त जीवों के अस्तित्व एवं विकास में आस्था रखता है।

पर्यावरण संरक्षण

पर्यावरण शब्द वातावरण एवं प्रकृति के संतुलन का पर्याय है। सूक्ष्मता से इसे दो प्रकार से विभाजित किया जाता है– **भौतिक पर्यावरण** व **आध्यात्मिक पर्यावरण**। जीव मात्र की दैहिक आवश्यकताएँ भूमि, जल, वायु, वनस्पति आदि से पूरी होती हैं, जबकि आध्यात्मिक पर्यावरण से आत्मा संतुष्ट होती है। आत्म-संतुष्टि से न केवल आध्यात्मिक, अपितु भौतिक पर्यावरण भी शुद्ध होता है। जीव सृष्टि एवं पर्यावरण का परस्पर संबंध ही पर्यावरण है। प्राणी अथवा प्रकृति के बीच संतुलित वातावरण बनाए रखना ही पर्यावरण संरक्षण है। जैनदर्शन में पर्यावरण संरक्षण एवं अक्षुण्णता पर केवल अनुचिंतन ही नहीं किया गया, अपितु इसे मानवीय व्यावहारिक जीवन में मूर्त रूप देकर इस दिशा में अभूतपूर्व सार्थक प्रयास किया गया है।

पर्यावरण सुरक्षा के लिए जैनधर्म के सिद्धांत

अहिंसा एवं अपरिग्रह का सिद्धांत जैनधर्म में पर्यावरण संरक्षण हेतु मूलमंत्र की भाँति कार्य करते हैं। पर्यावरण संरक्षण हेतु प्राकृतिक संरक्षण भौतिक दृष्टि है, किंतु समस्त आदतों पर नियंत्रण आध्यात्मिक दृष्टि है। आध्यात्मिक दृष्टि के अनुसार अनंत इच्छाएँ पर्यावरण के लिए विनाशकारी है, किंतु संयम पर्यावरण को संरक्षण प्रदान करता है। जैनधर्म की अहिंसा एवं अपरिग्रह में पर्यावरण संरक्षण की मौलिक शक्तियाँ निम्न प्रकार से अंतर्निहित हैं –

अहिंसा का सिद्धांत

अहिंसा श्रेष्ठ जीवन की आधारशिला है। समस्त प्राणियों को चेतना के प्रति आदर और आत्मतुल्य समझने की भावना को विकसित करना है। जैनधर्म के अनुसार प्रमत्तयोग से होने वाला प्राणवध ही केवल हिंसा नहीं वरन् क्रोधादि कषायों के योगों से प्राणियों के द्रव्य और भाव प्राणों का आरोपण करना भी हिंसा है।

1. आत्मतुला और पर्यावरण

दशवैकालिक सूत्र अध्ययन 9 स्पष्ट करता है कि जैसा मैं हूँ, वैसे ही सब जीव हैं। जैसे मुझे दुख प्रिय नहीं है वैसे ही सब जीवों को अनिष्ट है।

काँटा चुभने पर जैसे मुझे कष्ट होता है वैसे ही सभी जीवों को होता है। इस प्रकार संयमी पुरुष आत्मतुला के अनुसार किसी भी जीव की विराधना नहीं करता है। इस प्रकार जैन साहित्य **'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय'** तक ही सीमित नहीं है, बल्कि **'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय'** से बढ़कर **'सर्वजीव हिताय, सर्वजीव सुखाय'** तक व्याप्त है। आदि ऋषभदेव पर्यावरण के प्रथम संवाहक थे। उन्होंने असि, मसि, कृषि, वाणिज्य, कला आदि के सिद्धांतों को विकसित कर आचरित किया। पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, वनस्पति में भी जीवों की अवधारणा दी और पर्यावरण की परिधि को असीमित कर दिया। जैनदर्शन के अनुसार संपूर्ण पर्यावरण में अनंत जीव हैं। अत: किसी भी रूप में उनकी हिंसा पर्यावरण के प्रदूषण को उत्पन्न करती है। इसलिए प्रभु महावीर ने **'जीओ और जीने दो'** का सिद्धांत दिया।

आचारांग सूत्र का प्रथम अध्याय स्पष्ट करता है जो स्वयं के प्रिय-अप्रिय के संवेदन को जान लेता है यह सब प्राणियों के प्रिय-अप्रिय संवेदन को जान लेता है।

इस प्रकार आत्मतुला के अनुसार वह स्वयं के सुख एवं स्वार्थ के लिए दूसरे जीवों को कष्ट नहीं पहुँचाता, शोषण नहीं करता। इस भावना से व्यक्ति पर्यावरण को हानि नहीं पहुँचाता।

2. सर्वाधिकार रक्षण प्रवृत्ति

जैनदर्शन के आचारांग सूत्र में स्पष्ट किया गया है कि प्रत्येक जीव के जीने के मौलिक अधिकार का रक्षण करना अहिंसा की प्रतिष्ठा है, जो पर्यावरण रक्षण की आधारशिला है।

क्योंकि दशवैकालिक सूत्र अध्ययन 6 स्पष्ट करता है कि सभी जीव जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। अपने इच्छित सुख के विपरीत अन्य जीव को दुख देना उसके जीने के मौलिक अधिकार का हनन करना है। 'एगे आया' की अनेकांत दृष्टि से सभी प्राणी समान हैं।

इस प्रकार जैनदर्शन के यह तथ्य व्यक्त है कि व्यक्ति प्राणियों के प्रति इतनी उत्कृष्ट भावना रखता है तो पर्यावरण कभी प्रदूषित नहीं हो सकता। ऐसे वात्सल्य एवं मैत्री के भाव, प्राणिमात्र के प्रति स्नेहभाव वीतरागता के समीप होने के समान है। क्रोध आदि कषाय, राग-द्वेष, मात्सर्य आदि दुष्ट प्रवृत्तियों का निग्रह करके दया, स्नेह, प्रमोद, सौहार्द्र आदि गुणों के विकास में पर्यावरण की सुरक्षा होती है। निग्रह भाव ही पर्यावरण है, क्योंकि निग्रह, निरोध, निवृत्ति, विरति, विजय आदि पर्यावरण के ही पर्याय हैं।

3. सह-अस्तित्व की भावना

सह-अस्तित्व की भावना का तात्पर्य है प्राणियों की सत्ता को स्वीकार करके उनके विकास में सहयोग करना। जब व्यक्ति दूसरों के अस्तित्व को नकारकर अपने अहम को पोषित करता है तब ही हिंसा-संघर्ष की उत्पत्ति होती है, जिससे पारिस्थितिक असंतुलन पैदा होता है तथा पर्यावरण दूषित होता है।

दशवैकालिक सूत्र अध्ययन 4 के अनुसार 'अणेग जीवा पुढो सत्ता' प्रत्येक प्राणी की स्वयं की सत्ता होती है। सत्ता के पृथक्-पृथक् होने से सभी प्राणियों की विचारधारा भी अलग-अलग होती है।

सह-अस्तित्व की भावना की यही विशेषता है कि यह विरोधी विचारधाराओं का भी सम्मान करें। सभी अपनी विचारधारा को एक-दूसरे पर थोंपे नहीं, बल्कि अपनी-अपनी सीमा में रहें, ताकि पर्यावरण संतुलित रह सके।

4. षट्काय निकाय और पर्यावरण

पर्यावरण का षट्काय जीवों से घनिष्ठ संबंध है। पर्यावरण का क्षेत्र व्यापक और विस्तृत है। जीव समूह का सूक्ष्म पारिस्थितिक तंत्र से लेकर विशाल पारिस्थितिक तंत्र तक क्षेत्र कल्पित है। हमारे चारों तरफ विद्यमान जैविक-अजैविक तत्व मानव जीवन को प्रभावित करते हैं। वे सभी तत्व पर्यावरण के अंतर्गत हैं। पृथ्वी, जल, वायु, नदी, समुद्र, पर्वत, जीव-जंतु, वनस्पति, उद्योग, परिवहन के साधन, धार्मिक कार्य, आर्थिक कार्य, ऐतिहासिक घटना और भौगोलिक संरचनाएँ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से षट्काय निकाय से जुड़े रहते हैं, इसलिए ये सभी पर्यावरण के ही क्षेत्र हैं। जैनदर्शन में स्पष्ट है जहाँ-जहाँ जीव हैं वहाँ-वहाँ पर्यावरण है।

> **'चेतना लक्षणो जीवः'**
> अर्थात् चेतना लक्षण वाला जीव है।

जिसमें परिस्पंदन, श्वासोच्छ्वास और संवेदना रहती है, वह जीव है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति में जीवन की अवधारणा है।

> तत्वार्थ सूत्र में उमास्वाति ने जीव के दो भेद- त्रस व स्थावर बताए हैं, जिनमें पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, वनस्पति कायिक, ये पाँच स्थावर जीव हैं। द्वींद्रिय से पंचेंद्रिय जीवों को त्रस कहते हैं।

जैनधर्म स्थावर जीव, जो कि अव्यक्त चेतना वाले हैं उनमें भी जीव सत्ता को स्वीकार करता है। साथ ही उनकी हिंसा का पूर्ण त्याग करने की प्रेरणा देता है। छेदन, भेदन, दोहन आदि को रोककर पृथ्वीकायिक हिंसा से बचा जा सकता है। भूमि को प्रदूषित होने से बचाया जा सकता है। माइनिंग कार्य, खुदाई कार्य आदि पर संयम के साथ केवल उपयोग हेतु काम लेते हुए दोहन पर प्रतिबंध लगाकर पर्यावरण को सुरक्षित रख सकते हैं।

> पर्यावरण संरक्षण हेतु कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में स्पष्ट किया कि **'मनुष्याणां वृत्तिरर्थः मनुष्यवती भूमिरित्यर्थः'** अर्थात् मनुष्यों की जीविका को अर्थ कहते हैं और मनुष्यों से युक्त भूमि को भी अर्थ कहते हैं।

इसलिए पृथ्वी लालन-पालन का शास्त्र है। इसका उचित उपयोग हो, उपभोग नहीं। यही अर्थशास्त्र है। पृथ्वी में प्रकृति के अथाह भंडार हैं। जैनदर्शन इन्हें जीव मानता है। अतः कभी दोहन की प्रेरणा नहीं करता, यही पर्यावरण संरक्षण है।

इसी प्रकार पानी, अग्नि, वायु जीव तत्व हैं। इनकी हिंसा नहीं करके पर्यावरण को सुरक्षित रख सकते हैं। वनस्पतिकाय को बचाना राष्ट्रीय नारा बन चुका है। **पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ, पर्यावरण बचाओ**। आज जंगल काटे जा रहे हैं, जिससे प्राणवायु में कमी, ग्लोबल वार्मिंग को बढावा मिल रहा है। वनस्पति की विराधना न हो इसलिए वर्षावास में चार माह चातुर्मास के रूप में संत-सतियाँ जी स्थिरवास में रहते हैं। ऐसी धारणा पर्यावरण संरक्षण को बढ़ाती है। जंगलों के नहीं रहने से पशु-पक्षी भी विलुप्त हो रहे हैं, उन्हें रक्षण नहीं मिलता। इस प्रकार षट्काय निकाय की सुरक्षा करना जैनदर्शन सिद्ध करता है और पर्यावरण संवर्द्धन करता है।

5. परस्परोपग्रहो जीवानाम्

> तत्वार्थ सूत्र 5.21 में उमास्वाति ने प्रकृति और पर्यावरण के साथ मानव के परस्परावलंबन को इंगित किया है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि आपस में एक-दूसरे की सहायता करना जीवों का उपकार है।

जगत में जीवन निरपेक्ष नहीं रह सकता। धर्म, अधर्म, आकाश, काल, पुद्गल का उपकार व्यक्ति पर रहता है। यदि कोई जीव हमारा सहायक है तो उसकी सुरक्षा करना हमारा कर्तव्य है। यह उपकार दया का प्रतीक है। इस सूत्र पर यदि चलें तो पारिवारिक या अन्य पर्यावरणीय प्रदूषण जैसा असंतुलन नहीं होगा।

अपरिग्रह का सिद्धांत

अनंत इच्छाएँ परिग्रह को जन्म देती हैं।

> सूत्रकृतांग सूत्र के प्रथम श्रुतस्कंध के प्रथम अध्याय में परिग्रह को हिंसा का हेतु बताया है।

परिग्रह संग्रहवृत्ति तथा मूर्च्छा रूप होता है। परिग्रही मनुष्य प्राणियों का स्वयं हनन करता है, करवाता है तथा हनन करने वाले का अनुमोदन करता है। यह सामाजिक हिंसा को बढ़ाता है। बिना हिंसा के शोषण नहीं होता। मनुष्य संग्रह बुद्धि से संग्रह करता है। संग्रह शोषण को जन्म देता है। अतः इस परिग्रह से मुक्ति जरूरी है। इसे स्वामित्व त्याग भी कह सकते हैं। प्राप्त पर आसक्ति और अप्राप्त के प्रति लालसा नहीं रखने की प्रेरणा प्रभु महावीर ने दी है। इसको चरितार्थ कर प्रकृति के दोहन से बचा जा सकता है।

अन्य सिद्धांत

प्रभु महावीर ने कहा है कि जो सत्य को जानता है वह मौन को जानता है। जो मौन को जानता है वह सत्य को जानता है। यह वाक्य स्पष्टतः पर्यावरण का संदेश देता है। शब्द एवं ध्वनि मनुष्य के लिए कितनी घातक हो सकती है। ध्वनि प्रदूषण गंभीर समस्या बन चुका है। जैनधर्म में श्रमणाचार तथा श्रावकाचार की वैज्ञानिकता को पर्यावरण के संदर्भ में प्रतिष्ठित किया है। श्रमण पाँच महाव्रत पालकर तथा श्रावक बारह व्रत पालकर पर्यावरण संरक्षण में सहायक बन रहे हैं। सप्त कुव्यसन का त्याग मानसिक प्रदूषणों को रोकने का उपाय है, विकारों को नाश करने का उपाय है। जनसंख्या वृद्धि पर्यावरण के लिए अभिशाप बनकर उभर रही है। माल्थस ने कहा कि जब खाद्य सामग्री के उत्पादन के अनुपात में जनसंख्या तीव्र रूप से बढ़ती है तो कुपोषण, भुखमरी, बीमारियाँ बढ़ती हैं, जो मानवीय प्रदूषण हैं। श्रावक की सात्विक दिनचर्या, रात्रिभोजन त्याग, व्रत-नियमों का पालन पर्यावरण में सहायक बनता है। मैत्री-भावना पर्यावरण का संदेश देती है। जैनधर्म का अनेकांतवाद वैचारिक शुद्धता सकारात्मक सोच को जन्म देता है, जिससे मन के विकारों का शमन तथा मन को स्थिरता प्राप्त होती है। इससे मानसिक प्रदूषण से बचा जा सकता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि जैनधर्म पर्यावरण संरक्षण का प्रणेता और विश्व की अमूल्य धरोहर है।

भक्ति रस

भगवान महावीर का संदेश

- उत्सव जैन, नौगामा, बांसवाड़ा

भगवान महावीर स्वामी का संदेश, अब घर-घर पहुँचाना है ।
हिंसा के इस दौर में, यदि सुखी हमें होना है ।।1।।
आतंकवाद, भय, युद्ध, दंगों से बचने के लिए, युवा पीढ़ी को समझाना है ।
नशामुक्ति, व्यसनमुक्ति के लिए, यह संदेश आवश्यक रूप से पहुँचाना है ।।2।।
पूरा विश्व आतंक से डर रहा, उसमें अहिंसा का वातावरण हमें बनाना है ।
नई पीढ़ी में संस्कारों का बीजारोपण, 'जीओ और जीने दो' के संदेश से करना है ।।3।।
'अहिंसा परमो धर्मः' से होगी विश्वशांति, यह सबको समझाना है ।
विश्व पूरा परिवार है, यह अभियान चलाना है ।।4।।
युद्ध, दंगे सब समाप्त हो जाएँ, ऐसा माहौल बनाना है ।
मुक्त हो जाएगा प्रदूषण से वातावरण, हरी-भरी धरती पर शांति को लाना है ।।5।।
पूरे विश्व में अहिंसा के वातावरण के लिए, इस संदेश को घर-घर पहुँचाना है ।
'उत्सव' करता निवेदन, दुर्लभ है मनुष्य जीवन, उसको बचाना है ।।6।।

संस्कार सौरभ

पर्यावरण संरक्षण में धर्म की भूमिका

सुरेश बोरदिया, मुंबई

पर्यावरण शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है – परि+आवरण। परि अर्थात् चारों तरफ, आवरण अर्थात् छाया हुआ, व्याप्त यानी जो चारों ओर व्याप्त हो। यही परिभाषा है पर्यावरण की। चारों ओर क्या व्याप्त है? चारों ओर व्याप्त है **पृथ्वी**, **जल**, **वायु** और **वनस्पति** आदि। इनके अलावा भी और बहुत कुछ व्याप्त हैं, लेकिन पर्यावरण से सीधा संबंध इन चारों का ही है। शेष सब इनसे ही प्राप्त होता है। अत: पृथ्वी, जल, वायु एवं वनस्पति को ही पर्यावरण का मुख्य घटक माना जाता है।

पर्यावरण का महत्व

पर्यावरण का हमारे लिए बड़ा महत्व है। जीवन के लिए इन चारों का होना आवश्यक एवं अनिवार्यता है। इनके बिना जीवन की कल्पना तक नहीं की जा सकती। रहने के लिए स्थान, भोजन, जल एवं श्वास के लिए ऑक्सीजन आदि इन्हीं चार घटकों पर निर्भर हैं। अत: यह कह सकते हैं कि पर्यावरण के बिना जीवन ही संभव नहीं।

बिगड़ता पर्यावरण

पर्यावरण एक प्राकृतिक देन है, जो हमें सहज ही मिला है। लेकिन सहज में प्राप्त ऐसी प्राकृतिक अनुपम भेंट का मूल्य हम खोते जा रहे हैं। मनुष्य स्वयं अपने ही हाथों से ऐसी देन को विकृत करता जा रहा है। ऐसा विकृत कर रहा है कि आज पर्यावरण नष्ट होने की स्थिति में पहुँच रहा है।

प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग सदुपयोग के रूप में किया जाए न कि दुरुपयोग के रूप में। मुफ्त में मिली चीज की कीमत नहीं जानकर मनुष्य अपने स्वयं के हाथों स्वयं का कितना नुकसान कर रहा है, जो भविष्य के लिए बड़ा घातक हो सकता है। पर्यावरण को क्षति पहुँचाने के लिए और कोई अन्य जीव नहीं, सिर्फ मनुष्य ही जिम्मेदार हैं, क्योंकि मनुष्य ही अपने स्वार्थ एवं लोभ के कारण कुछ भी कर लेता है।

इसी का दुष्परिणाम है कि पर्यावरण बिगड़ता जा रहा है। पर्यावरण के उपरोक्त चारों घटक अपनी क्षमता एवं गुणवत्ता को खोते जा रहे हैं। इनकी उपलब्धता में भारी कमी आ चुकी है। ऐसे दुष्परिणाम के दूरगामी परिणाम को जानकर भी मानव अनजान बना हुआ है।

बढ़ता विकास-पर्यावरण का विनाश

मानव स्वभाव से विकास की तरफ अग्रसर होता है। वर्तमान अवसर्पिणी काल में पहले, दूसरे आरे एवं तीसरे आरे के कुछ कालांश तक विकास की कोई आवश्यकता

नहीं थी। कारण, उस समय तक कल्पवृक्षों से सभी आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती थी, लेकिन कालचक्र या मनुष्यों की लालसाओं के प्रभाव से कल्पवृक्षों से पूर्ति कम होने लगी। तब प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव भगवान ने विकास की शुरुआत की। **असि**, **मसि** एवं **कृषि**, इन तीनों को विकास का आधार बनाया गया। तत्कालीन विकास आवश्यकता की पूर्ति के लिए गया था, न कि लालसाओं की पूर्ति के लिए। लेकिन शनैः-शनैः विकास का स्वरूप बदलता गया और ऐसा विकास हमें विनाश की तरफ धकेलता गया। विकास के दलदल में फँसा मनुष्य धीरे-धीरे उस दलदल में और अधिक फँसता गया और अपने विनाश की आधारशिला रख दी।

असि, मसि और कृषि से शुरू हुआ विकास आज परमाणु बम तक ही नहीं अपितु उससे भी आगे निकल गया। यह तो गनीमत रही कि परमाणु बम निर्मित हुए कई वर्ष बीत गए, लेकिन उसका उपयोग नहीं किया गया। परमाणु बम से कई वर्षों पहले अणु बम बनाया गया और उसका उपयोग भी कर लिया गया। जापान के हिरोशिमा एवं नागासाकी शहर अब तक इसका दुष्प्रभाव भुगत रहे हैं। अणु बम की तबाही वहाँ अब तक अपना प्रभाव दिखा रही है। वर्षों बीत जाने के बाद भी आज तक जो बच्चे जन्म ले रहे हैं, उनमें कई तरह की शारीरिक विकृतियाँ जन्मजात पाई जा रही हैं।

यह कैसा विकास? विकास या विनाश? यदि विकास कहा जाए तो ऐसा विकास किस काम का जो जीवन का ही नाश कर दे और यदि विनाश कहा जाए तो अपना ही विनाश अपने स्वयं के हाथों से क्यों किया जा रहा है? यह तो अणु बम का प्रभाव दिखाई दे रहा है। इससे कई गुना शक्तिशाली और विनाशक परमाणु बम है। विश्लेषकों का कहना है कि यदि परमाणु बम का उपयोग कर दिया गया तो तापमान इतना बढ़ सकता है कि जमीन पर बिछाई हुई रेल की पटरियाँ पिघलकर पानी की तरह बहने लगेंगी।

कल्पना करें कि ऐसी स्थितियाँ बनती हैं तो कितना घातक परिणाम होगा! ऐसे प्रभावित स्थान पर क्या कोई जीव जीवित रह पाएगा? मनुष्य तो क्या, किसी भी जीव का जीवित रह पाना मुश्किल या असंभव हो जाएगा। ऐसा संभावित परिणाम किससे प्राप्त होगा? विकास से। ऐसा विकास ही विनाश का कारण बन सकता है।

पर्यावरण के चारों घटक ऐसे विकास से प्रभावित हुए हैं। मानव विकास के नाम पर पर्यावरण से छेड़छाड़ एवं मनमानी करते रुक नहीं रहा है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं आकाश ऐसे विकास से कैसे प्रभावित हुए हैं और इसके क्या परिणाम आ चुके हैं व क्या परिणाम भविष्य में आने संभावित रहेंगे, इस पर कुछ विस्तार में व्याख्या करना आवश्यक है।

(1) पृथ्वी : सभी त्रस, स्थावर आदि प्राणियों का आधार पृथ्वी ही है। लेकिन ऐसी आधारभूत पृथ्वी को भी मनुष्य अपनी लालसाओं की पूर्ति के लिए क्षत-विक्षत कर रहा है। कहीं खनिज पदार्थों की प्राप्ति के लिए तो कहीं पर्यटन के नाम पर दुर्गम पहाड़ों, पर्वतों तक सड़कें बनाने के लिए सैकड़ों किलोमीटर तक इन पहाड़ों को काट दिया गया। पहाड़ों का सीना चीरकर कई किलोमीटर लंबी सुरंगें भी बनाई गई हैं और इसके लिए जमीन के अंदर शक्तिशाली विस्फोट किए जाते हैं।

ऐसे विकास का परिणाम विनाश के रूप में सामने आया है। कुछ ही वर्षों पूर्व गुजरात के भुज में आए भूकंप, केदारनाथ की त्रासदी जैसे उदाहरण के पश्चात् उत्तराखंड के जोशीमठ में जमीन एवं मकानों में आई दरारें आदि ऐसे ही विनाश के स्पष्ट संकेत हैं।

ऐसी प्राकृतिक त्रासदियाँ कई वर्षों से आती रही हैं, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में इनमें काफी वृद्धि हुई है। जैसे-जैसे विकास के नाम पर पृथ्वी के साथ छेड़छाड़, विस्फोट, खुदाई की जाने लगी, वैसे-वैसे ऐसी घटनाएँ भी बढ़ती रहीं। अतः यह कहा जा सकता है कि ऐसी प्राकृतिक त्रासदियों का जनक तो मनुष्य स्वयं ही है।

(2) जल : पर्यावरण का दूसरा घटक है जल। विश्व के मानचित्र पर देखा जाए तो लगभग एक-तिहाई से भी कम जमीन है एवं दो-तिहाई से अधिक जल है। लेकिन इस जल का मात्र 2 प्रतिशत जल ही मानवोपयोगी है। हालाँकि जैन धर्म और विज्ञान की मान्यता में काफी अंतर है। जैन धर्म के अनुसार मध्यलोक का सबसे छोटा द्वीप जंबूद्वीप है। इसके आगे लवण समुद्र, फिर आगे क्रम से एक द्वीप–एक समुद्र, आगे से आगे एक-दूसरे से दोगुने विस्तार वाले हैं। ऐसे असंख्यात द्वीप एवं असंख्यात समुद्र हैं, लेकिन आधुनिक विज्ञान अभी तक सात महाद्वीप एवं सात महासागर को ही सिद्ध कर पाया है। विज्ञान के अनुसार ही हम इस विषय पर व्याख्या करें तो जितना मानवोपयोगी जल उपलब्ध है, वह भी कम नहीं है। जल के दुरुपयोग एवं दोहन ने आज संपूर्ण विश्व में जल संकट जैसी स्थितियाँ पैदा कर दी हैं।

विश्व में कई देश आपस में जल के लिए परस्पर लड़ रहे हैं तो देश में कई राज्य भी इसी तरह लड़ रहे हैं। कुछ वर्षों पूर्व जल की न तो कमी थी और न ही किसी के बीच कोई लड़ाई। लेकिन आज की परिस्थितियाँ इतनी चिंताजनक हो चुकी है कि एक विचारक ने तो ऐसा भी कह दिया था कि तीसरा विश्वयुद्ध जल के कारण लड़ा जाएगा।

विकास के नाम पर जल का अंधाधुंध दुरुपयोग तो आम बात है। विकास के लिए उद्योगों को बढ़ावा दिया जाने लगा। उद्योगों के संचालन के लिए आवश्यक बिजली जल से ही उत्पन्न की जाती है एवं औद्योगिक उत्पादन के लिए भी जल की भारी बर्बादी की जाती है। इसका सबसे बड़ा दुष्प्रभाव है कि कृषि के लिए जल की कमी होने लगी है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश, जहाँ की अर्थव्यवस्था ही कृषि पर आधारित है, में कृषि के लिए जल उपलब्ध नहीं होना पर्यावरण की बिगड़ती व्यवस्था का स्पष्ट सबूत है। अन्न के उत्पादन में निरंतर कमी आ रही है। जिस देश में भगवान ऋषभदेव ने कृषि से अन्न उत्पादन सिखाया, उसी भारत देश में अन्न की कमी! आज वही देश अन्न की कमी से जूझ रहा है। अन्न की कमी को दूर करने के लिए कई कृत्रिम उपायों का सहारा लिया जा रहा है। जैसे प्राकृतिक बीज की जगह वैज्ञानिक तरीकों से उन्नत किए गए बीज का उपयोग, अंग्रेजी खाद का उपयोग और ऐसे उपायों से उत्पन्न अन्न खाने से कई तरह की नई-नई प्राणघातक बीमारियों का जाल फैलता जा रहा है। अंग्रेजी खाद जो अपने आपमें जहर है, उससे उत्पन्न अनाज में जहर का असर क्यों नहीं होगा? इतना सब करके भी अन्न की पूर्ति नहीं होने से विदेशों से अन्न का आयात भी किया जाता है। वातावरण भिन्न-भिन्न होने से अन्य देशों में उत्पन्न अनाज हमारे देश के उपभोक्ताओं के लिए अनुकूल नहीं है, क्योंकि वह अनाज हमारे यहाँ के वातावरण से मेल नहीं खाता।

अन्न की कमी का एक और दुष्प्रभाव जो स्पष्ट दिखाई दे रहा है, वह है मांसाहार का सेवन। आज के समय मांसाहार काफी बढ़ चुका है। खाद्यान्न की कमी से बचने के लिए सरकारों ने मांसाहार का खूब प्रचार-प्रसार किया। आज देश में 22 से 28 प्रतिशत लोग मांसाहारी हैं। कुछ राज्यों में तो यह आँकड़ा 95 प्रतिशत से भी अधिक है। ऋषभदेव भगवान से लेकर भगवान महावीर जैसे तीर्थंकर जिस देश में हुए हैं, उसी देश में मांसाहार इतना फल-फूल चुका है कि मांस की आपूर्ति के लिए कृषि कार्य योग्य एवं दूधारू जानवरों को भी असमय मार दिया जाता है। अब इसका भी दुष्परिणाम दूध की कमी के रूप में हमारे सामने है। दूध की कमी को पूरा करने के लिए नकली सिंथेटिक दूध की आपूर्ति की जा रही है, जिससे कुपोषण एवं बीमारियाँ बढ़ रही हैं।

जल जैसे प्राकृतिक संसाधन के दुरुपयोग से आज पेयजल का भी अभाव है। पिछले कई वर्षों से भीलवाड़ा शहर में पेयजल की आपूर्ति रेलवे द्वारा सैकड़ों किलोमीटर दूर से लाकर की जाती है। जल के दोहन से भूजल स्तर काफी गिर चुका है। आज देश के हजारों, लाखों कुएँ

70-80 फीट की गहराई पर भी सूखे पड़े हैं। मनुष्य यहाँ आकर भी रुका नहीं है। उसने बोरवेल का आविष्कार करके भूजल स्तर को 200-300 फीट तक गिरा दिया है। एक प्राकृतिक संसाधन, पर्यावरण के एक मुख्य अंग जल के दुरुपयोग से स्थितियाँ कितनी खतरनाक बन गई हैं, यह बड़ा ही चिंतनीय विषय है।

(3) हवा : पर्यावरण का यह घटक सर्वत्र व्याप्त है। जीवन के लिए आहार-पानी से भी अधिक आवश्यक हवा है। जीवन के लिए ऑक्सीजन देने वाली हवा आज स्वयं अपनी बदहाली की अवस्था में पहुँच चुकी है। बढ़ता औद्योगिकरण, बढ़ता यातायात, बढ़ता शहरीकरण पर्यावरण के इस घटक को निरंतर प्रदूषित किए जा रहे हैं। कारखानों एवं वाहनों से निकलता धुआँ जहर बनकर हवा में घुलता जा रहा है। फलस्वरूप अस्थमा एवं फेंफड़ों के कई तरह के रोग पनपते जा रहे हैं। शहरीकरण भी हवा को जहरीली बनाने में सहायक साबित हुआ है। गाँवों में सुविधाओं के अभाव से लोग पलायन करके शहरों में बसते जा रहे हैं। इस कारण से शहरों का विस्तार नित नई बनती कॉलोनियों के रूप में देखा जा रहा है। बढ़ती भीड़-भाड़ से हवा की शुद्धता प्रभावित हुई है।

शहरीकरण से जन संतुलन भी प्रभावित हुआ है। शहरों में जहाँ अत्यधिक भीड़-भाड़ है, वहीं गाँवों में वीरानी देखी जा सकती है। पर्यावरण की दृष्टि से देखा जाए तो गाँवों में अभी कुछ हद तक शुद्धता शेष है। इसी वर्ष होली के आस-पास मैं अपने पैतृक गाँव देवरिया में था। वहाँ का A.Q.I. यानी वायु गुणवत्ता क्रमांक 38 से 43 के बीच था, उसी समय मुंबई में यह 150 से भी ऊपर था। दिल्ली में तो कई बार 350 के स्तर से भी ऊपर पहुँच चुका है, जो स्वास्थ्य के लिए बड़ा ही घातक है।

(4) वनस्पति : उदरपूर्ति के लिए प्रत्येक जीव वनस्पति पर निर्भर रहता है। वनस्पति चाहे घास-दूब के रूप में हो या विशाल वृक्ष के रूप में अथवा खेत के रूप में हो या जंगल के रूप में, वनस्पति पर्यावरण का पर्याय बना हुआ है। लेकिन मनुष्य ने इसे भी नहीं छोड़ा है। मामूली से लाभ के लिए अमूल्य वन-संपदा को नष्ट करता जा रहा है। जिसका प्रभाव पर्यावरण पर पड़ रहा है। प्रतिदिन हजारों वृक्षों का संहार पृथ्वी को वनहीन किए जा रहा है। कहीं सड़कें तो कहीं रेल मार्ग, कहीं कारखाने तो कहीं गगनचुंबी इमारतें बनाने के नाम पर पृथ्वी को इस तरह बंजर किया जा रहा है। इसका असर सिर्फ मनुष्य ही नहीं, जंगली जानवरों एवं पालतू पशुओं पर भी पड़ा है। जंगलों के सिमटने से जंगली जानवर गाँवों एवं शहरों की तरफ भोजन की तलाश में आने लगे हैं, जिसे पालतू जानवर एवं मनुष्य, दोनों के लिए खतरा पैदा हो गया है।

वृक्षों की कमी के कारण सूर्य की किरणें सीधे पृथ्वी पर गिरने से पृथ्वी की सतह का तापमान बढ़ रहा है, जिसका असर मौसम एवं ऋतुओं पर पड़ा है। असमय वर्षा एवं वर्षा ऋतु में सूखा होना ऋतुचक्र के परिवर्तन के रूप में देखा जा सकता है। बढ़ते तापमान से हिमालय के ग्लेशियर तक पिघलने लगे हैं, जिससे समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा है। इसका संभावित खतरा समुद्र के तटवर्ती शहरों का जलमग्न होने के रूप में मँडरा रहा है।

इस तरह स्पष्ट है कि पर्यावरण के चारों घटकों का मनुष्य ने दुरुपयोग करके किस हालत में पहुँचा दिया है। पर्यावरण की ऐसी दुर्दशा जीवमात्र के लिए खतरनाक है। ऐसे पर्यावरण का संरक्षण किया जाना नितांत आवश्यक है।

पर्यावरण का संरक्षण

भविष्य के जीवन के लिए पर्यावरण का संरक्षण आवश्यक हो गया है। संरक्षण के लिए कई तरह के उपायों का सहारा लेना होगा। इसके लिए हमें जागरूक होना पड़ेगा। लेकिन मात्र जागरूक हो जाने से ही पर्यावरण सुरक्षित रह पाता तो यह उपाय पूर्व में ही किया जा सकता था। अब तो कई तरह से उपाय करके ही इसे संरक्षित किया जा सकता है। पर्यावरण के संरक्षण में एक महत्वपूर्ण उपाय है **धर्म**। धर्म के आधार पर पर्यावरण कैसे सुरक्षित रखा जा सकता है, इस पर विवेचन करते हैं।

पर्यावरण और धर्म

पर्यावरण एवं धर्म, एक-दूसरे से अच्छी तरह से जुड़े हुए हैं। भारत देश विभिन्न धर्मों का संगम है। यहाँ कई तरह के धर्म, धार्मिक मान्यताएँ प्रभावी हैं। पर्यावरण के प्रति जागरूकता धर्म के माध्यम से लाई जा सकती है। सबसे प्राचीन धर्म जैन धर्म एवं सनातन संस्कृति ही पर्यावरण को संरक्षित करने में पूर्णतया सक्षम है।

जैन धर्म में पर्यावरण

पर्यावरण के उपरोक्त वर्णित चारों घटक जैन धर्म में जीव माने गए हैं। पृथ्वी, जल, वायु, वनस्पति, इन चारों में स्थावर जीव हैं। अनंत उपकारी तीर्थंकर भगवंतों ने जीव मात्र पर करुणा का संदेश हमें दिया है। अगर हम भगवान के ऐसे उपदेशों का सही तरीके से पालन करें, इन जीवों के प्रति करुणा, यतना करें तो पर्यावरण स्वतः संरक्षित हो जाएगा। आवश्यकता से अधिक उपयोग न करके सीमित ही उपयोग करें तो पर्यावरण भी संरक्षित रह जाएगा एवं हम भी व्यर्थ एवं अनावश्यक कर्मबंधन से बच सकते हैं।

सनातन धर्म और पर्यावरण

सनातन धर्म भी पर्यावरण का हितैषी रहा है। पृथ्वी, जल, वायु एवं वनस्पति, इन चारों के प्रति जैन धर्म एवं सनातन धर्म की मान्यताओं में कुछ अंतर है, लेकिन दोनों में इन्हें सुरक्षित रखे जाने की ही मान्यता है। सनातन धर्म में पृथ्वी को माता, जल को देवता, वायु को पवन देव एवं वनस्पति को वटवृक्ष, तुलसी, पीपल, अशोक वृक्ष आदि के रूप में पूजा जाता है। यहाँ जैन एवं सनातन, दोनों संस्कृति में समानता भी देखी जा सकती है। इन चारों को सनातन धर्म में देवता मानकर पूजा जाता है, यानी जीव ही माना जा रहा है तो जैन धर्म भी जीव ही मानता है। जैन धर्म में **'अप्पा सो परमप्पा'** आत्मा ही परमात्मा है। कहना तो उचित है कि धार्मिक मान्यता के आधार से ही हम पर्यावरण को संरक्षित रख सकते हैं। अतः हमारे आने वाले कल के लिए, जीव को सुरक्षित रखने के लिए, पर्यावरण की रक्षा के लिए जिन वचनों का सहारा लेकर जीवन जीने का संकल्प करें।

पर्यावरण का संरक्षण : हमारा संकल्प

अंत में यही कहना चाहता हूँ कि जिस पर्यावरण के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते, ऐसे पर्यावरण को हम क्षति नहीं पहुँचाकर अपनी आवश्यकतानुसार सीमित मात्रा में प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करें। स्थावरकाय के जीवों की व्यर्थ हिंसा न करके उनकी रक्षा का विवेक रखें तो पर्यावरण सुरक्षित, संरक्षित रहेगा एवं इसी से हमारा जीवन भी सहज होगा।

आत्मा और परमात्मा के बीच जो दूरी है उसका हेतु अथवा कारण कर्म विपाक है और कर्म विपाक से जो कर्म बंधन के हेतु बनते हैं उन्हें बंध का और दूरी का कारण बताया गया है। कर्म बंध, क्रिया से होता है। कहा भी गया है - 'या या क्रिया सा सा फलवती।' यह क्रिया मन से, वचन से और काया से होती है। चलना, फिरना, बोलना, बैठना, ये सब क्रियाएँ हैं। जो भी क्रिया होगी उसमें शुभाशुभ आश्रव का संयोग होगा। शुभाशुभ आश्रव से जो आदान होगा वह आत्मा से संयुक्त होगा। कार्मण वर्गणा रूप पुद्‌गलों का आत्मा से संयुक्त होना ही कर्म की संज्ञा प्राप्त करता है। अबाधाकाल बीतने पर ये कर्म उदय में आते हैं। विपाक (फल), फिर क्रियाएँ और बंध, यह क्रम अनवरत चला आ रहा है। एक समय भी ऐसा नहीं होता, जिसमें मन, वचन या काया की क्रिया नहीं हो रही हो। व्यक्ति विचार करता है, क्रिया रुकती नहीं, कर्म बंध चलता रहता है तो फिर मुक्ति का उपाय ही नहीं है। गुरु से ऐसा उपदेश सुनकर एक शिष्य ने जिज्ञासा प्रकट कर दी - ''भंते! क्या चलना-फिरना बंद कर दें, एक जगह बैठ जाएँ?'' भगवान ने फरमाया - ''अजयं चरमाणो य, पाण भूयाइं हिंसइ। बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं।।'' (-दशवैकालिक, 4/1) अर्थात् अयतना से चलता हुआ प्राण-भूतादि की हिंसा करता है, वह पाप कर्मों का बंध करता है, जिसका कटुक विपाक होता है।

''भगवन्! कहं चरे... फिर कैसे चलें?'' गुरु ने उत्तर दिया - ''जयं चरे'' अर्थात् यतनापूर्वक चलो।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

संस्कार सौरभ

चातुर्मास अध्यात्म का महापर्व

- बनेचंद बोथरा 'बन्नू', शहादा

ज्ञान, आराधना, तप, संयम की आत्मशक्तियों को उजागर करने के लिए वर्षा ऋतु में आने वाला चातुर्मास मन को पावन करने वाला सबसे उत्तम समय है। सबसे सुहाना मन भावन मौसम जब आकाश से बरसती रिमझिम फुहारें मन को सुकुन देती हुईं जहाँ पूरे तन-बदन को शीतलता प्रदान करती हैं, तो चातुर्मास में संत-संतियाँ जी की अमृतवाणी आत्मा को स्वच्छ करती हुई उसे पावन करती है और आठ माह से आत्मा की नलियों में अटके हुए कषाय रूपी कचरे को बाहर निकालती है। अध्यात्म के ब्रश से आत्मा को चमकाने का एक सुनहरा अवसर होता है चातुर्मास। बड़े सौभाग्य से मिलने वाले इन पावन क्षणों का हमें ज्यादा से ज्यादा सदुपयोग करना चाहिए।

शरीर को सजाने का तो हमारे पास हर वक्त समय रहता है, पर आत्मा को सजाने का शुभ अवसर बहुत भाग्य से मिलता है। शरीर को तो हम स्वयं सजा सकते हैं, लेकिन आत्मा को सजाना हर किसी के वश की बात नहीं है। आत्मा को सजाने के लिए हमें संत-सतियाँ जी के मार्गदर्शन की जरूरत होती है, जो उनकी अमृतवाणी के माध्यम से हमें प्राप्त होता है। आत्मोत्थान के लिए मिले इन सुनहरे क्षणों का हमें ज्यादा से ज्यादा लाभ उठाना चाहिए।

हमें इस बात का भी चिंतन करना चाहिए कि गुरु भगवंतों के आदेश से संत-सतियाँ जी अपने निर्धारित (घोषित) चातुर्मास स्थल पर पहुँचते हैं, लेकिन वहाँ तक पहुँचने के लिए कितने परीषहों का सामना करना पड़ता है। लंबे विहार में अनुकूलता-प्रतिकूलता की परवाह न करते हुए कई जगह गोचरी-पानी की भी व्यवस्था नहीं हो पाती। चाहे तेज गर्मी हो, चाहे कँपकँपाती ठंड, आँधी हो या तूफान, सबका सामना करते हुए हम सबके आत्मोत्थान की ज्योत जगाने, सद्गुणों की सौरभ फैलाने, हम सबका भविष्य उज्ज्वल बनाने के लिए चातुर्मास स्थल तक पहुँचते हैं। फिर हम सबका भी ये पावन कर्तव्य बन जाता है कि हम ज्यादा से ज्यादा धर्म-ध्यान करें, तप-संयम के मार्ग की ओर बढ़ें। साथ ही संत-सतियाँ जी की अम्मा-पिया स्वरूप हम अपनी जिम्मेदारियों का वहन करें। प्रार्थना, प्रवचन, शिविर, ज्ञानचर्चा इत्यादि सभी कार्यक्रमों में हम ज्यादा से ज्यादा भाग लेने का प्रयास करें। ज्ञानचर्चा में हमें धर्म-ध्यान और ज्ञान सीखने की ही चर्चा करनी चाहिए। परिवार या संघ में कहीं भी विघटन लगे तो संत-सतियाँ जी के माध्यम से हमें जोड़ने का प्रयास करना चाहिए। महापुरुषों ने धर्मदेशना में बार-बार कहा है, जगत में सभी से मैत्री बनाए रखें, किसी से वैर की परंपरा नहीं बढ़ाना ही धर्म है। क्योंकि वैर से वैर बढ़ता है और प्रेम से प्रेम। प्रसिद्ध साहित्यकार कवि अजहर

हाशमी ने तो धर्म की बड़े ही सुंदर ढंग से व्याख्या करते हुए कहा है – **"धर्म कोई पूजा की पोटली नहीं। धर्म किसी मस्जिद की अजान नहीं। धर्म द्वेष का द्वार नहीं, धर्म कटुता की कालिख नहीं। धर्म कोई कलह की जड़ नहीं। धर्म तो गरिमा है जीवन की। धर्म तो कर्म की सुगंध है। धर्म तो एकता का मंत्र है।"** सुई छोटी होती है, पर जोड़ने का काम करती है। तलवार बड़ी होती है, पर काटने का काम करती है। जो जोड़ता है वह धर्म है, जो तोड़ता है वह अधर्म है। धर्म प्रेम की वंदना है। धर्म बंधुत्व की बारहखड़ी है। धर्म सत्कर्म की साधना है। हम सब हिल-मिलकर धर्म की खुशबू फैलाएँ और अपनी आत्मा को सद्विचारों से निर्मल बनाएँ।

जिस प्रकार धरती पर वर्षा के आगमन के पश्चात् हरियाली छाने लगती है और फूल खिलने लगते हैं, उसी प्रकार संत-सतियाँ जी की अमृतवाणी जब हमारे हृदय में बरसने लगती है, हृदय में उतरने लगती है, तब तप-संयम के फूल खिलने लगते हैं, आराधना की हरियाली छाने लगती है, अध्यात्म का आँगन महकने लगता है।

चातुर्मास अगर अध्यात्म का महापर्व है तो धर्म का मेला-सा भर जाता है। तपस्वी आत्माएँ इसका भरपूर लाभ लेकर अपने जीवन को धन्य बनाती हैं। सत्य-संयम, तप-त्याग, आध्यात्मिक चिंतन के महापर्व चातुर्मास को हम सब हिल-मिलकर बड़े ही उल्लास के साथ मनाएँ, संत-सतियाँ जी की अमृतवाणी रूपी प्रभावना लेकर हम अपने जीवन को सद्गुण रूपी वैभव से सजाएँ।

संस्कार सौरभ

संघ सेवा

- शांतिलाल लूनिया, दिल्ली

संघ समर्पणा भजन की मधुर स्वर लहरियों के माध्यम से जब हमारे अंत:करण में संघ की महत्ता का आलोक उतरता है, तब हम अनुभव करते हैं कि संघ ही सर्वोपरि है। यह भाव न केवल श्रद्धा को जन्म देता है, अपितु हमारी आत्मा को भी संघ के नियमों और मर्यादाओं के प्रति अटूट निष्ठा एवं अनुशासन के पथ पर अग्रसर करता है। सच्ची संघ सेवा तभी साकार होती है जब हर संघ सदस्य को अपना परिवार मानते हुए सहयोग और स्नेह की भावना से एक-दूसरे का संबल बनें। यह भावनात्मक एकता ही वह सूत्र है जो संघ को अखंड और अजेय बनाता है। जब हम अपने अहंकार की दीवारों को गिराकर, विनम्रता और प्रेम से संघ के कार्यों में समर्पित होते हैं और दूसरों को प्रोत्साहित करते हैं तो हमारी सेवा केवल कार्य नहीं रह जाती, वह सेवा, साधना और आत्मिक समर्पण बन जाती है।

आइए, हम सभी मिलकर संघ सेवा को केवल दायित्व नहीं, अपना जीवन-धर्म मानें। नियमों के आलोक में, मर्यादाओं की छाया में और एक-दूसरे का हाथ थामे हुए हम संघ की इस दिव्य यात्रा में सहभागी बनें।

संघ सेवा कोई कर्म नहीं,
यह तो आत्मा की पुकार है।
राम गुरु की कृपा में निहित,
जीवन समर्पण का मार्ग है।।

संस्कार सौरभ

भावी पीढ़ी के निर्माण में धर्म का योगदान

- ज्ञानचंद राँका, जयपुर

धर्म, भावी पीढ़ी के निर्माण में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि यह जीवन के मूल्यों, नैतिकता और आदर्शों की नींव रखता है। आज की परिस्थितियों में समाज में भौतिकता, तनाव और प्रतिस्पर्धा बढ़ गई है, जिससे युवा पीढ़ी के सामने कई चुनौतियाँ हैं। ऐसे समय में धर्म और अध्यात्म उन्हें आंतरिक शक्ति, स्थिरता और सही दिशा देने का माध्यम बन सकते हैं। महापुरुषों के वचन हमें बताते हैं कि धर्म का असली अर्थ जोड़ना है, तोड़ना नहीं। जैसे महाभारत में कहा गया है, **'धर्म करते हुए मर जाना अच्छा है, पर पाप करते हुए विजय प्राप्त करना अच्छा नहीं।'** गीता में भी यही संदेश है, **'कर्म करो, फल की चिंता मत करो।'** ऋग्वेद में मातृभाषा, मातृसंस्कृति और मातृभूमि को सर्वोच्च बताया गया है, जिससे भावी पीढ़ी में संस्कार और देशप्रेम की भावना आती है।

जब धर्म को सत्य, करुणा, सहिष्णुता और सेवावृत्त के रूप में सही अर्थों में समझाया जाए तो यह नई पीढ़ी को प्रेरित कर सकता है। अध्यात्म के लचीलेपन और व्यक्तिगत अनुभव का महत्व आज के युवाओं को आकर्षित कर रहा है, क्योंकि वे सिर्फ बाहरी आडंबर नहीं, बल्कि आंतरिक संतुलन चाहते हैं।

आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. युवाओं के जीवन निर्माण में संरक्षकों के कर्तव्यों के बारे में फरमाते हैं, **''सच्ची शिक्षा है बालक की दबी हुई शक्तियों को प्रकाश में लाना, सोई हुई शक्तियों को जगाना, बालक के मस्तिष्क को विकसित करना, जिससे वह स्वयं विचार की क्षमता प्राप्त कर सके। मगर इस तथ्य को कम शिक्षक ही समझते हैं। इस पर भी एक बड़ी कठिनाई यह है कि संस्कार-संशोधन की ओर आजकल बहुत ही कम ध्यान दिया जाता है। आज की शिक्षा का लक्ष्य विद्वान बना देना मात्र है, चारित्रशीलता से उसे कोई सरोकार नहीं। ज्ञान में ही जीवन की कृतार्थता समझी जाती है। मगर जीवन के वास्तविक उत्कर्ष के लिए उच्च व उज्ज्वल चरित्र की आवश्यकता है। चरित्र के अभाव में जीवन की संस्कृति अधूरी ही नहीं, शून्य रूप है। यही कारण है कि इस शिक्षा के फलस्वरूप शिक्षित लोग धर्म से दूर जा रहे हैं।''**

धर्म और महापुरुषों के वचन भावी पीढ़ी के चरित्र निर्माण, समाज में सद्भाव और राष्ट्र की प्रगति के लिए मार्गदर्शक हैं। जरूरत है इन्हें सही तरीके से समझने और अपनाने की, ताकि आने वाली पीढ़ी न केवल भौतिक रूप से, बल्कि मानसिक और आत्मिक रूप से भी समृद्ध हो सके।

सकारात्मक विचारों की आवश्यकता क्यों?

- कु. तृप्ति सांखला, जगदलपुर

सकारात्मक और नकारात्मक के बीच सिर्फ एक ही अक्षर का अंतर है। फिर भी इन दोनों शब्दों के अर्थ में जमीन-आसमान का फर्क है। जैसे हर सिक्के के दो पहलू होते हैं, ठीक उसी तरह हर एक परिस्थिति को दो तरीकों से देखा जा सकता है। कोई सकारात्मक तरीके से देखता है और कोई नकारात्मक तरीके से। मगर यह बिलकुल सच है कि जो व्यक्ति जीवन की हर परिस्थिति को सकारात्मक नजरों से देखता है वह व्यक्ति जीवन में कभी दुखी नहीं हो सकता और जो व्यक्ति जीवन की हर परिस्थिति को नकारात्मक तरीके से देखता है वह व्यक्ति जीवन में कभी सुखी नहीं रह सकता। इसे हम एक छोटे से उदाहरण से समझ सकते हैं।

मान लीजिए दो भाई हैं – आकाश और विकास। दोनों को बहुत प्यास लग रही है। उनके सामने टेबल के ऊपर आधा जग पानी रखा हुआ है। उसे देखकर आकाश ने सोचा कि काश! यह जग पूरा भरा होता तो मेरी पूरी प्यास बुझ जाती, मगर यह तो आधा खाली है। अब इतने से पानी में मेरी प्यास क्या ही बुझ पाएगी! यह सोचता हुआ आकाश घंटों तक प्यासा ही बैठा रहा, जिससे हर पल उसकी प्यास और बढ़ती गई। मगर विकास सकारात्मक विचारों वाला था। उसने सोचा कि यह जग आधा तो भरा हुआ है। क्यों न इतना ही पानी पीकर अभी के लिए अपनी प्यास शांत कर लूँ! ठीक ऐसी ही परिस्थितियाँ हमारे जीवन में भी कई बार आती हैं।

मान लीजिए कि दो भाई सड़क पर चल रहे हैं। अचानक से एक गाड़ी ने उनको टक्कर मार दी, जिसकी वजह से उनको काफी चोट लगी। उन दोनों भाइयों में से एक नकारात्मक विचारों वाला था उसने उस गाड़ी वाले के ऊपर बहुत गुस्सा किया और सोचा कि आज का तो दिन ही खराब है। बेकार में इतनी चोट लग गई और इतना दर्द हो रहा है। वहीं दूसरा सकारात्मक विचारों वाला था। उसने तुरंत भगवान का धन्यवाद किया और खुश हो गया कि आज वह एक बड़ी अनहोनी का शिकार होने से बच गया।

सकारात्मक विचारों का परिणाम

घटना वही है, जगह भी वही है, फर्क है तो बस उन दोनों भाइयों के विचारों का। इस दृष्टांत से हम यह समझ सकते हैं कि हमारे विचारों का हमारे जीवन में कितना बड़ा प्रभाव पड़ता है। सिर्फ एक ही घटना से एक व्यक्ति ने अपना दिन खराब समझ लिया और अपनी किस्मत को कोसने लगा, जबकि दूसरे ने भगवान का धन्यवाद किया और उस समय खुद खुश होकर उस समय को अच्छा समय बना लिया।

अतः हर परिस्थिति को सकारात्मक विचारों से अनुकूल बनाया जा सकता है और सकारात्मक विचार ही जीवन परिवर्तन का सर्वश्रेष्ठ साधन हैं।

संस्कार सौरभ

सफलता या विजय आत्मावलोकन

- सुरभि धीरज मेहता, डूंगला

विषम परिस्थितियों का सामना आप तब ही कर सकते हैं, जब आपका आत्मबल मजबूत हो। केवल आत्मबल ही ऐसी पूँजी है, जिससे आपका आत्मविश्वास बना रहेगा। जहाँ आत्मविश्वास है, वहाँ न कोई जरूरत है, न कोई आवश्यकता। आत्मविश्वास व्यक्ति को सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ने हेतु प्रेरित करता है। जिंदगी आपको परेशान करने का कोई मौका नहीं छोड़ेगी, लेकिन आपको जिंदगी को दिखाना है कि उसकी यह स्ट्रेटेजी (strategy) आप पर काम नहीं करेगी।

यूँ ही नहीं रोशन होते हैं चिराग,
हवाओं से लड़ना पड़ता है।
दरिया पार करने के लिए भी तो,
तूफ़ानों के खिलाफ खड़ा होना पड़ता है।।

सहजतापूर्वक हम सफल हो भी जाएँ तो जीत की खुशी इतनी नहीं होती, जितनी संघर्षों के साथ जीत हासिल करने से होती है।

मंज़िल आसानी से मिल जाए,
क़द्र क्या उसकी होती है?
संघर्षों वाली राह चल पाए,
सफलता वहाँ ना खोती है।

तो क्या सफलता ही एकमात्र लक्ष्य है? क्योंकि –

ना मंज़िलों की चाहत खत्म होगी,
ना पाने की दौड़।
ना मुश्किलें आसान होंगी,
ना ज़िम्मेदारियों का बोझ।।

मनुष्य के रूप में जन्म लेना ही एक सफलता है तो फिर आगे क्या?

मनुष्य कई यहाँ पर, महावीर एक ही होता है।
महावीर-सा बनने में ही, संत भी खुद को खोता है।।

एक जीव के जन्म लेने से पहले ही उसके पास अवसरों-मौकों की बारिश-सी हो जाती है। लेकिन क्या जीव इन अवसरों को समझ पाता है या अपनी बनाई हुई या कमाई हुई समझ के अनुसार ही वह उन अवसरों की यथार्थता का बोध करता है?

आप बाध्य हैं, अपनी ज़िम्मेदारियों और कर्तव्यों के चलते।
आप बाध्य हैं, समाज और लोगों की उम्मीद के चलते।।
आप बाध्य हैं, शासन की व्यवस्थाओं के चलते।
आप बाध्य हैं, स्वयं के बनाए नियमों के चलते।।
सोचा कभी कि स्वयं को कितना कसकर बाँधोगे?
सिर्फ इसी प्रयास में तुम, फिर ज़िंदगी से हारोगे।।

एक जीव अपनी समझ के अनुसार अपने कार्य, अपने कर्म करता रहता है और उसे पता भी नहीं चलता कब इन सब में उसने कैसे-कैसे कर्मों का बंध कर लिया है।

इस क्षणभंगुर संसार में कुछ भी तो स्थायी नहीं, फिर लोग भला सुख में गर्व और दुख में चिंता क्यों करते हैं?

जिंदगी अपनी तरह जीने के गुमान में,
प्राणियों को क्यों आहत करते हैं?
क्यूँ कोई प्रेम, दया, करुणा,
त्याग की भावना नहीं समझता?
क्यूँ कोई धर्म की महत्ता को नहीं समझता?
क्यूँ कोई आत्म-कल्याण के भाव को नहीं समझता?
क्यूँ कोई धार्मिक सद्भावना को नहीं समझता?
क्या अब सत्कर्मों का कोई तोल नहीं?
क्या दान-धर्म का कोई मोल नहीं?
क्या अब हर कोई करता झोल यहीं?
क्या सिद्ध-स्वरूप बनने का अब कोई रोल नहीं?

यह एक विचारणीय विषय है। लेकिन क्या वाकई इस पर विचार किया जाता है? क्या कभी आपने इस विषय पर विचार किया या अब सोचने का मौका मिला है? जिस सोच को सींचकर तुमने हर छोटे-बड़े पहलुओं पर चिंतन किया, उस सोच पर दोबारा विचार करने की जरूरत है।

क्या है कोई जो तुम्हें उन्नत सोच दे सके?
क्या है कोई जो तुम्हें ज्ञान दे सके?
क्या है कोई जो तुम्हें ध्यान दे सके?
क्या है कोई जो तुम्हें इस धरा पर आसमाँ दे सके?
तो आज मैं पूछती हूँ, क्या जरूरी है तुम्हें?
सोच का सागर या सागर-सी सोच?
तो तय करो तुम कि किस ओर देखना चाहोगे,
किस ओर जाना चाहोगे?

सजगता जरूरी है। अगर मौके हैं तो जागरूक होना अनिवार्य है। क्या हम सभी जागरूक हैं? क्या हम सब में इतनी समझ है कि एक शुभ विचार को किस तरह क्रियान्वित किया जाए?

बुद्धि, विवेक, विनय और ज्ञान,
कह गए सारे संत विद्वान।।

आचरण शुद्ध, सोच महान,
यही है जीवन का प्रतिमान।।

एक जीव अंदरूनी तौर पर बहुत मजबूत होता है, बहुत हिम्मत वाला होता है। क्योंकि वह अपने सामर्थ्य पर यकीन रखता है। लेकिन परिस्थितियों के चलते वह विचलित हो ही जाता है। वह राह भटक ही जाता है और उसे आंतरिक भय सताने लगता है।

क्या लगा बैठ सोचने यह मन?
क्या हैं यहीं सिर्फ जन्म-मरण?

भय अविश्वास पैदा करता है और अविश्वास से विश्वास का सफर इतना लंबा हो जाता है कि इसे पार करना बहुत कठिन लगता है। उसी वक्त यदि वह व्यक्ति स्वयं का विश्लेषण कर ले या की हुई गलतियाँ स्वीकार कर सुधार ले और स्वयं को धर्म के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित कर ले, तो आत्म-ज्योत जग जाती है। आत्मा कल्याण के मार्ग पर चलने को आरूढ़ हो जाती है और तब होती है व्यक्ति की विजय।

बहुत हुआ सब, अब सही वक्त है।
तत्पर हो अब, संकल्प सिद्ध कर।।
सफर है मुश्किल, सर्वस्व समर्पित।
धर्म की डोर ही पूर्ण विकसित।।

लेकिन धर्म के मार्ग पर चलना आसान नहीं होता। धर्म की राह में कई चुनौतियाँ, कई परीषह आते हैं और विचलित करने लोग भी आते हैं। जब आपका तरीका सही, निगाह सटीक और सोच स्वच्छ तथा निर्भीक हो, तब कोई आपको धर्मपथ से नहीं भटका सकता। **मैं स्वयं को धर्म की राह पर चलने के लिए तैयार करूँगा, क्योंकि धर्म-रथ जीवन को तृप्त कर आत्मा को सिद्ध स्वरूप बनाता है। धर्म ही शाश्वत है। धर्म ही सत्य है। धर्म ही कल्याणकारी है। धर्म महामंगलकारी है। धर्म की ही विजय है, क्योंकि धर्म ही विजय है।** इस सोच से चलने वाले व्यक्ति को इस विचारधारा से सफलता के साथ विजय की प्राप्ति अवश्य होती है। यह आपको तय करना है कि **आप सफलता प्राप्त करना चाहते हैं या विजयी होना चाहते हैं!**

वर्तमान परिस्थितियाँ और महापुरुषों के वचन

- संदीप गांधी

श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र के दसवें अध्ययन की द्वितीय गाथा में भगवान महावीर ने फरमाया है -

कुसग्गे जह ओस-बिंदुए, थोवं चिट्ठइ लंबमाणए।
एवं मणुयाण जीवियं, समयं गोयम! मा पमायए।।

कुश के अग्र भाग पर लटकती ओस की बूँद के समान है यह मनुष्य जीवन। हे गौतम! समय मात्र का भी प्रमाद मत करो। कुछ देशों में युद्ध के बादल छाए हुए हैं। सीमाओं पर गोलाबारी, विमानों से देश की सीमाओं को लाँघकर बम विस्फोट करने एवं मिसाइलों व बम से दुश्मन के शहरों को नष्ट करने की तनातनी में कब कोई मिसाइल आमजन पर गिर जाए, नहीं पता। ऐसी परिस्थिति में ही समझ में आती है जिनवाणी और उसकी महत्ता।

संत महापुरुषों के मुख से कई बार यह भजन सुनने को मिलता है –

जीवन है पानी की बूँद, कब मिट जाए रे।
होनी-अनहोनी, कब क्या घट जाए रे।।

वर्तमान परिस्थिति में कुछ प्रश्न चिंतन योग्य हैं।

- **जीवन क्या है?** जीवन अनित्य, क्षणभंगुर, पानी के बुलबुले के समान अशाश्वत, अस्थिर, अनिश्चित है।
- **जीवन क्यों मिला है?** मनुष्य जन्म दुर्लभ है, अनमोल है। यह हमें शाश्वत सुखी बनने के लिए, आत्मबोध प्राप्त करने के लिए एवं वीतरागी बनने के लिए मिला है।
- **जीवन कैसे मिला है?** पूर्वजन्म की अनंत-अनंत पुण्यवानी के दुर्लभ संयोग से मनुष्य जन्म मिला है। इसकी कीमत के बारे में आचार्य भगवन् एक उदाहरण फरमाते हैं कि गहरे समुद्र में सुई गिर जाने पर उसे निकालना बहुत आसान है, पर पुनः मनुष्य जन्म मिलना दुर्लभ है।
- **अब जीवन में क्या करना चाहिए?** सम्यक् दृष्टि बनें, यानी अरिहंत भगवान, सुगुरु एवं जिनवाणी पर पूर्ण श्रद्धा व समर्पणा रखें। श्रमणोपासक बनकर देव, गुरु, धर्म पर पूर्ण श्रद्धा के साथ 12 व्रतों का शुद्ध पालन करें। प्रभु के बताए हुए सर्वश्रेष्ठ मार्ग शुद्ध संयम का पालन करते हुए पाँच महाव्रतों एवं अष्ट प्रवचन माता से अपने जीवन को निखारें।

गुरुचरण विहार समाचार

भव्यजनों के तारणहार,
राम गुरु की जय-जयकार।
कठिन क्रिया की जय-जयकार,
राम गुरु की जय-जयकार।।

"दृष्टि बदलने से सृष्टि बदल जाएगी"
- आचार्य भगवन्

"मोह से व्यक्ति दुखी बनता है"
- उपाध्याय प्रवर

युगनिर्माता आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में मुमुक्षु विपुल जी गांधी व मुमुक्षु प्रीति जी सांखला की जैन भागवती दीक्षा 29 सितंबर को देशनोक के लिए घोषित, सर्वत्र खुशी की लहर

बीकानेर-मारवाड़ अंचल परिवर्धनम् शिविर का शानदार आयोजन, ज्ञान-ध्यान में बाल-युवा पीढ़ी तल्लीन

गरिमा जी सिपानी, पिंकी जी सेठिया मासखमण तप की ओर अग्रसर

सेठिया कोटड़ी, बीकानेर।

राम गुरु की सुखद छाँव में, पुलकित प्रमुदित संघ हमारा।
दसों दिशाएँ दीपित करता, जिनशासन का भाग्य सितारा।।

जिनकी अपूर्व संयम साधना का तेज जन-जन को आध्यात्मिक ऊर्जा प्रदान करता है, ऐसे युगनिर्माता, युगपुरुष, साधना के शिखर पुरुष, मानवता के मसीहा, ज्ञान और क्रिया के बेजोड़ संगम, उत्क्रांति प्रदाता, जन-जन के भाग्यविधाता, नानेश पट्टधर आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-45 एवं पर्याय ज्येष्ठा साध्वी श्री पारस कँवर जी म.सा., शासन दीपिका साध्वी श्री कमलप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा-90 के पावन सान्निध्य में अध्यात्म की अविरल धारा निरंतर प्रवाहित हो रही है। प्रार्थना, प्रभावशाली प्रवचन, आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, जिज्ञासा-समाधान आदि अन्य धार्मिक कार्यक्रमों में श्रद्धालु धर्मप्रेमी भाई-बहनों का सैलाब उमड़ रहा है। भीषण गर्मी में भी महापुरुषों का अपूर्व संयम तप-तेज और समभाव की साधना देखकर जनता नतमस्तक हो रही है। महापुरुषों की दृढ़ संयमी क्रियाओं को निकट से जानकर हर कोई अचंभित हो रहा है। **मुमुक्षु विपुल जी गांधी,**

सूरत/देवगढ़ एवं **मुमुक्षु प्रीति जी सांखला**, अहमदाबाद/हथियाना की जैन भागवती दीक्षा **29 सितंबर 2025** के लिए उद्घोषणा होते ही जन-जन में खुशी की लहर दौड़ पड़ी। देश-विदेश से दर्शनार्थियों को आवागमन निरंतर जारी है। चारित्रात्माओं एवं श्रावक-श्राविकाओं में तपस्या की होड़ लगी हुई है।

4 जून को पाँच मुमुक्षु भाई-बहनों - **मुमुक्षु कु. मयंक जी सोनावत**, **मुमुक्षु कु. हार्दिक जी सोनावत**, **मुमुक्षु श्रीमती रेखा जी सोनावत**, **मुमुक्षु सुश्री नेहा जी डोसी**, **मुमुक्षु सुश्री साक्षी जी भंसाली** की जैन भागवती दीक्षा महापुरुषों के सान्निध्य में सानंद संपन्न हुई। बीकानेर-मारवाड़ अंचल के **'परिवर्धनम्'** शिविर में 500 से अधिक बालक-बालिकाओं ने भाग लेकर अपने जीवन को सुसंस्कारित किया। समस्त आयोजनों को सफल बनाने में श्री साधुमार्गी जैन सेवा समिति, समता महिला मंडल, समता युवा संघ, समता बहू मंडल, समता बालिका मंडल, बीकानेर आदि का सराहनीय योगदान रहा।

भौतिक सुखों में सार्थकता नहीं

16 मई 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। प्रातःकालीन मंगलमय प्रार्थना **'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'** एवं **'म्हारे नैनों में आओ बस जाओ महावीर'** सुंदर भक्ति भजनों के साथ की गई। तत्पश्चात् प्रवचन स्थल के विशाल प्रांगण में चतुर्विध संघ की उपस्थिति के मध्य अपनी सिंहगर्जना में भगवान महावीर की वाणी का अमृतरस बरसाते हुए परमागम रहस्यज्ञाता, परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''संयोगों से अपने आपको मुक्त करो। अशांति स्वतः ही दूर हो जाएगी। संयोगों के रहते हुए मन शांत नहीं हो पाएगा। जो भी हमने यहाँ संग्रह किया है, प्राप्त किया है, वे सारे संयोग हैं। माता-पिता, परिवार, धन-वैभव और कर्मों के उदय से होने वाले क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष आदि सभी संयोग हैं। इनसे मन अशांत होता है। इसलिए भगवान महावीर ने साधुओं से कहा कि तुम संयोगों से मुक्त हो जाओ। मन से इनको दूर हटा दो। 'इदं न मम' यह मेरा नहीं है। सारे पदार्थों में और सारे व्यक्तियों में निर्वेद भाव जगे। भौतिक सुख बहुत बार पाया है, किंतु कोई सार्थकता नहीं हो पाई। अब मुझे वह चीज प्राप्त करनी है, जिसको प्राप्त करने के बाद फिर और कुछ प्राप्त करना शेष नहीं रहे। जहाँ एक शाश्वत आत्मा होती है वहाँ कोई झगड़ा नहीं, कोई संयोग-वियोग नहीं, कोई आपत्ति नहीं, कोई अशांति नहीं। दृष्टि बदली तो सृष्टि बदल जाएगी। नाशवान शरीर के लिए हमने कितना समय लगाया और आत्मा के लिए हमने क्या किया? आत्मा के लिए समय लगाते तो हमारा कल्याण हो जाता। अशांति का कारण मेरेपन की बुद्धि है।''**

श्री चिन्मय मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हम प्रतिदिन चिंतन करें कि वह दिन धन्य होगा जब हम आरंभ-परिग्रह से मुक्त हो जाएँगे और मोह-माया को छोड़कर सांसारिक बंधनों से मुक्त हो अंत समय संथारा ग्रहण करेंगे। आचार्य भगवन् के सान्निध्य का अधिक से अधिक लाभ उठाएँ।

बीकानेर में 43 संत एवं 94 महासतियाँ के पधारने से संघ में अपार उत्साह का वातावरण है। परम गुरुभक्त तपस्वी **विजय कुमार जी सांड**, देशनोक के आज **30 उपवास (मासखमण)** तप गुरुकृपा से सानंद संपन्न हुआ। विजय कुमार जी सांड का 35वाँ मासखमण संपन्न हुआ है। एक अलग कार्यक्रम में श्री साधुमार्गी जैन सेवा समिति, बीकानेर द्वारा उनका बहुमान किया गया। उपवास, आयंबिल, एकासना, तेला तप आदि के प्रत्याख्यान हुए। स्थानीय परम गुरुभक्त एवं महेश नाहटा ने तपस्वी आत्मा का आत्मिक परिचय देते हुए उनके आत्मबल की सराहना की।

24 मई से 2 जून तक बीकानेर-मारवाड़ अंचल में **'परिवर्धनम्'** आंचलिक शिविर महापुरुषों के पावन सान्निध्य

में आयोजित करने का निर्णय श्री साधुमार्गी जैन सेवा समिति, बीकानेर ने लिया। इस शिविर में 10 से 30 वर्ष तक के अविवाहित बालक-बालिकाएँ भाग ले सकते हैं। शिविर की तैयारियाँ जोर-शोर से प्रारंभ की गईं।

सामायिक, प्रतिक्रमण शुभ मनोभावों से करें

17 मई 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। **'मन हुक्मी हुक्मी गाए जा'** एवं **'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'** मधुर भक्ति गीतों के साथ प्रातःकालीन प्रार्थना से प्रभु एवं गुरुभक्ति की गई। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी को संबोधित करते हुए शास्त्रज्ञ, परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''सामायिक करने का उद्देश्य क्या है? सावद्य योगों का त्याग करने के लिए सामायिक व पापों का प्रायश्चित्त करने के लिए प्रतिक्रमण किया जाता है। सामायिक, प्रतिक्रमण करने से कितनी तन्मयता आती है, हम कितने पापों का प्रक्षालन करने में समर्थ हो पाते हैं, ये समीक्षा का विषय है। प्रतिक्रमण का अर्थ है पीछे की ओर जाना। हम मर्यादाओं से जितने बाहर निकल गए हैं, जितना हमने अतिक्रमण कर लिया है, उसका हमें प्रतिक्रमण करना है। अतिक्रमण का प्रतिक्रमण नहीं करते हैं तो हमारे ऊपर आक्रमण होता है और हम उस समय दुखी हो जाते हैं। हम अपनी मर्यादा में रहें ये स्वाभाविक दशा है। सीता ने लक्ष्मण रेखा से पैर बाहर रखा और उसका अपहरण हो गया। मर्यादा के उल्लंघन का परिणाम आत्मा को भोगना पड़ता है। सामायिक के समय हमारा मन यदि अन्य बातों से जुड़ा रहता है तो हमारी शुद्धि नहीं हो पाती। प्रतिक्रमण के समय हमारा मनोभाव स्पष्ट होना चाहिए। जितना हमने विस्तार किया है वह सुख देने वाला नहीं है। यह विस्तार तो हमें दुख देगा और भीतर द्वंद्व पैदा करेगा। हम हमारे भीतर योग्यता पैदा करें कि मेरे भीतर सामायिक उतर जाए। मेरे मन मे ऐसी पात्रता हो कि सारे पाप कर्म भस्म हो जाएँ। हम ऐसा लक्ष्य बनाएँगे तो हमारी सामायिक, हमारा प्रतिक्रमण सार्थक होगा।''**

श्री प्रकाश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि पुण्ययोग से महापुरुषों का सान्निध्य मिला है। जिनवाणी के प्रति हमारी रुचि है। श्रवण लाभ भी मिल रहा है। जीवन में धारण करने की क्षमता पैदा करें। जीवन में सद्गुणों को आचरित करें।

वीर भगवान श्री वीरेंद्र मुनि जी म.सा. ने अपने सुमधुर भाव गीत **'गुरु राम पद रज में मेरा, ये तन-मन सर्वस्व समर्पित'** प्रस्तुत कर सबको भावविभोर कर दिया। तेले की लड़ी, एकासना, आयंबिल, उपवास, बेला के साथ ही विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

अच्छे विचारों को तुरंत अमल में लाएँ, बुरे विचारों को टालें

18 मई 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। आज का पावन दिवस रविवारीय समता शाखा आराधना के साथ उपस्थित हुआ। आचार्य भगवन् द्वारा फरमाए गए इस विशेष आयाम की आराधना हेतु श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ पड़ा। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा कर मंगलपाठ प्रदान किया। प्रवचन स्थल पर आयोजित विशाल धर्मसभा को भगवान महावीर की पावन अमृतदेशना से सराबोर करते हुए तरुण तपस्वी परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''मेरी आत्मा का स्थान एकांत सुख रूपी मोक्ष है। संसार का सुख व इंद्रियों का सुख क्षणिक है। शुद्ध अवस्था का सुख आत्मा का सुख है। उसकी प्राप्ति सामायिक से होती है। वह सुख हमारे में भरा हुआ है, किंतु हमें उसकी पहचान नहीं है। हम उसको समझ नहीं पा रहे हैं। इसलिए उस सुख को प्रकट करने के लिए हम तत्पर नहीं होते हैं। पूर्वजों की संपत्ति की पहचान नहीं है तो उसको सँभाल नहीं पाएँगे, उसको सुरक्षित नहीं रख पाएँगे। मनुष्य जन्म मिलना बहुत दुर्लभ है। जिनवाणी सुनने के लिए कान मिले हैं, देखने के लिए आँखें मिली हैं। अनंत बार हमने दृश्य पदार्थों को देखा है। उसको मैं प्राप्त कर लूँ और अनुकूल न हो तो छोड़ दूँ। इस रूप में हमने पदार्थों**

को देखा है। हमने बहुत देखा, किंतु अभी भी हम तृप्त नहीं हो पाए और देखने की इच्छा बनी हुई है। शास्त्रकार कहते हैं कि देखो ऐसा कि तुम्हारे में वियोग पैदा हो जाए। अच्छा विचार कभी भी पैदा हो जाए तो उसे पूरा करने में कभी विलंब नहीं करना चाहिए। समय निकलने के बाद वे भावना, वे संस्कार बने रहेंगे या नहीं, कुछ कहा नहीं जा सकता। यदि बुरे विचार आ जाएँ तो उनको टालते रहो। हिंसा, छल-कपट के विचार आ जाएँ तो उनको टालते रहो। इससे उनका भेदन हो जाएगा। यदि ऐसा हमने साध लिया तो जीवन में बहुत बड़ी सफलता प्राप्त कर लेंगे। श्रमण शिविर, साधु-साध्वी शिविर चल रहा है, जो सात दिन तक रहेगा। 24 मई से बच्चों का परिवर्धनम् शिविर चालू होगा। इसका मतलब है, जो है उससे बढ़कर जानना। आपने जितना ज्ञान-ध्यान बढ़ाया है उससे भी आगे बढ़ाना। अपनी शक्ति को आगे बढ़ाना। बच्चे भविष्य की नींव हैं। बच्चों में संस्कार आ गए तो पचास सालों के लिए आपने नींव मजबूत कर ली।''

दिनभर में पाँच सामायिक करने का नियम 500 से भी अधिक भाई-बहनों ने लिया। बीकानेर विधायक जेठानंद जी व्यास ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। दर्शन पश्चात् आमजनों के मध्य संत जीवन की व्याख्या करते आपने हुए कहा कि इस भीषण गर्मी में भी महापुरुष समभाव की अनुपम साधना कर रहे हैं। उनके उपदेश जन-जन का कल्याण करने वाले हैं। उनके पधारने से बीकाणे की धरती पावन-पवित्र हो गई है। श्री साधुमार्गी जैन सेवा समिति, बीकानेर द्वारा साहित्य भेंट कर विधायक जी का बहुमान किया गया।

मोह हमें दुखी बनाता है

19 मई 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। भोर की मंगल प्रार्थना में 'तुम से लागी लगन ले लो अपनी शरण पारस प्यारा' एवं ' मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान' गीतों का मधुर स्वर लहरी में संगान कर प्रभु एवं गुरुभक्ति की गई। सेठिया कोटड़ी के विशाल प्रांगण में आयोजित धर्मसभा में उपस्थित अपार जनमानस को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि ''**मोह पर विजय पाना हमें समाधानात्मक बनाता है। कोई भी व्यक्ति, कोई भी वस्तु आपको दुखी नहीं बना सकती। यदि आपको कोई दुखी बना सकता है तो वो एकमात्र मोह है। जब हमारा मन अनुकूलताओं में खुश नहीं और प्रतिकूलताओं में खिन्न नहीं हो तो समझ लेना कि हमने मोह पर विजय प्राप्त कर ली है। अगर मोह हमें चलाएगा तो हम दुखी होंगे और हम मोह को धक्का देंगे तो सुखी होंगे। यह समय और यह अवसर हमें मोह पर वार करने के लिए मिला है।**''

श्री उम्मेद मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हम जानते सब हैं किंतु मानते किसी की नहीं। जब तक नहीं मानेंगे तब तक दुखी होते रहेंगे। परिस्थिति चाहे अनुकूल हो या प्रतिकूल, हमें हमेशा समभाव में रहना चाहिए। अशांत मन दुख का कारण है। देव, गुरु, धर्म की शरण से जीवन पावन पवित्र हो जाता है। पापी भी पावन बन जाता है। साध्वी मंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। दर्शनार्थी भाई-बहनों का आवागमन जारी रहा।

धर्म में लगाया गया समय ही सार्थक है

20 मई 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। 'श्री महावीर स्वामी की सदा जय हो' आदि भक्ति गीतों के साथ प्रातः मंगल प्रार्थना से जीवन धन्य हो गया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री प्रशम मुनि जी म.सा. ने 'यह हुक्म संघ हमको प्राणों से प्यारा है' गीत के साथ गौरवशाली नौ आचार्यों के दिव्य जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान करते हुए फरमाया कि आचार्य देव, साधु-साध्वी के अलावा श्रावक-श्राविका के भी मुखिया होते हैं। विनीत साधक वही है जो गुरु के इंगित इशारों को समझे। गुरु आज्ञा विचार करने के लिए नहीं अपितु पालन करने योग्य है। कितने भवभ्रमण के पश्चात् हमें

यह मनुष्य जन्म मिला है। अब हम और चक्कर न काटकर अपने मनुष्य जीवन को सार्थक करें। देव, गुरु, धर्म के प्रति हमारी अटूट श्रद्धा होनी चाहिए। गया हुआ समय वापिस नहीं आता। जितना समय हमने धर्म में लगाया है वही समय सार्थक है। जो समय गया वो वापिस आने वाला नहीं है। जो समय बचा है वही हमारा है।

श्री उम्मेद मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमें दिखावे के लिए नहीं अपनी आत्मा को संवारने के लिए धर्म करना चाहिए। हम जैसा करते हैं वैसा दिखना चाहिए और जैसा दिख रहा है वैसा होना चाहिए। कुछ छोड़ेंगे तो कुछ मिलेगा और यदि पकड़कर बैठेंगे तो कुछ मिलने वाला नहीं है। जहाँ का वातावरण शांत और शुद्ध होता है वहाँ हमारा मन शांत रहता है। यदि हम संत नहीं बन सकते तो संतोषी तो बन सकते हैं। महापुरुषों ने कहा है, संतोषी सदा सुखी होता है। साध्वीवृंद ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

पुण्योदय से साधु-साध्वियों का योग मिलता है

21 मई 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। मंगल प्रार्थना में भक्ति गीत के साथ देव, गुरु, धर्म की आराधना के पश्चात् आचार्य भगवन् ने असीम कृपा कर मंगलपाठ श्रवण कराया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री प्रशम मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि साधु-साध्वियों का योग मिलना बहुत दुर्लभ है। पुण्योदय से मिले इस सान्निध्य को हमें सार्थक करना चाहिए। अनंत पुण्यवानी का जब उदय होता है तब घर में साधु-साध्वी का पधारना होता है। धर्म आराधना कर जीवन को सफल बनाए। कब मौत आ जाए कोई पता नहीं। जो समय शेष है उसको विशेष बनाएँ। जो हम इकट्ठा कर रहे हैं वह साथ जाने वाला नहीं है। जो समय धर्म में उपयोग हुआ हमारा वही समय सार्थक है। संगति का बहुत बड़ा प्रभाव है। समान व्यक्ति की संगति से समानता पैदा होती है। विशिष्ट व्यक्ति की संगति से विशिष्टता पैदा होती है और सामान्य व्यक्ति की संगति से सामान्यता पैदा होती है।

श्री उम्मेद मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हम अच्छा दिखने की कोशिश कर रहे हैं, किंतु अच्छा बन नहीं पा रहे हैं। संस्कारों की खामियों के कारण हमारे सामने समस्याएँ पैदा होती हैं। जैसा हम दूसरों को बनाना चाह रहे हैं वैसा हम अपने आपको नहीं बना रहे हैं। हम वीर बनने की कोशिश कर रहे हैं, किंतु वैसा कदम नहीं उठा रहे हैं। साध्वीवर्याओं ने **'धन्य है जिनवाणी गुरुवर'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। प्रतिक्रमण दिवस पर 410 भाई-बहनों ने स्थानक में प्रतिक्रमण किया।

आत्मज्ञान ही परिणाम देता है

22 मई 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। **'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'** भक्ति गीत के मधुर गान के साथ प्रातःकालीन प्रार्थना की गई। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया। प्रार्थना पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी तेजस्वी वाणी में फरमाया कि "**गुरु का उपदेश हमारे जीवन को बदलने वाला होता है। हमारी देह चली जाए तो जाए, लेकिन हमारी धर्मनिष्ठा नहीं जानी चाहिए। हमें सुख देने वाली, हमारे श्रावकत्व को निर्मल बनाने वाली, हमारे श्रावक धर्म को दृढ़ता प्रदान करने वाली जो शक्ति है, वह आत्मज्ञान है। अगर आत्मज्ञान हमारे भीतर नहीं है तो हमारे सारे कार्य परिणाम देने वाले नहीं है। धीरज, धर्म, मित्र और नारी की परीक्षा आपत्ति के समय ही होती है। नियमों की दृढ़ता चाहे छोटी हो या बड़ी, लेकिन परिणाम बहुत विराट देती है। एक साधना करना बहुत जरूरी है और वह साधना है शरीर से, परिवार से, संबंधों से आसक्ति दूर करने की।**"

श्री उम्मेद मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जब तक हमारा आचरण सही नहीं होगा तब तक हमारा व्यवहार भी सही नहीं होगा। हम वास्तविकता में कम और दिखावे में ज्यादा जीते हैं और जिस दिन वास्तविकता में जीएँगे तो जीना सीख जाएँगे। जो बिना नाम के काम करता है उसका नाम अपने आप हो जाता है।

गुरु के वचन जीवन को बदलने वाले होते हैं

23 मई 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। दैनंदिनी के अंतर्गत प्रातःकाल प्रार्थना के माध्यम से गुरुभक्ति की गई। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया। तत्पश्चात् प्रवचन स्थल पर आयोजित विशाल धर्मसभा को धर्मरस से पावन करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि ''**हम गुरु के वचनों को श्रवण करने के लिए तत्पर रहें, क्योंकि गुरु के मुख से निकली विद्या सफल व सार्थक होती है। गुरुवचनों की बहुत ज्यादा कीमत होती है। किताबें सिर्फ शब्द परोसती हैं और गुरु शब्दों के साथ भाव भी परोसते हैं। गुरु के मुख से निकले वचन हमारे जीवन को बदलने वाले होते हैं। सुनना बहुत महत्वपूर्ण है। भगवान ने फरमाया है कि मोक्ष मिलने का कारण सुनना है। तर्कों के जाल में उलझने वाले सत्य धर्म से विचलित हो जाते हैं। जो प्रभाव पुस्तकों का नहीं होता वह प्रभाव गुरु के सरस वचनों का होता है।**''

श्री उम्मेद मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमारी भावना प्रबल होनी चाहिए। भावना प्रबल होगी तभी कार्य को करने में हम समर्थ होंगे। अगर हम ठान लें तो ऐसा कोई कार्य नहीं जो हम कर नहीं सकते। जब हमारे भी शुभ भाव परिणाम में आ जाएँ तो समझ लेना कि हमने अच्छा रास्ता पकड़ लिया है। यदि हमारे विचारों में कषाय उफन रहा है तो समझ लेना कि हमारी साधना सही नहीं चल रही है। मोह छूटेगा तो मोक्ष मिलेगा। हम क्या कर रहे हैं यह महत्वपूर्ण नहीं है। हमें क्या करना है वह महत्वपूर्ण है।

साध्वीवृंद ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। विभिन्न तप-त्याग के प्रत्याख्यान हुए। दर्शनार्थियों का आवागमन जारी रहा। '**परिवर्धनम्**' शिविर में भाग लेने हेतु बीकानेर-मारवाड़ अंचल के बालक-बालिकाओं ने पंजीयन कराया। सभी गुरुदर्शन कर हर्षित व पुलकित हो गए।

जीवन में बदलाव लाने की जरूरत

24 मई 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। भोर की मंगल प्रार्थना में '**मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान**' एवं '**श्री राम गुण गाना है**' भक्ति गीतों से मंगलमय गुरु आराधना की गई। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा कर मंगलपाठ फरमाया।

प्रवचन सभा में उपस्थित गुरुभक्तों को मंगलमय आगमवचनों से आत्मरंजन कराते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी सिंहगर्जना में फरमाया कि ''**गुरु बदलाव सिखाते हैं। बदलने वाला सुखी होगा और नहीं बदलने वाला दुखी होगा। बदलाव जरूरी है क्योंकि हम नहीं बदलेंगे तो संसार में रहेंगे और बदलेंगे तो सिद्ध बन जाएँगे। नहीं बदलने वाला मोही होता है और बदलने वाला निर्मोही होता है। संसारी यात्रा में विभिन्न प्रकार के दुख के थपेड़ों से पीड़ित होने पर भी हमारे भीतर दुख-मुक्ति के भाव नहीं जगे और दुख मुक्ति के भाव जगे तो संसार मुक्ति के भाव नहीं जगे। हमें बदलाव लाने की जरूरत इसलिए है, क्योंकि बदलाव सफलता दिलाने वाला होता है। संसार में ही रहेंगे तो संसारी बने रह जाएँगे और संयम जीवन स्वीकार करेंगे तो सिद्ध बन जाएँगे। श्रद्धापूर्वक समर्पणा फल देने वाली, परिणाम देने वाली होती है। बदलाव बेचैनी के साथ परिणाम भी देता है। हम इस आराम क्षेत्र को छोड़ें और सकारात्मक बदलाव की दिशा में अपने आपको आगे बढ़ाएँ।**''

श्री उम्मेद मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जिसके भीतर माँ के संस्कार होते हैं, वह निर्भय होता है। जो हमें मौका मिला है वह कभी वापिस मिले या नहीं इसलिए समय रहते इस मौके को साधने का लक्ष्य बनाएँ।

साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री निशांत श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने '**आए गुरुवर ज्ञानी,**

आए गुरुवर ध्यानी' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री सुमेधा श्री जी म.सा., साध्वी श्री समीधा श्री जी म.सा., साध्वी श्री जीतयशा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने **'धीर बना देते प्रभु आपके वचन'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

युगपुरुष आचार्य श्री रामेश एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन चरणों में **'परिवर्धनम्'** शिविर का आगाज हुआ। इस अवसर पर बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**जो जिन का उपासक है वह जैन है। 'परिवर्धनम्' का अर्थ है बढ़ना एवं बढ़ाना। सारी दुनिया पाप से जल रही है। धर्म ही सुख और शांति प्रदान करने वाला है। जीवन में उच्च लक्ष्य बनाने हैं तथा निरंतर आगे बढ़ते जाना है। अनादिकाल से संसार में भटके हुए हैं, अब धर्म में तथा आत्मा में जीना है।**''

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने **'मैं हूँ जैन, जैन मेरा धर्म'** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि मैं आत्मा हूँ। अजर, अमर, अविनाशी आत्मा हूँ। आत्मधुन से सबको आत्मविभोर कर दिया। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया। सामूहिक रूप से नवकार मंत्र जाप एवं रामेश चालीसा पाठ किया गया। बीकानेर-मारवाड़ अंचल के इस **'परिवर्धनम्'** शिविर में 500 से अधिक शिविरार्थियों ने भाग लेकर अपने जीवन को सुसंस्कारित बनाया। यह शिविर श्री साधुमार्गी जैन सेवा समिति, बीकानेर एवं संस्कार शिविर समिति, श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आयोजित किया गया है। समता महिला मंडल, समता युवा संघ, समता बहू मंडल, समता बालिका मंडल एवं साधुमार्गी जैन संघ अहर्निश सेवारत हैं।

धैर्य परिणाम देने वाला होता है

25 मई 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। प्रातःकाल से ही मंगल बेला में समता शाखा में समता आराधना करने हेतु श्रद्धालु भाई-बहनों का सैलाब उमड़ पड़ा। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया। शिविरार्थी भाई-बहनों ने महापुरुषों से संस्कारयुक्त शिक्षा प्राप्त की।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि ''**गुरु हमें बोध देते हैं कि तुम असमर्थ, अशक्त नहीं हो। कमजोर हुआ नहीं जाता, कमजोर समझा जाता है। कमजोरी होती नहीं, मानी जाती है। दुख का कारण अपने आपको असमर्थ, निर्बल समझना है। यदि हम अपने आपको कमजोर नहीं समझें तो दुख हमारे भीतर प्रवेश नहीं कर सकता। जो यह सोचता-समझता है कि मैं दुखी हूँ तो वह दुखी ही रहता है और जो सोचता है कि मैं सुखी हूँ तो वह सुखी है। ऐसा माना जाता है कि व्यक्ति को पुरुषार्थ से सफलता मिलने वाली है। असफलता खत्म होती है। धैर्य के बिना परिणाम नहीं मिलता और अगर हम अपनी पूरी साधना में किसी जगह मात खाते हैं, कहीं हारते हैं, परास्त होते हैं तो बहुत-सी बार वह धैर्य का मुद्दा होता है।**''

श्री उम्मेद मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि दिखावा, प्रदर्शन, आडंबर बंद होने चाहिए। पैसे का सही सदुपयोग करना चाहिए। गुरु ने जो राह दिखाई है उसमें हमें आगे बढ़ना है। साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले), साध्वी श्री लब्धि श्री जी म.सा., साध्वी श्री चंदना श्री जी म.सा., साध्वी श्री विभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री अंजलि श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने **'तन, मन, जीवन आज खिला है, आए गुरुवर त्राता'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। सभा में राष्ट्रीय महामंत्री, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सहित अनेक स्थानों के धर्मप्रेमी श्रद्धालु उपस्थित थे। उपवास, बेला, तेला, अठाई, एकासना आदि के प्रत्याख्यान हुए।

दोपहर में उपाध्याय प्रवर के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी एवं जिज्ञासा-समाधान आदि धार्मिक कार्यक्रम हुए। सामूहिक एकासना के आयोजन में लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

मौके पर कही हुई बात परिणाम देने वाली

26 मई 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। प्रातःकाल मंगल प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति भजनों **'हुक्मगणी का पाट हुआ है निहाल जी'** एवं **'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'** से आराधना की गई। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ फरमाया।

धर्मसभा में उपस्थित श्रद्धालुजनों को जैन धर्म की गूढ़ता का विवेचन करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि "**गुरु विभिन्न कलाओं और शक्तियों से संपन्न होते हैं। गुरु के कठोर वचन भी हमारे जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाकर हमें सिद्ध बनने की दिशा में आगे बढ़ाने वाले होते हैं। हमारा लक्ष्य रहना चाहिए कि हमारे भीतर विनयभाव की अभिवृद्धि हो और हम मुक्ति की दिशा में आगे बढ़ें। गलतियाँ बताना बहुत सरल है, लेकिन गलतियों को समाधान के साथ बताना श्रम है। आचार्य चाहे कठोर वचनों से समझाएँ या शीत वचनों से, लेकिन शिष्य को विनय भाव से आज्ञा को स्वीकार करना चाहिए। मौके पर कहीं हुई बात परिणाम देने वाली होती है और उस बात की कीमत होती है। जितना पूछा जाए, जितनी बात हो और जब अवसर हो तब भी जितना आवश्यक हो उतना ही बोलना चाहिए, क्योंकि कम बोलने वाले की कीमत होती है।**"

श्री उम्मेद मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हम जानते बहुत हैं, पर मानते नहीं हैं। सुनते बहुत हैं, पर गुनते नहीं हैं। जीवन में उतारने का प्रयास हम नहीं करते। आज टी.वी., मोबाइल, कंप्यूटर के जमाने में बाल-युवा पीढ़ी दिग्भ्रमित हो रही है। समय रहते जागृत होना पड़ेगा।

साध्वी श्री तरुलता श्री जी म.सा., साध्वी श्री विभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री अंजलि श्री जी म.सा. ने **'धन्य हैं बहुश्रुत पूज्यवर! उनका नाम दिल से ले लो, सब काम बन जाएँगे'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। एक घंटा मौन रहने का नियम कई जनों ने लिया। महापुरुषों के मार्गदर्शन में **'परिवर्धनम्'** शिविर समयबद्धता, अनुशासन एवं ज्ञान-ध्यान के साथ निरंतर जारी है। तपस्या के विभिन्न प्रत्याख्यान हुए। पक्खी पर्व के पावन अवसर पर श्रद्धालु भाई-बहन तपाराधना में लीन रहे।

दुख की जड़ अज्ञानता

27 मई 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। प्रातःकालीन मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर ने अपूर्व कृपा वर्षण करते हुए मंगलपाठ फरमाया। प्रवचन स्थल पर आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी मधुर वाणी में फरमाया कि "**गुरु दुख दूर करने के उपाय बताते हैं। अविद्या से दुख प्राप्त होता है। दुख की जड़ अज्ञानता में छिपी हुई है। अज्ञान बहुत समय से हमारे अंदर बसा हुआ है। सोचने के गलत तरीके को दूर करना है। मैं सही हूँ, यह सोच गड़बड़ है। अंधविश्वास और आत्मविश्वास में अंतर है। हम अपने बारे में क्या-क्या सोचते हैं? लगभग हमारा विचार होता है कि मैंने जो कहा, वह किया है और वही सही है। अपने आपको व्यक्त करने में हम ज्यादा समय लगाते हैं। ये सब वैचारिक द्वंद्व हमें हमारे जीवन के नए आयाम खोलने नहीं देते। हमारी पहचान कहीं खत्म न हो जाए यह भय बना रहता है। बहुत बार हमारा निर्णय हो सकता है कि ऐसा मैं नहीं कर सकता। लेकिन सत्य मार्ग पर चलने के लिए अपना आग्रह छोड़ना होता है। शरीर से मन को कमजोर न होने दें। लगातार पुरुषार्थ करते रहें। आत्मतत्व त्रिकाल रहने वाला है। भीतर के चित्र को बदलें। 'मैं आत्मा हूँ' यह चिंतन सदैव बना रहे।**"

श्री उम्मेद मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि विषमता से समता की ओर आना है। मन के विपरीत भी कोई बात हो जाए तो विचलित न होकर समता का परिचय देना है। जब तक जीवन है तब तक सहना होगा। साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत

किया। 36 वंदना करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। विभिन्न त्याग-तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए।

'परिवर्धनम्' शिविर में बच्चों को मार्गदर्शन देते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि "**कष्टों को सहना सीखना है। जितना कष्टों से दूर भागेंगे उतने ही कष्ट हमें घेरेंगे। हर महापुरुष के जीवन में कष्ट आए हैं। हम कष्टों से भागेंगे तो वे हमें ज्यादा दुख देंगे। कष्टों का सामना करना चाहिए। इससे हमारी वास्तविक शक्ति प्रकट होगी।**"

मुमुक्षु जिया जी चिप्पड़ की जैन भागवती दीक्षा 12 जुलाई, मुमुक्षु विपुल जी गांधी एवं मुमुक्षु प्रीति जी सांखला की जैन भागवती दीक्षा 29 सितंबर को देशनोक के लिए घोषित

राम गुरु विराट हैं, दीक्षाओं का ठाट है

संयम के सच्चे राही, प्रभु से नाता जोड़ते हैं।
मोक्ष मार्ग पर चलते-चलते, कर्मों के बंधन तोड़ते हैं।।

28 मई 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। प्रातःकालीन मंगल प्रार्थना **'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'** एवं **'श्री राम गुरु गुण गाना है'** भक्ति गीतों के साथ की गई। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा में चतुर्विध संघ की उपस्थिति के मध्य आचार्य भगवन् का आगमन होते ही संपूर्ण सभा **'पधारज्ये घणी खम्मा'** के जयनाद से गूँज उठी। उच्च पाट के एक ओर संतगणों तथा दूसरी ओर साध्वीवर्याओं का विराजना बहुगुणित हो गया जब मध्य में आचार्य भगवन् का त्रिभुवन भास्कर के रूप में विराजना हुआ।

इस धर्मसभा को संबोधित करते हुए प्रशांतमना, परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि "**अशांति का कारण बाह्य पदार्थ हैं। जिसको भी हम अपना बनाने की कोशिश करते हैं, वह अपना नहीं हो सकता। हम चाहते हैं वो अपना बन जाए, पर नहीं बनता। इससे अशांति हो जाती है। सच्चे दिल से साधना में लगे हैं तो अशांति छूएगी नहीं। शांति-अशांति बाहर से नहीं आती, ये तो हमारी सोच का परिणाम है। मार्ग भ्रमित हो जाने पर अशांति होती है और सम्यक् ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना से मोक्ष में रमण करने वाले को अशांति का काम नहीं। अपना-अपना पुण्य-पाप, सहारा व साथ देता है। पुण्य बदला तो दृश्य बदल जाता है। निमित्त को दोष नहीं देना। किसी अन्य का दोष नहीं होता, दोष हमारे कर्मों का होता है।**"

श्री उम्मेद मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जितनी हमारी जरूरत कम होगी हम उतने ही सुखी बनेंगे और संतोषी सदा सुखी रहता है। साध्वी श्री कल्याण कँवर जी म.सा., साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा., साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा. साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री प्रभावना श्री जी म.सा., साध्वी श्री ललिता श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा., साध्वी श्री रिभिता श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुमेधा श्री जी म.सा., साध्वी श्री समिधा श्री जी म.सा., साध्वी श्री जीतयशा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किए।

मुमुक्षु जिया जी चिप्पड़ सुपुत्री श्री आशीष जी अनिता जी चिप्पड़, सुपौत्री राजमल जी पारसमल जी अशोक जी चिप्पड़, प्रतापगढ़ की दीक्षा हेतु अनुज्ञा-पत्र चिप्पड़ परिवार द्वारा गुरुचरणों में प्रस्तुत किया गया। मुमुक्षु जिया चिप्पड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा कि आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में मुमुक्षु शिविर में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। आपश्री जी के संयमी जीवन से प्रभावित होकर मेरा जीवन बदल गया और लक्ष्य के साथ वीतराग मार्ग पर बढ़ने का संकल्प लिया।

सच्चा सुख अध्यात्म और संयम में है। पारिवारिकजनों का भरपूर सहकार मिला। उस उपकार को कभी नहीं भूल पाऊँगी। मुमुक्षु बहन ने अपने प्रतिज्ञा-पत्र का पठन किया। अनुज्ञा-पत्र का पठन वीर पिता, वीर दादा अशोक जी चिप्पड़ ने करते हुए कहा कि द्वय महापुरुषों की कृपा हमारे चिप्पड़ परिवार पर सदैव रही है। आपने गुरु महिमा गीत प्रस्तुत कर सबको भावविभोर कर दिया।

आचार्य भगवन् ने फरमाया कि **''चिप्पड़ परिवार धर्मनिष्ठ परिवार है।''** **मुमुक्षु जिया जी चिप्पड़** की जैन भागवती दीक्षा **12 जुलाई** को **देशनोक** के लिए जैसे ही उद्घोषित हुई संपूर्ण सभा **'राम गुरु विराट हैं, दीक्षाओं का ठाट है'** आदि जयनादों से गूँज उठी। चारों ओर जयवंता-जयवंता के स्वर गूँजने लगे। एक अलग कार्यक्रम में वीर चिप्पड़ परिवार का बीकानेर संघ द्वारा बहुमान किया गया।

संयम के भाव आज जगे, मेरे नाम के आगे राम लगे

संयम सुमेरु आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर का अद्भुत अतिशय देखने को मिला, जब दोपहर में 18 वर्षीय **मुमुक्षु विपुल जी गांधी** सुपुत्र प्रवीण जी जयश्री जी गांधी, सूरत/देवगढ़ एवं 22 वर्षीय **मुमुक्षु सुश्री प्रीति जी सांखला** सुपुत्री श्री भगवतीलाल जी पिस्ता देवी सांखला, अहमदाबाद/हथियाना की जैन भागवती दीक्षा हेतु परिजनों ने सहर्षानुभूति के साथ अनुज्ञा-पत्र गुरुचरणों में समर्पित किया। दोनों मुमुक्षुओं ने उत्साहपूर्वक अपने प्रतिज्ञा-पत्र श्रीचरणों में अर्पित किए।

अपने भावोद्गार में **मुमुक्षु प्रीति जी सांखला** ने कहा कि आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर एवं साध्वीवर्याओं व परिजनों का जो आशीर्वाद व सहयोग मिला, उस उपकार को कभी नहीं भूल पाऊँगी।

धन्य हुई मैं इस जीवन में, जब आपकी कृपादृष्टि पाई।
आपके चरणों की रज से, मेरी किस्मत भी मुस्काई।।

भाव गीत के रूप में मुमुक्षु बहन ने हृदयोद्गार व्यक्त किए। महेश नाहटा ने आचार्य भगवन् के अतिशय का बखान करते हुए मुमुक्षुओं का आत्मिक परिचय दिया। मधुर भजन गायिका अल्का जी डागा एवं समता महिला मंडल, समता बहू मंडल, बालिका मंडल ने **'धन्य-धन्य वे मात-पिता जो अपना सब कुछ वार रहे, अपने कल की चिंता छोड़ बच्चों का भाग्य संवार रहे'** गीत प्रस्तुत कर सभी को भावविभोर कर दिया।

मुमुक्षु भाई-बहनों एवं परिजनों का श्री साधुमार्गी जैन सेवा समिति, बीकानेर के पदाधिकारियों व सदस्यों द्वारा बोथरा भवन में स्वागत-बहुमान किया गया। अपने स्वागत को गुरुचरणों में अर्पित करते हुए **मुमुक्षु विपुल जी गांधी** एवं **मुमुक्षु प्रीति जी सांखला** ने कहा कि यह स्वागत हमारा नहीं अपितु भगवान महावीर, आचार्य श्री रामेश एवं उपाध्याय प्रवर सहित त्याग-संयम-वैराग्य का है। 29 सितंबर को देशनोक में दीक्षा के पावन अवसर पर पधारकर हमें अपना आशीर्वाद प्रदान करने का कष्ट करें, हमारी यही विनती है।

जीवन अशांति में नहीं खोएँ

29 मई 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। भोर की मंगल प्रार्थना में **'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'** एवं **'मन हुक्मी-हुक्मी गाए जा'** मधुर भजनों से गुरुभक्ति की गई। धर्मसभा में अमृतवाणी का पावन आगमरस बरसाते हुए विश्व की विरल विभूति आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''शांति क्या है? अशांति क्या है? थोड़ी ठंडी हवा या गरम हवा के चलने से शांति, अशांति में बदल गई। अनुकूलता बदल जाए तो अशांति होने लगती है। मनुष्य जन्म दुर्लभ बतलाया है। 84 लाख जीव योनियों में भ्रमण करते हुए पुण्य से मनुष्य जीवन प्राप्त हो पाया है। अशांति में जीने के लिए मनुष्य जन्म नहीं है। मनुष्य जन्म सार्थक तब होगा जब जीवन अशांति**

में नहीं खोएँगे। मनुष्य जन्म और तीर्थंकर देवों का मार्ग मिला है। इसे जानना है और जीवन में आचरित करना है। धर्म का अधिकारी कौन? जो आत्मभावों में नहीं जीता, जो क्रोध, मान, माया और लोभ में जीता है, वह धर्म का अधिकारी नहीं है। अपना अहंकार छोड़ें।''

साध्वी श्री कल्याण कँवर जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। **'परिवर्धनम्'** शिविर ज्ञान-ध्यान के साथ निरंतर गतिमान रहा। एडवोकेट हनुमान जी डागा, दिल्ली ने 26 शास्त्रों का पठन पूर्ण किया। आपने 27वें शास्त्र का पठन करने का नियम लिया। विभिन्न तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए। परम गुरुभक्त वीर भ्राता पारसमल जी नपावलिया, मोड़ी/नीमच के संथारापूर्वक महाप्रयाण पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त कर विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

'परिवर्धनम्' शिविर के अंतर्गत **'सवाल आपके, जवाब आचार्य भगवन् के'** कार्यक्रम में बच्चों की जिज्ञासाओं के सहज शैली में सुंदर समाधान आचार्य भगवन् ने प्रदान किए। बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने बालिकाओं को प्रेरक मार्गदर्शन प्रदान किया।

सुख का साधन आत्महित है

30 मई 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। प्रभु एवं गुरुभक्ति के रूप में **'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'** एवं **'साता कीजो जी श्री शांतिनाथ प्रभु'** मंगल गीतों के साथ प्रातःकालीन प्रार्थना की गई। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए सिरीवाल प्रतिबोधक, परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''जिन्हें सुख के साधन समझ रहे हो वे वास्तविक सुख के साधन नहीं हैं। सुख का साधन आत्महित है। कोई भी कार्य करने से पहले सोचें कि वह आत्महित के लिए है या नहीं। आत्महित क्या है? प्रसन्नता मिलना, तनावमुक्त होना ही आत्महित है। तत्काल या बाद में किसी भी समय तनाव नहीं आए। शरीर की सुरक्षा के लिए हमने क्या कुछ नहीं किया, लेकिन आत्मा की सुरक्षा के लिए क्या किया है? आत्मचिंतन करें। आत्मा यानी मन पवित्र रहेगा तो शरीर पर बीमारियाँ हावी नहीं होगी। अपने कर्मों का फल हमें ही भुगतना पड़ेगा। दूसरों के भरोसे कुछ नहीं होने वाला है। स्वयं मरे बिना मुक्ति नहीं मिलेगी। अपना ध्यान आत्मा पर केंद्रित होना चाहिए।''**

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संसार में रहकर निर्लेप रहें। धर्म विचारों में रहे। मन संसार में दौड़ता रहता है। कर्मनिर्जरा के लिए धर्म करें। आसक्ति के कारण जन्म-मरण बना हुआ है। संसार का सुख मात्र सुखाभास है। संयम का मार्ग ही सच्चे सुख का मार्ग है।

साध्वी श्री हर्षिला श्री जी म.सा., साध्वी श्री ज्योत्सना श्री जी म.सा., साध्वी श्री मणिप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री पूर्णिमा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने **'सुबह शाम सब मुख से बोलो, जय-जय गुरुवर राम'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। संपूर्ण सभा ने **'जब भी हो गुरुदेव के दर्शन, समझो तीरथ हो गया'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। उपवास, आयंबिल, एकासना, तेले की लड़ी सहित अनेकानेक त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

पाप कार्यों में रस न लें

31 मई 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। प्रातःकाल के शुभ शुभारंभ में गुरु गुणानुवाद से ओत-प्रोत भक्ति गीतों के साथ प्रार्थना की गई। प्रवचन स्थल पर आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए उत्क्रांति प्रदाता, व्यसनमुक्ति के प्रेरणास्रोत परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''पिछले अनंत जन्मों में धर्म आचरण किया या नहीं? मिशन सफल नहीं हुआ, क्योंकि परिणाम सामने है कि हम संसार में हैं। सही कर्म**

किया होता तो संसार से परित हो जाते। धर्म को जानते हुए भी राग-द्वेष की वजह से ऐसे कृत्य कर बैठते हैं कि फिर संसार में ही घूमना पड़ता है। हमें कर्म सिद्धांत पर विश्वास होना चाहिए। व्यक्ति अपना पुरुषार्थ करे, दूसरों पर आश्रित होने पर पुरुषार्थ फलित नहीं होता। जिनेश्वरदेव ने जो कहा है वही सत्य है। तीर्थंकर देवों का धर्म ही मेरे आचरण योग्य है। ऐसा विश्वास हमारे भीतर होना चाहिए। सुख-दुख हमारे विचारों पर निर्भर है। मन के अनुकूल कामना पूर्ण न हो तो दुख होता है। जब व्यक्ति दुखी होता है तो चेहरे पर खिन्नता आ जाती है। जैन मुनि की बड़ी महिमा है। किसी भी घर में, क्षेत्र में चला जाए तो सदैव अहोभाव में रहता है। मन की दृढ़ता से कार्य संपन्न होता है। धन्ना जी ने साधु जीवन अंगीकार कर लिया। हमारा विलपावर मजबूत है तो कुछ नया करने पर वह हासिल होता है। चुनौती स्वीकार करने की आदत होनी चाहिए। मन उत्साहित नहीं होगा तो कार्य करने में समर्थ नहीं हो पाएँगे। जब उत्कृष्ट भाव जगे तो उसी समय दीक्षा ले लेनी चाहिए। हम साधु जीवन स्वीकार करें तो उत्तम है, नहीं तो श्रावक जीवन को तो उत्तमोत्तम बनावें। अठारह पापों यानी पाप कार्यों में रस नहीं लेना।''
आचार्य भगवन् के आह्वान पर कई भाई-बहनों ने 18 पापों में रस नहीं लेने का संकल्प लिया।

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जीव-अजीव को जाने बिना अहिंसा का पालन नहीं हो सकता। श्री उम्मेद मुनि जी म.सा. ने टी.वी., मोबाइल का उपयोग कम से कम करने का संकल्प दिलाया। साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा., साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री हर्षिला श्री जी म.सा., साध्वी श्री मणिप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री निशांत श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत का संगान किया। प्रतिदिन बच्चों को 10 मिनट संस्कार शिक्षा देने का संकल्प कई भाई-बहनों ने लिया।

'परिवर्धनम्' शिविर में चारित्रात्माओं द्वारा निरंतर मार्गदर्शन के साथ तत्वज्ञान का बोध कराया जा रहा है। बालिका वर्ग ने अपनी जिज्ञासाओं का सुंदर समाधान आचार्य भगवन् से प्राप्त किया। शाम को बालक वर्ग को महापुरुषों का सान्निध्य, मार्गदर्शन एवं मंगलपाठ श्रवण करने का अपूर्व अवसर प्राप्त हुआ।

श्री साधुमार्गी जैन सेवा समिति, बीकानेर रामराज के रंग में रँगा हुआ है। **4 जून** को **मुमुक्षु मयंक जी सोनावत**, **मुमुक्षु हार्दिक जी सोनावत**, **मुमुक्षु रेखा जी सोनावत**, **मुमुक्षु नेहा जी डोसी**, **मुमुक्षु साक्षी जी भंसाली** की जैन भागवती दीक्षा प्रसंग संपन्न हुआ। बीकानेर की पावन धरा पर भीषण गर्मी में भी धर्मोल्लास देखते ही बनता है।

तपस्या सूची

साधु-साध्वी वर्ग

श्री हेमगिरि मुनि जी म.सा.	3 उपवास	श्री गगन मुनि जी म.सा.	4 उपवास
श्री रामनंदन मुनि जी म.सा.	6 उपवास		

श्रावक-श्राविका वर्ग

आजीवन शीलव्रत	डॉ. सुरेश जी ऊषा जी जैन-श्रीगंगानगर, प्रेमचंद जी अभाणी-चित्तौड़गढ़, विजय जी आशा जी राँका, राम जी अग्रवाल, इंद्रचंद जी कमला देवी बैद-बैकुंठपुर, प्रकाशचंद जी पुष्पा देवी चोरड़िया, किशन जी सरिता जी कोठारी
उपवास	**20** – गरिमा जी सिपानी (गतिमान), **19** - पिंकी जी सेठिया (गतिमान), **11** - मधु जी बक्सी, **9** - ज्योति जी बाँठिया

-महेश नाहटा

॥ जय गुरु नाना ॥ ॥ जय महावीर ॥ ॥ जय गुरु राम ॥

जनसेवार्थ - जनहितार्थ

भामाशाह सुंदरलाल डागा चैरिटेबल ट्रस्ट, बीकानेर द्वारा निर्मित

आचार्य नानेश रामेश कैंसर सर्जरी हॉस्पिटल, बीकानेर

भामाशाह स्व. श्री सुंदरलाल जी डागा
स्व. श्री मूलचंद जी डागा

की पावन स्मृति में

आमजन को उच्चस्तरीय चिकित्सकीय सेवाएँ प्रदान करने के उद्देश्य से
बीकानेर के राजाणी डागा परिवार द्वारा
हॉस्पिटल भवन निर्मित कर राजस्थान सरकार को समर्पित किया गया।

:::::::: लोकार्पणकर्ता ::::::::

श्रीमती मनीषा जी धर्मपत्नी स्व. श्री मूलचंद जी डागा
ऐवंत-अल्का डागा, हेतविक ऐवंत डागा
एवं समस्त राजाणी डागा परिवार

भव्य लोकार्पण -
26 जनवरी 2025 को संपन्न

पी.बी.एम. हॉस्पिटल, बीकानेर (राज.)

|| जय गुरु नाना ||

|| जय गुरु नाना ||

|| जय गुरु राम ||

राम जन्मभूमि चातुर्मास
आचार्य श्री रामेश
2025 - देशनोक

हुक्मसंघ के नवम् नक्षत्र, संयम के सजग प्रहरी, परमागम रहस्यज्ञाता, व्यसनमुक्ति प्रणेता, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील संप्रेरक

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008
श्री रामलाल जी म.सा.

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर
श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा.

आदि ठाणा के पावन वर्षावास – 2025 का प्रसंग रखे जाने वाले समस्त आगारों सहित देशनोक संघ को प्राप्त हुआ है।

सभी सम्मानित श्रावक-श्राविकाओं व संघों से विनती है कि इस पावन अवसर पर संघ एवं परिवार सहित पधारकर धार्मिकता तथा आध्यात्मिकता की भव्यता से अपने जीवन को आत्मकल्याण की ओर अग्रसर करें।

स्थानक | श्री जैन जवाहर मंडल (श्री साधुमार्गी जैन समिति),
हिरावत गेस्ट हाउस के पास, तेमड़ाराय मार्ग,
देशनोक-334801, जिला- बीकानेर (राज.)

चातुर्मास कमेटी अध्यक्ष : +91 98450 78928

संघ अध्यक्ष : +91 95882 98906	चातुर्मास कार्यालय संयोजक : +91 94141 15164	आवास-निवास : +91 91731 30000 +91 94144 51132	चौका व्यवस्था : +91 99830 33479 +91 82091 85929
संघ मंत्री : +91 80948 12556	कार्यालय : +91 95218 67958	कार्यालय : +91 63753 59089	

निवेदक :

श्री साधुमार्गी जैन समिति, देशनोक

• समता युवा संघ • समता महिला मंडल • समता बहू मंडल •

।।जय गुरु नाना।।

।।जय महावीर।।

राम चमकते भानु समाना

।।जय गुरु राम।।

चातुर्मासिक स्थापना दिवस

के उपलक्ष्य में

दिनांक : 8-9-10 जुलाई 2025

तेले तप की आराधना

लक्ष्य 3100

सभी स्थानीय संघ प्रतिनिधि पुरजोर पुरुषार्थ कर अधिक से अधिक तेले करने, करवाने के लक्ष्य के साथ ज्यादा से ज्यादा तप, त्याग, संवर, पौषध और धार्मिक प्रभावना कर इस पावन पर्व को कर्म बंधनों से परे रहकर कर्मनिर्जरा का माध्यम बनाएँ।

आप सभी स्थानीय पदाधिकारियों से निवेदन है कि आपके स्थानीय संघ में आयोजित कार्यक्रमों का विवरण हमें वॉट्सएप नंबर 70732 38777 या ईमेल yuva@sadhumargi.com अथवा गूगल लिंक पर अपडेट करें।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

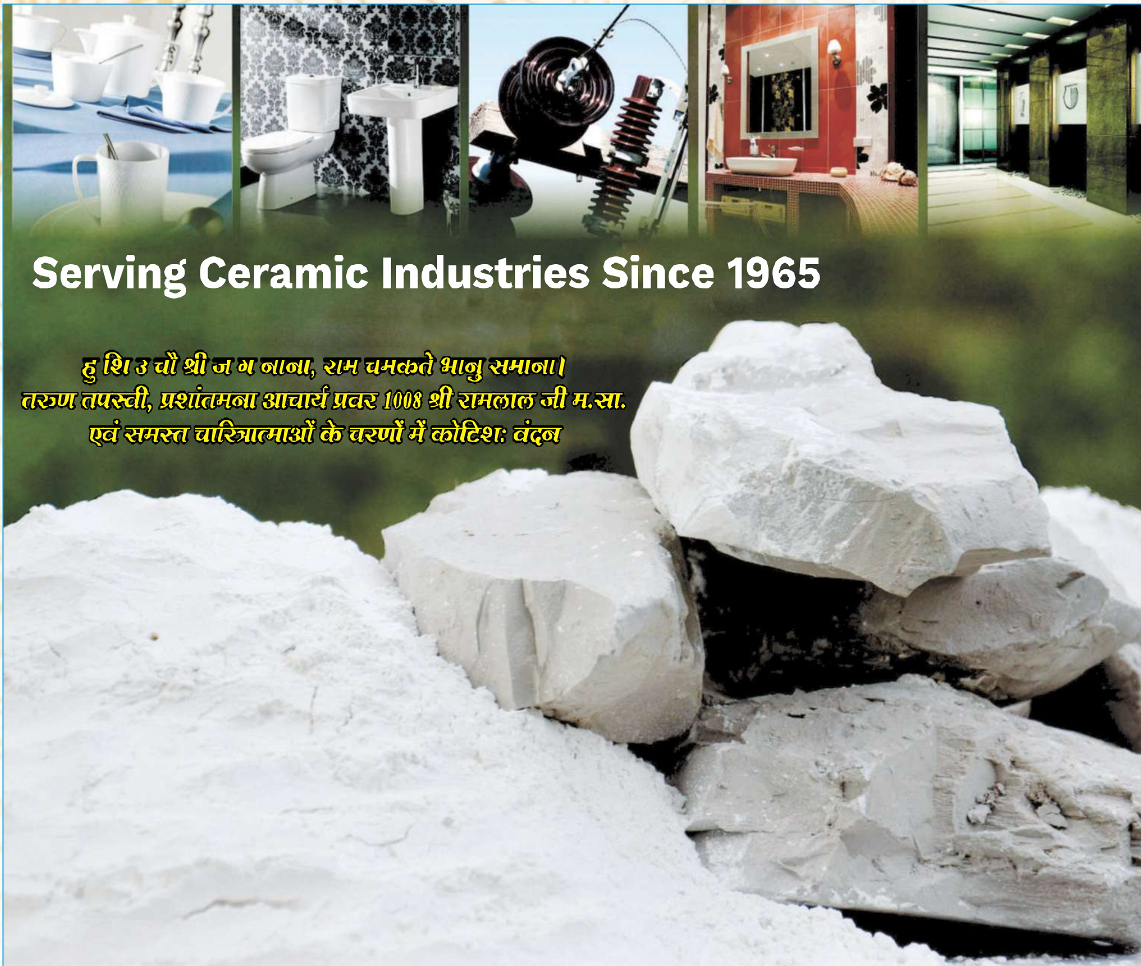

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI
RITZY. POETIC. URBANE

YOUR DREAM HOME, A NEW LIFE FOR MANY.

90% OF PROFIT GOES TO CHARITY.

PRESENTING
SIPANI **CITY**
A 70 ACRE TOWNSHIP - MADAPPANAHALLI VILLAGE, ANEKAL TALUK, BENGALURU.

70 ACRES OF EVERYTHING YOU NEED - HOMES, HEALTHCARE, EDUCATION & MORE!

1 CLUSTER - 1 HIGH RISE APARTMENT
Land area 10 acres 31 guntas

2 CLUSTER - 2 HIGH RISE APARTMENT
Land area 14 acres 30 guntas

3 CLUSTER - 3 HIGH RISE APARTMENT
Land area 5 acres 10 guntas

4 CLUSTER - 4 HIGH RISE APARTMENT
Land area 10 acres 12.2 guntas

5 CLUSTER - 5 HIGH RISE APARTMENT
Land area 16 acres 14.37 guntas

6 06 - EWS HOUSING
Land area 2 acres 4.77 guntas

7 COMMERCIAL / OFFICE
Land area 6 acres 17.63 guntas

8 SCHOOL - IN CA SITE OF CLUSTERS 4, 5 & 6
Land area 1 acres 21.20 guntas

9 PLAYSCHOOL - IN CA SITE OF CLUSTERS 1
Land area 0.54 acres 21.55 guntas

10 HOSPITAL - IN CA SITE OF LAND CLUSTERS 2 & 3
Land area 1 acres

Sipani City - A Township Promoted by Sipani Properties

"An Ode of Humanity..."

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिशः वंदन!

SIPANI MARBLES

STRONG - STYLISH - SOPHISTICATED

Royal Italian Marbles

AS PER ISI STANDARDS

WWW.SIPANIMARBLES.COM

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/-	(15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/-	(10 वर्ष के लिए)

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में)	3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No.	:	31264126681
IFSC Code	:	SBIN0003401
Branch	:	G.S. ROAD, Bikaner
Mob.	:	7073311108
E-mail	:	accounts@sadhumargi.com

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	: 9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153	
साहित्य	: 8209090748	: sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	: 6375633109	: ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	: 7073238777	: yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धांत	: 7976519363	
परिवारांजलि	: 7231033008	: anjali@sadhumargi.com
विहार	: 8505053113	: vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	: 9982990507	: pathshala@sadhumargi.com
शिविर	: 7231833008	: udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	: globalcard@sadhumargi.com
सामाजिक, संघ सदस्यता, सहयोग, समृद्धि, जन सेवा, जीव दया आदि अन्य प्रवृत्तियाँ		: 9602026899
शैक्षणिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, साहित्य संबंधी प्रवृत्तियाँ		: 7231933008
संघ हेल्पलाइन (WhatsApp only)		: 8535858853

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए संबंधित विभाग से ही संपर्क करें।
इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।
कार्यालय समय – प्रात: 10:00 से सायं 6:30 बजे तक
लंच – दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्रीसंघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केंद्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना अवश्य देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.: 7073311108 (WhatsApp)

संघ में आपके सहयोग एवं सदस्यता की संपूर्ण जानकारी प्राप्त करने व ऑनलाइन भुगतान करने हेतु नीचे दिए लिंक पर क्लिक करें।

https://donorportal.sadhumargi.com/login

जय गुरु नाना

जय महावीर

जय गुरु राम

YOUR TRUST

FLEXIBILITY IS OUR STRENGTH
52 RAKSHA
SHAND GROUP
SINCE 1977

RAKSHA® PIPES

OUR GUARANTEE

FIRST IN INDIA

ISI FITTINGS WITH ADVANCED CO-MOULDED DURO RING SEAL

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिशः वंदन!

Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand

SHAND GROUP OF INDUSTRIES

No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.
Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com

RAKSHA FLO
P.T.M.T TAPS & ACCESSORIES

Diamond Duroflex

Diamond DUROLON

LEAK PROOF

IAPMO

LEAD FREE

Now with new M.R.O. Technology

IS 15778 : 2007

cftri

LUCALOR FRANCE

www.shandgroup.com रक्षा – जीवन भर की सुरक्षा www.rakshapipes.com

@absjainsangh

www.facebook.com/HOSadhumargi

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।

प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 24,600

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261

This document was created with the Win2PDF “Print to PDF” printer available at

https://www.win2pdf.com

This version of Win2PDF 10 is for evaluation and non-commercial use only.
Visit https://www.win2pdf.com/trial/ for a 30 day trial license.

This page will not be added after purchasing Win2PDF.

https://www.win2pdf.com/purchase/